ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

सितंबर, 2021

पंछी आए कहां से...

- गिलहरी भूली उड़ना
- नया विश्व धरोहर
- कैटोलाईट
- पढ़ते चूहे
- भोपाल

सहयोग राशि
20 रुपए मात्र
(विवरण अंदर है)

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका
पायस
सितंबर 2021
वर्ष : 1, अंक : 9

इस अंक की रचनाएं

पक्षियों पर विशेष

पंछी आए कहां से... 6
चिड़ियों को जानो... 17
एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक उड़ान 20
साइबेरियन क्रेन के बहाने 28
पक्षियों से जुड़े मुहावरे व लोकोक्तियां 47

जानकारी

नया विश्व धरोहर : रामप्पा मंदिर 13
मोनिका अग्रवाल : दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक 18
शिक्षा के प्रति समर्पित राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन 25
सैर-सपाटा : भोपाल 54
ओलंपिक में बने सितारे 60
रुक जाना नहीं तू कहीं हार के 61

बाल मंच

चित्र : 56-59
आंचल, सतनाम, दिलीप साहू, मुक्ता कटोच, प्रियांशु गर्ग, ऐशानी हल्दर, पावनी माथुर, अफ्फान अहमद, सुनेहा, करण,
कहानी : प्रियंका गुप्ता 59

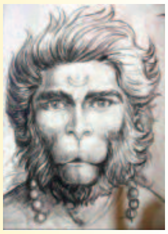

अन्य

कार्टून 12
पुस्तक परिचय 62

कहानियां

पंकज चतुर्वेदी : गिलहरी भूली उड़ना 9
डॉ. मंजरी शुक्ला : ऑनलाइन क्लास 14
संजीव जायसवाल 'संजय' : कैटोलाईट 22
रावेंद्रकुमार रवि : सुरीले सपने 26
भगवत प्रसाद पाण्डेय : दूरबीन का कमाल 30
सुधा भार्गव : लाड़ला शीशा 34
तरुण कुमार दाधीच : हिंदी वाली मैम 37
संजीव ठाकुर : कीड़ों वाला कमरा 38
महिमा श्री : अमरुद की चोरी 41
डॉ. मोहम्मद साजिद खान : शरारती बादल 42
उमेश चंद्र सिरसवारी : व्यवहार बदल गया 46
अंजना गर्ग : मास्क 49
सिराज अहमद : सरसराहट 50
हरिन्दर सिंह गोगना : फूल क्यों तोड़ा 52
डॉ. अलका जैन 'आराधना' : मोंटू और पिल्लू 53

कविताएं

दिविक रमेश : सुन्दर-सुन्दर कविता गाएँ 5
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' : नारियल पानी 32
शादाब आलम : धम्मक-धुम्मक-धुम 33
इंद्रजीत कौशिक : गुरु की महिमा 36
हर प्रसाद रोशन : कॉटन कैंडी 44
श्रवण कुमार सेठ : हावड़ा ब्रिज पर उतरा पत्ता 45
मु. जलालुद्दीन खान : पढ़ते चूहे 48
डॉ. विनोद 'प्रसून' : अपनी हिंदी प्यारी है 50

सबको जरूरत है प्यार की

देखते- देखते सन 2021 का दो-तिहाई समय निकल गया। इसमें नया कुछ नहीं है। पर इस बार समय का निकलना अखर रहा है। पिछले दो वर्ष एक आम आदमी के लिए बहुत परेशानी भरे गुजरे हैं। लोगों की नौकरी गई, महंगाई बढ़ गई। जीने और खाने के लाले पड़ गए। कोई रास्ता नहीं सूझ रहा।

जब भी देश समाज या परिवार विपत्ति में पड़ता है, तो उसका सबसे ज्यादा असर बच्चों पर पड़ता है। इस विपत्ति काल में लाखों बच्चे अनाथ हुए। परिवार का प्यार छिन गया। बहुतों के स्कूल बंद हैं, तो बहुतों के स्कूल छूट गए। जब परिवार नहीं, तो स्कूल कौन भेजेगा? पापा नहीं तो फीस कौन देगा, मां नहीं तो खाने का ध्यान कौन रखेगा? ऐसे समय में सरकार के साथ समाज की जिम्मेदारी बनती है कि आगे आकर इन सबको प्यार दे।

बच्चो, तुम सबकी भी जिम्मेदारी बनती है कि अपने उन साथियों का ध्यान रखो, उन्हें प्यार दो, जो इन सब परेशानियों से गुजरे हैं।

यह समय वाकई तुम बच्चों के लिए कठिन है। अभी हमारे पड़ोसी देश अफगानिस्तान के बच्चे जिंदगी और मौत के बीच संघर्ष कर रहे हैं। तालिबान के आने से उनके साथ आदिम कानून भी लौट आए हैं। महिलाओं को नौकरी छोड़ घर बैठने को मजबूर कर दिया गया। लड़कों के साथ लड़कियों के पढ़ने पर प्रतिबंध लग गया है। उन्हें अलग पढ़ने को कहा जा रहा है, पर कब तक, कोई नहीं जानता। लाखों लोग विस्थापित हो चुके हैं, और इसमें भी ज्यादा दर्द बच्चों के ही हिस्से आया है। जो अफगानिस्तान से निकल गए, वे विस्थापित होने का दंश झेलेंगे और जो देश में रह गए, वे तालिबानी शासन का दंश झेलेंगे।

सिंतबर का माह प्रवासी पक्षियों के लिए भी विस्थापित होने का समय होता है। पर इन पंछियों का यह विस्थापन अच्छा होता है। वे कठोर परिस्थितियों से निकलकर खुद को जिंदा रखने के लिए दूसरे देश के सफर पर निकल पड़ते हैं। और इस सफर में वे एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक की दूरी उड़ते हुए नाप लेते हैं।

दुनिया के चालीस प्रतिशत पक्षी अपनी सुविधानुसार प्रवास पर निकलते हैं और यह प्रवास विदेश में हो, जरूरी नहीं। भारत में एक प्रदेश से पक्षी दूसरे प्रदेशों में जाते हैं। दिल्ली में प्रवासी पक्षियों के मेले में स्थानीय पक्षी ज्यादा होते हैं।

मौसम की मार से बचने के लिए निकले इन पंछियों का खाने के लिए खूब शिकार होता है। इस कारण इनकी संख्या भी तेजी से कम हो रही है। यह हमारे सबसे भयानक अपराधों में से एक है।

ये पक्षी भी हमसे अपने हिस्से का प्यार मांग रहे हैं? क्या इन्हें हम स्वार्थी इनसानों से प्यार मिलेगा? जरा विचार करना।

अनिल जायसवाल

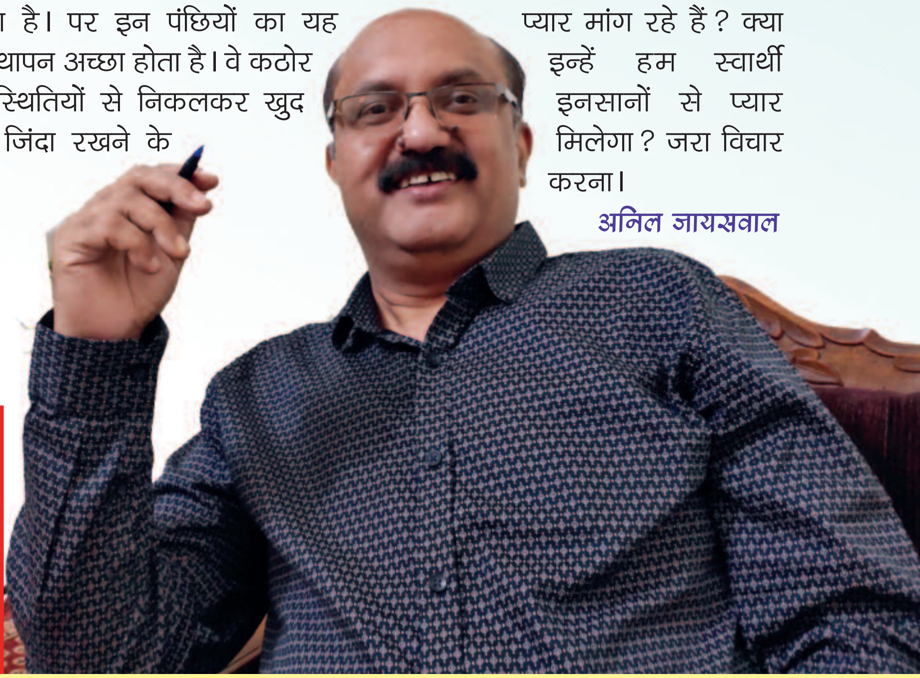

एक अपील

यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो कृपया पढ़ने के बाद इसका 20 रुपए शुल्क मानकर सहयोग करें। धन्यवाद

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका पायस

संपादक : अनिल जायसवाल

Email : payasmagazine@gmail.com
Facebook : https://www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp : 7982014609
Youtube : payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog : https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

◆ लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।
◆ ह्वाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संपादकीय पता : PAYAS MAGAZINE
Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,
West Punjabi Bagh, New Delhi-110026

धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। अब पायस का नया अंक आप सबके सामने है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

1. मोनिका अग्रवाल
2. दीप्ति मित्तल

एक अपील

पत्रिका तैयार करने में धन की आवश्यकता होती है। तमाम खर्चों के बावजूद यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें।

धन्यवाद

भुगतान करना चाहें, तो

1 प्रति : 20 रुपए, एक वर्ष : 240 रुपए

एकमुश्त सहयोग : इच्छानुसार

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA

Anil Kumar Jaiswal

S/A no- 20155811729

Ifsc code SBIN0005943

Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM	:	**7982014609**	**ANIL JAISWAL**
PHONEPE	:	**9810556533**	
GOOGLE PAY	:	**9810556533**	

संपादक : अनिल जायसवाल

9810556533, 7982014609

email : **payasmagazine@gmail.com**

सुन्दर सुन्दर कविता गाएँ

मेल दूर से झटपट आई
शिक्षक दिवस की बात बताई।
क्यों हम इसको खूब मनाते
पूरी इसकी बात बताई।

हर दिन, हर पल होता यह तो
पर मुझको तो लगता भाई।
कितने तो शिक्षा देते हैं,
पता चला जब नजर घुमाई।

माँ हो चाहे, बड़ा हमारा
हमें सभी तो शिक्षित करते।
पेड़, नदी, सागर या पर्वत
कौन नहीं जो शिक्षित करते।

जो भी देता हमको शिक्षा
वह तो प्यारा दोस्त हमारा।
पंछी, जंगली जो भी हों वे
ध्यान रखेंगे उनका सारा।

हँसी-खुशी हम दिवस मनाएँ
अच्छी पुस्तक घर पर लाएँ।
सभी शिक्षकों की जमकर हम
सुन्दर-सुन्दर कविता गाएँ।

अपने लेखक को जानिए

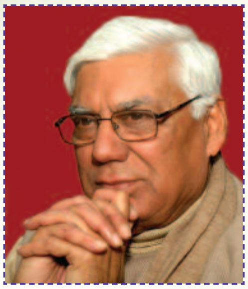

दिविक रमेश : दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर और प्रिंसिपल रहे। हिंदी के सुप्रतिष्ठित कवि, बाल-साहित्यकार, अनुवादक और चिंतक। विविध विधाओं में लगभग 80 पुस्तकें प्रकाशित।

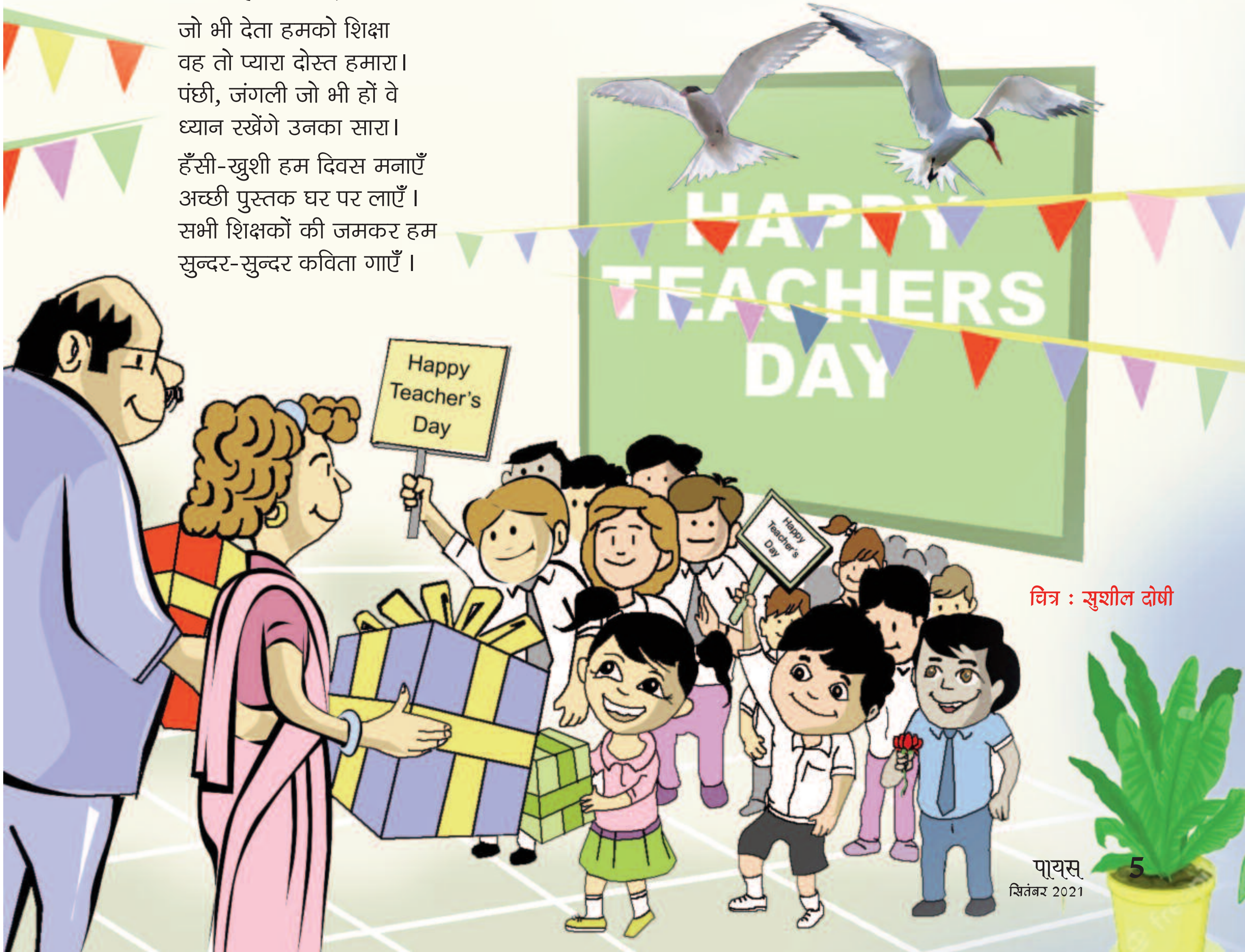

चित्र : सुशील दोषी

पंछी आए कहां से...

अनिल जायसवाल

पंछी और उनकी चहचहाहट शायद सब पसंद करते हैं। शायद ही दुनिया का कोई आबाद कोना हो जहां किसी न किसी तरह के पक्षी न होते हों। यहां तक की बर्फीला साईबेरिया भी पंछियों का साक्षी है। ये पंछी समय काल और परिस्थिति के अनुसार खुद को ढाल लेते हैं। अपने जीवन को जीने के लिए ये अपने निवास स्थान से हजारों किलोमीटर दूर जाने से भी परहेज नहीं करते। ऐसी लंबी यात्राएं ये करते कैसे हैं, यह आज भी एक रहस्य है।

प्रवासी पक्षी का मतलब

प्रवासी पक्षी वो होते हैं, जो अपने इलाके में जीवन जीने की कठिनाई को देखकर भोजन-पानी की तलाश में थोड़े समय के लिए किसी दूसरी जगह कूच कर जाते हैं। प्रवासी पक्षी केवल वे ही नहीं होते जो विदेशों से आते हैं। भारत के अंदर भी पक्षी अपने इलाके की परेशानियों से बचने के लिए मौसम के हिसाब से दूसरी जगह जाते रहते हैं। दिल्ली में ही कश्मीर, हरियाणा, मध्यप्रदेश आदि प्रदेशों से खूब पक्षी सर्दियों में आकर रहते हैं क्योंकि यहां उनके लिए विशेष व्यवस्थाएं की जाती हैं। वे परिस्थितियां अनुकूल होने पर अपनी पुरानी जगह लौट भी जाते हैं। और सबसे कमाल की बात यह है कि कई परीक्षणों से यह सिद्ध हुआ है कि पंछी अपने पुराने निवास स्थान पर अपने पुराने घोंसले में लौटकर आते हैं।

चिड़ियों के पैरों में छल्ले पहनाकर उनके आने-जाने की मानिटरिंग की गई। सबसे अद्भुत बात यह थी कि यूरोप से आने वाली अबाबील पक्षी भारत में समय गुजारने के बाद अपने पुराने ठिकाने पर प्रायः हर वर्ष एक ही तिथि पर लौट आती है। बिना कैलेंडर के यह कैसे होता है, यह आज भी रहस्य है।

कब आते हैं प्रवासी

सितंबर के प्रथम सप्ताह से देशी पक्षी दिल्ली जैसे शहर में ठिकाना बनाने आने लगते हैं। सितंबर के अंतिम सप्ताह से विदेशी पक्षी आने शुरु हो जाते हैं। साइबरिया से पिन टेल, शेवलर, डेव चिक (पनडुब्बी), कॉमन टील (छोटी मुर्गाबी), मेलर्ड (नीलसर), आदि तो दक्षिण एशिया से पोचर्ड यानी लालसर या गुलाबसर, ह्विस्लिंग डक्स, कॉमन सैंड पाइपर मुख्य रूप से दिल्ली आते हैं।

जब दक्षिण एशिया और साइबेरिया में ठंड की शुरूआत होती है, तो वहां से पक्षी गरम प्रदेशों की ओर उड़ लेते हैं। उन्हें दाने और पानी की तलाश होती है। इस मामले में भारत उनके लिए एक अच्छी जगह है क्योंकि यहां ठंड में पानी और खाने की कमी नहीं होती।

क्यों जाते हैं घर छोड़कर

कोई भी अपना ठिकाना नहीं छोड़ना चाहता। पंछी तो अपने घोंसलों को बिल्कुल नहीं छोड़ना चाहते। पर वे जहां रहते हैं, जब वहां का वातावरण उनके रहने के लिए ठीक नहीं रह जाता है, तो वे अपने जीवन को बचाने के लिए उस बेहद ठंडी जगह को छोड़कर उस स्थान की खोज में निकल पड़ते हैं, जहां वह अपने दिन सुख से काट सके। इस मामले में दक्षिण एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप यूरोपीय और खासकर साइबेरियन पक्षियों के लिए बहुत अच्छी जगह है, जहां न खाने के कमी है और पीने की। पर अपने इलाके को लेकर ये बड़े संवेदनशील होते हैं। भले ही वे करीब छह मास बाहर बिताते हैं, पर जब ये अपने घर लौटते हैं, तब वहीं अंडे देते हैं। अगले वर्ष वह फिर अपने बच्चों के लेकर यात्रा पर जाते हैं।

कैसे रास्ता निर्धारित होता है

पक्षी विज्ञानी वर्षों से शोध कर रहे हैं, पर आज तक वह यह पता लगाने में असफल रहे हैं कि आखिर इतने सारे पक्षी एक समूह बनाकर हर वर्ष यात्रा पर एक ही रूट से एक ही जगह कैसे जाते हैं और फिर अपने देश कैसे लौट आते हैं। कमाल की बात यह है कि जब घर लौटने की बारी आती है तो पहले व्यस्क पक्षी घर लौटते है , फिर मादाओं की बारी आती है और फिर बच्चे घर पहुंचते हैं। परंतु जब सर्दियों में वे फिर अपना घर छोड़कर जब नए स्थान की ओर चलते हैं, तो क्रम बदल जाता है। पहले छोटे बच्चे चलते हैं, फिर उनके पीछे उनके माता-पिता होते हैं। इन बच्चों को रास्ता कैसे मालूम होता है, यह कोई नहीं जानता। शायद महाभारत में जो अभिमन्यु का कथा है. वह इन बच्चों पर भी लागू होती है। माना जाता है कि पीढ़ी दर पीढ़ी पलायन करते रहने के कारण इन रास्तों के बारे में बच्चों को जन्मजात पता होता है।

उड़ान कैसे कैसे

अपनी यात्रा के दौरान हर तरह के पंछी अपने हिसाब से उड़ते है और उनकी ऊंचाई भी वह अपने हिसाब से निर्धारित कर लेते हैं। हंस जैसे पंछी करीब 80 किलोमीटर प्रति घंटे के हिसाब से भी उड़ान भरते हैं, तो जो चिड़िया बिना रुके यात्रा करती है, उनकी गति मुश्किल से 10 से 20 किलोमीटर प्रति घंटे तक होती है। यह कछुए की चाल उड़ती है, पर अपने गंतव्य स्थान पर पहुंचकर ही दम लेती है। उदाहरण के लिए इस्टर्न गोल्डन प्लोवर बिना कहीं रुके लगातार उड़कर अपने निवास स्थान से भारत तक की 3200 किलोमीटर से ज्यादा दूरी बिना रुके पूरी करता है। इस दौरान वह समुद्र भी पार करता है। पहाड़ी इलाकों में जहां वे बहुत ऊंचाई पर यहां तक कि

भारत में प्रवासी पंछियों के मुख्य ठिकाने

दिल्ली प्रवासी पक्षियों के लिए हॉट स्पॉट है। यहां के चिड़ियाघर में इनके रहने और खाने का विशेष प्रबंध होता है। घोसला बनाने के लिए सामान पेड़ों के आसपास डाल दिए जाते हैं ताकि मेहमान पंछियों के परेशानी न हो। रोज सैकड़ों किलोग्राम मछलियां यहां के तालाबों में मेहमान पंछियों के लिए डाली जाती हैं। साथ ही अनाज भी बिखराए जाते हैं।

दिल्ली में यमुना किनारे ओखला बैराज में इनका जमघट लगता है। ये अलग बात है कि असुरक्षित इलाका होने के कारण उनका वहां खूब शिकार होता है।

राजस्थान का केवलादेव बर्ड सेंक्चुअरी मध्यपूर्व एशिया से आ रहे पंछियों के लिए बढ़िया रहता है। साइबेरियन क्रेन भी यहीं मेहमान बनकर आते थे। यहां के पानी वाले इलाकों के साथ गहरे पानी वाले इलाके भी हैं जहां गोता लगाने वाले पक्षी रुकना पसंद करते हैं।

कर्नाटक का रंगनाथिट्टू बर्ड सेंक्चुअरी उत्तरी अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और साइबेरिया के कुछ पंछियों का स्वागत स्थल है। कावेरी नदी के किनारे इन पंछियों का जबरदस्त मेला लगता है।

गुजरात का नल सरोवर बर्ड सेंक्चुअरी फ्लेमिंगो, पेलिकंस, स्पूनबिल्स, सोवलर्स आदि पंछियों को खुले दिल से स्वागत करता है।

पंछी देखने के लिए भारत का सबसे बड़ा स्थल है ओडिसा का चिल्का लेक बर्ड सेंक्चुअरी। सर्दियों में यहां नौ लाख से ज्यादा प्रवासी पंछियों का यहां बसेरा होता है। यहां फलेमिंगों को देखने विदेशों से भी लोग आते हैं।

इनके अलावा आंध्र प्रदेश मेंनीलापट्टू, गोवा में सालिम अली और महाराष्ट्र में करनाला भी विश्वप्रसिद्ध बर्ड सेंक्चुअरी हैं।

8000 मीटर तक ऊंचाई पर उड़ते हैं, वहीं समुद्री इलाके में वे नीची उड़ान भरते हैं।

कौन-कौन से पंछी आते हैं

भारत आने वाले पक्षियों में साइबेरिया से पिनटेल डक, शोवलर डक, कॉमनटील, डेल चिक, मेलर्ड, पेचर्ड, गारगेनी टेल तो दक्षिण एशिया से पोचर्ड, ह्विस्लिंग डक, कॉमन सैंड पाइपर और कॉमन टील के साथ-साथ फ्लेमिंगो जैसे कई पक्षी आते हैं। भारतीय पक्षियों में शिकरा, हरियल कबूतर, दर्जिन चिड़िया, पिट्टा, स्टॉप बिल टक आदि प्रमुख हैं।

कम हो रहे हैं प्रवासी पक्षी

दरअसल साइबेरिया से भारत की तरफ आने वाले पक्षियों का रूट आजकल बेहद डिस्टर्ब है। यह रूट शिकार के लिए भी प्रसिद्ध रहा है। इस रूट में रूस के बर्फीले के साथ साथ ईरान-इराक, पाकिस्तान के साथ युद्धग्रस्त अफगानिस्तान भी आता है। यहां उनका खूब शिकार होता है। इसलिए उनकी संख्या बेहद कम हो गई है।

लौट आओ साइबेरियन क्रेन

एक समय था जब केवलादेव बर्ड सेंचुरी में 200 से ज्यादा साइबेरियन क्रेन आकर धमाल मचाते थे। उन्हें देखने के लिए भारत ही नहीं, दुनिया से लोग आते थे। पर अब उन्हें देखने को आंखें तरसती हैं। पिछले बहुत वर्षों से साइबेरियन क्रेन भारत से रूठ गया है। इसका मुख्य कारण है कि इनके भारत यात्रा की चेन टूट गई है। अर्तात जो क्रेन भारत का रास्ता जानते थे, वे करीबन अफगानिस्तान क्षेत्र में मारे जा चुके है। अब वे भारत की बजाय कहीं और जाते हैं। अब उम्मीद यही है कि शायद कभी कोई साइबेरियन क्रेन भूल-भटके भारत आ जाए, तो फिर से उनका चेन बन जाए। ✪

गिलहरी भूली उड़ना

इतना घना जंगल कि दिन में अंधेरा रहता है। साल-सागौन के इतने ऊंचे पेड़ कि सूरज की रोशनी भीतर झांकने से पहले रुक जाती है। बहुत सारी नदियां और झरने। सबसे खूबसूरत जगह तो कुटुम्सर की गुफा। गहराई में उतरो, तो एक अलग ही दुनिया। देश की सबसे गहरी गुफा, कोई 70 फुट नीचे उतरो, तो चार हजार फुट से लंबी-घुप अंधेरा। इतने घने जंगल में आखिर कौन आता? हर तरफ बाघ-तेंदुआ घूमते। खरगोश और लोमड़ी, हिरन और भैंसे के बड़े-बड़े झुंड बगैर डर के धमाचौकड़ी मचाते।

इसी जंगल में रहता था गिलहरी की बड़ा सा कुनबा। यह कोई ऐसी-वैसी गिलहरियां नहीं थीं, ये उड़ती थीं, एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक। खाने के लिए तो अपने बचने के लिए, कभी मौज मस्ती के लिए, अपने पैर पसारे, पंख जैसे पैर और मार दी छलांग, लंबी छलांग।

जब देश आजाद हुआ, उसके कुछ साल बाद ही चूने की विलक्षण वाली संरचना की कुटुम्सर गुफा की खोज हो गई थी, लेकिन इतने घने जंगल में आता कौन? साल बीते, सड़कें बनीं, बाहरी दुनिया में बस्तर एक कौतुहल का विषय बन गया और सन 1982 में कांगेर के जंगलों को नेशनल पार्क घोषित कर दिया गया।

अब गिलहरियां क्या जानतीं कि उनके घर को अब राष्ट्रीय घोषित कर दिया गया है। इनसानों की आवाजाही बढ़ने लगी। हर दिन मोटर कारें आतीं। जंगलों में घूमतीं, गुफा में नीचे उतरकर जातीं। जमीन पर चार पैर से चलने वाले जानवर तो समझ गए कि दुनिया का सबसे खतरनाक जीव इनसान अब उनकी बस्ती में आ रहा है। वे तो और गहरे जंगल में चले गए और अब वहां आने वाले इनसान की बाघ देखने के लिए अंधियारे जंगल में जाने की हिम्मत नहीं होती।

अब यहां दूरबीन और कैमरे वालों की आवक बढ़ गई। उनकी निगाह पेड़ों की फुनगियों पर होती। उस दिन जब एक इनसान की निगाह हवा में उड़ती गिलहरी पर गई, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।

"यह चमगादड़ है?"

"नहीं-नहीं, चमगादड़ नहीं है। इसका चेहरा अलग है। पंख भी वैसे नहीं।"

इनसानों में बहस हो रही थी और कुछ केवल फोटो खींच रहे थे। और

फिर देश-दुनिया को पता चल गया कि कांगेर घाटी में ऐसी गिलहरियां भी हैं, जो ग्लाइडर की तरह उड़ती हैं।

फिर तो दिन चढ़ते ही इनसानों की भीड़ आने लगी। पेड़ पर चुपचाप बैठी, थकी-मांदी गिलहरी की तरफ कोई पत्थर ही उछाल देता। हिश्श-टू-हो-हो- हर समय शोर। इससे दूसरे पक्षी भी परेशान थे और गिलहरी भी। हर इनसान चाहता कि गिलहरी एक बार उड़कर दिखा दे और वह फोटो खींच ले।

आखिर थक-हारकर धीरे-धीरे गिलहरियों को अपना पुश्तों से चला आ रहा घर छोड़ना पड़ा। कभी उन्होंने ऐसा हल्ला-गुल्ला सुना नहीं था, सो ना उन्हें भूख लगती और ना ही उछलने-खेलने का मन करता। यह साल का पेड़ यदि सौ साल का है, तो गिलहरी का परिवार भी इसकी कोटर में उतने ही साल से रह रहा था।

उसके बाद कई दिन इनसान आते और निराश लौट जाते। जिस गिलहरी की उड़ान को वे देखने आते थे, वह तो अपना बसेरा छोड़ चुकी थी। कुछ एक ने कोटर में उनके घर में भी झांका, वहां कुछ भी नहीं था। एक बार फिर वहां शांति हो गई।

नए घर को बसाने और नए परिवेश में खुद को ढालने में समय तो लगता ही है। उड़ने वाली गिलहरी के दो छोटे बच्चे ऐसे भी थे, जिनके लिए इनसान एक कौतुहल था। वे एक दिन चुपके से अपने पुराने पेड़ों की तरफ उछल-कूदकर पहुंच गए। उन्हें भी निराशा हाथ लगी कि इनसान तो हैं ही नहीं।

घर लौटकर गिलहरी के बच्चों ने अपनी मां को कहा, "हम जिस जानवर के डर से अपना पुराना घर छोड़ कर आए। अब वह नहीं आता।"

"तुम्हे कैसे पता?" मां ने पूछा।

"हम वहां गए थे देखने।"

"देखो संभलकर रहना। इनसान जहां एक बार पहुंच जाता है, फिर वह जगह छोड़ता नहीं। देखना, आज नहीं तो कल वह आएगा जरूर।"

बच्चों ने बात को इस कान से सुनकर दूसरे कान से बाहर निकाल दिया। वे रोज वहां जाते। धमाचौकड़ी करते और लौट आते।

उस दिन ये दोनों बच्चे जामुन के पेड़ पर छलांग मार रहे थे और आखिर एक इनसान ने उन्हें देख लिया।

अपने लेखक को जानिए

पंकज चतुर्वेदी : आरंभ में पत्रकार, फिर अध्यापन। 'राष्ट्रीय पुस्तक न्यास' (एनबीटी) में बच्चों की किताबों के संपादक हैं। रोजाना किसी न किसी अखबार में कॉलम लिखते हैं। कहानीकार तो अच्छे हैं ही, एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी अनुकरणीय। पंकज ने कोरोना संकट में लोगों तक सहायता पहुंचाने के लिए खूब काम किया।

अगले दिन वहां झाड़ियों के पीछे, पेड़ की ओट में और इनसान छुप गए। जैसे ही ये बच्चे पुरानी बस्ती में आए, इन लोगों ने भुने चने, बिस्कुट जैसा खाने का सामान वहां डाल दिया। अब बच्चों ने इंसान को देख लिया था और वे भी डर कर पेड़ की सबसे ऊंची डाल पर छुप गए। जंगल में सूरज जल्दी ढलता सा लगता है। इनसान लौट गया और गिलहरी के बच्चे जमीन पर बिखरे सामान की ओर लालायित हो गए। वे डरते-सहमते हुए नीचे आए। बिस्कुट का स्वाद तो उनके लिए बिल्कुल नया था। और चने को चबाने में उन्हें बड़ा मजा आया। इधर गिलहरी के बच्चों को नए खाने में मजा आने लगा और उधर इनसान को पता चल गया कि गिलहरी को खाने में मजा आ रहा है।

अब हर दिन गिलहरी के ये बच्चे यहीं आ जाते। उधर इनसान की भीड़ बढ़ने लगी। पहले तो कुछ दिन गिलहरी के बच्चे पेड़ से छिपकर उन्हें देखते, कई बार इधर से उधर छलांग भी लगाते और नीचे से इनसान तालियां बजाने लगते। हल्ला सुन कर उन्हें डर भी लगता। फिर समय के साथ वे ताली और शोर के आदी हो गए। अब वे इनसान की मौजूदगी में नीचे आते, खाने के सामान पर झपट्टा मारते और ऊपर उछल जाते।

यह सिलसिला कई दिनों तक चला और अब गिलहरी के बच्चों में इंसान का डर खत्म हो गया, अब वे आराम से नीचे आते, मन भर कर खाते और इंसान की भीड़ भी उनकी फोटो खींचती।

शाम को गिलहरी के मां-पिता आए और बहुत समझाया, "इनसान का खाना हमारे लिए नहीं है। हम तो अपनी मेहनत से खाते हैं। हमने उड़ना इसीलिए सीखा कि दूसरे जानवरों से बच सकें और ऊंचे पेड़ से भी रसीला फल ले सकें।"

पर बच्चे कहां मानने वाले थे? अब तो उनके साथ कई और गिलहरियां भी वहां जाने लगीं। सभी को हाथों-हाथ खाना मिल जाता, ना भोजन तलाशना, ना कहीं उछलना, ना किसी से बचना और स्वाद अलग था ही।

भीड़ बढ़ रही थी। शाम ढलते जब मोटर कारें लौटतीं, तो पीछे से ढेर सारा कचरा रह जाता। गिलहरी के

बच्चों ने अब घर जाना ही बंद कर दिया। वे यहीं जमे रहते और रात में भी खाते रहते।

एक सुबह, हर दिन की तरह जब उनकी आंख खुली तो, यह क्या? एक भी इनसान नहीं आया! दिन गुजर गया। अब सूरज ढलने लगा। भूख भी लग रही थी। जामुन खाया, तो स्वाद नहीं लगा। पुराने पड़े कचरे में से कुछ बीना तो सफेद चमकीली सी पन्नी गले में फंस गई। भूख भी लगी थी। उस दिन ऐसे ही अपनी कोटर में आ गए। आदत तो रात में भी खाने की थी और आज तो दिन में भी खाना नहीं मिला था।

अगले दिन भी वहां सन्नाटा था। उससे अगले दिन भी। दूर फुनगी पर साल के बीज दिख रहे थे। एक गिलहरी ने ग्लाईडर की तरह उड़ना चाहा! यह क्या? वह तो थोड़ी देर भी हवा में नहीं रह नहीं पाई।

अब जमीन पर इनसान द्वारा छोड़े गए खाने में से बदबू आ रही थी और इनसान के खाने की आदत डाल चुके उड़न गिलहरी को खाना मिल नहीं रहा था। अब थक-हारकर इन सभी को अपने घर लौटना ही पड़ा।

रात में मां ने बताया कि इनसानों के बीच कोई वायरस फैल गया है और वह अब घर से नहीं निकल रहा। कह रहे हैं कि उनके कोटर के नीचे रहने वाले चमगादड़ के शरीर से कोई विषाणु निकला था। गिलहरी के बच्चों को समझ नहीं आ रहा था कि ये बेचारे चमगादड़ अंधेरा होने से पहले घर से निकलते नहीं, ये कैसे इनसान को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

अब परिस्थितियों से समझौता करना ही था। जंगल में रसीले फल भी थे और बहुत से बीज भी। लेकिन संकट यह था कि महीनों से जिन्हें बगैर मेहनत के खाना मिल रहा था, वे उड़ना भूल गए थे। ज्यादा खाने के कारण वजन भी बढ़ गया, सो हवा में उछाल मारें, तो जल्दी से नीचे आ जाते।

एक बार फिर मां ने उन्हें अपनी पिछले पैर की रबर जैसी झिल्ली को फैलाना सिखाया। बताया कि कैसे गर्दन को झुकाकर सारी ताकत लगानी होती है। कुछ महीना लगा, बच्चे फिर हवा में उड़ना, अपना खाना खुद जुटाना सीख गए।

ठंड का मौसम आ गया था। इस समय जंगल बहुत सुहाना हो जाता है। हलकी सी धूप भी सुखद लगती है। बूढ़े गिद्ध ने आकर बताया, "इनसान में विषाणु का खतरा कम हो गया है। वह फिर घर से निकल रहा है। जंगल भी आने लगा है।"

गिलहरी के बच्चे सुन रहे थे, सिर झुकाकर।

"अब फिर चलो, वहीं। कहां जंगल का खाना खा रहे हो?" गिद्ध ने हंसते हुए चुटकी ली।

'हमारे लिए अपने घर से प्यारा कुछ नहीं। जो मजा गूलर के मीठे फल में है, वह इनसान के खाने में कहां?" कहते हुए गिलहरी के बच्चों ने उतनी लंबी उड़ान भर ली जितनी अभी तक उनके पापा भी नहीं भर पाते थे।

क्या बात है!
चित्र : नंदा कुमार शेनॉय
NANDKUMAR-
STOP
EMIGRATION CHECK

नया विश्व धरोहर

रामप्पा मंदिर

दक्षिण भारत मंदिरों के लिए विश्वविख्यात है। अब यहां का एक और मंदिर विश्व पटल पर छा गया है और भारत का नाम रोशन होगा।

यूनेस्को ने तेलंगाना के वारंगल के पालमपेट में स्थित रामप्पा मंदिर को विश्व धरोहर में शामिल कर लिया है। रामप्पा मंदिर को 13वीं शताब्दी की इंजीनियरिंग का चमत्कार माना जाता है। भारत सरकार की ओर से वर्ष 2019 में एकमात्र नामांकन के रूप में इसे विश्व धरोहर स्थल घोषित किए जाने के लिए प्रस्तावित किया गया था।

प्रतिष्ठित रामप्पा मंदिर महान काकतीय वंश के उत्कृष्ट शिल्प कौशल का नमूना है। सबसे बड़ी बात यह है कि वारंगल में स्थित यह शिव मंदिर इकलौता ऐसा मंदिर है, जिसका नाम इसके शिल्पकार रामप्पा के नाम पर रखा गया।

रुद्रेश्वर मंदिर का निर्माण 1213 ईस्वी में काकतीय साम्राज्य के शासनकाल के दौरान कराया गया था। यह मंदिर रेचारला रुद्र ने बनवाया था जो काकतीय राजा गणपति देव के एक सेनापति थे। इसके शिल्पकार थे रामप्पा। जिन्होंने 40 साल तक मंदिर के लिए काम किया था। उन्हीं के नाम पर इस मंदिर का नाम रखा गया। यह भगवान शिव को समर्पित मंदिर है और मंदिर के देवता रामलिंगेश्वर स्वामी हैं।

अजब बात यह कि कि उस काल में बने अधिकांश मंदिर खंडहर में तब्दील हो चुके हैं, पर अनेक आपदाओं के बाद भी इस मंदिर को कोई खास नुकसान नहीं पहुंचा है।

इस मंदिर का स्थापत्य कला बेजोड़ है। पूरा मंदिर हजार खंभों पर टिका है। इसका छत जिसे गर्भालयम कहते हैं, ऐसी ईंटों से बना है, जो पानी में डूबते नहीं। जांच में पाया गया कि यहां की ईंटें आम ईंटों से वजन में एक चौथाई है और स्पंजी टाइप है, शायद इनमें लकड़ी का बुरादा भी मिला है। इसीलिए सदियां बीत जाने पर भी वक्त के हर थपेड़ों को झेलता हुआ यह मंदिर आज भी शान से खड़ा है। 17वीं शताब्दी में आया जोरदार भूकंप और कई युद्ध और आपदाओं को यह झेल गया क्योंकि इसकी नींव में सैंड बॉक्स तकनीक का प्रयोग किया गया है।

मुख्य मंदिर के दोनों तरफ छोटे मंदिर हैं। नंदी की मूर्ति आज भी अच्छी अवस्था में है।

छोटा मंदिर

ऑनलाइन क्लास

"ऑनलाइन क्लास मुझे अच्छी नहीं लगती।" दक्ष ने रोहित से कहा।

"अच्छा या बुरा सोचने का समय नहीं है। स्कूल बंद हैं, तो पढ़ाई तो नहीं छोड़ी जा सकती ना!" रोहित ने जवाब दिया।

"पर मुझे नायर सर अच्छे नहीं लगते।" दक्ष ने गंदा सा मुंह बनाते हुए कहा।

"नायर सर तो बहुत अच्छे हैं। कभी भी अपनी क्लास नहीं छोड़ते और एक मिनट की भी देर नहीं करते।"

"बस, उनकी यही आदत मुझे पसंद नहीं है। कभी तो उन्हें भी आराम करना चाहिए। जब देखो, तब पढ़ाते रहते हैं।"

दक्ष की बात सुनकर रोहित खिलखिलाकर हंस दिया और बोला, "पर उन्हीं के कारण हम सभी बच्चों से अगर कोई नींद में भी केमिस्ट्री पूछ ले, तो हम सब बता दें।"

रोहित कुछ सोचता हुआ बोला, "नायर सर तो तेरे घर की पिछली वाली गली में ही तो रहते हैं। जाकर मना कर दे कि तुझे इतनी पढ़ाई करना अच्छा नहीं लगता है।"

"अरे, मुझे तो पता ही नहीं था।" कहते हुए दक्ष की आंखें खुशी से चमक उठीं।

"और क्या, वो पीला वाला मकान उन्हीं का तो है, जिसके बगीचे में हरसिंगार का पेड़ लगा है।"

"ठीक है, मैं आज ही जाकर सर से कहूंगा कि इतना ज्यादा ना पढ़ाया करें।" दक्ष ने मुसकराते हुए कहा

"सर से तो बाद में कहना, पहले उनके भयानक काले कुत्ते से मिल लेना।" कहते हुए रोहित हंसते हुए चला गया

दक्ष ने कुछ सोचा और सर के घर की तरफ चल दिया।

रास्ते भर वह खुद से ही सवाल जवाब करता रहा कि अगर सर ने पूछा कि बाकी बच्चे तो बहुत खुश हैं। उनकी पढ़ाई तो बहुत अच्छे से हो रही है, तो फिर अकेले उसे ही क्या समस्या है? तो वह कहेगा कि खेलने का समय नहीं मिल पाता और अगर सर ने उसके पापा की तरह कहा कि वीडियो गेम खेलने के लिए तो दिन और रात कम हैं, तभी उसके सिर और गर्दन में भी दर्द रहने लगा है, तो...?

वह कुछ आगे सोचता कि कुत्ते के भौंकने से उसकी तंद्रा टूटी। हड़बड़ाते हुए उसने कुत्ते की तरफ देखा और डर के मारे कांप उठा।

एक बड़ा सा काला कुत्ता स्टील की मोटी चेन से बंधा हुआ था और उसी की तरफ देखकर भौंक रहा था।

रचनाकार को जानिए

मंजरी शुक्ला : हिंदी एवं अंग्रेजी में स्वतंत्र लेखन, बाल साहित्य की बारह पुस्तकें प्रकाशित, सभी स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में कहानियां प्रकाशित। अब तक सैकड़ों कहानियों का सृजन कर चुकी हैं। आजकल आकाशवाणी कुरुक्षेत्र में उद्घोषक।

दक्ष तो उसे देखकर इतना डर गया कि उसकी हिम्मत दरवाजे की घंटी बजाने की भी नहीं हुई।

तभी नायर सर घर से बाहर आते दिखाई दिए। जैसे ही उसने नमस्ते किया, सर हंसते हुए बोले, "सोच रहा हूं कि घर की घंटी हटवा दूं। किसी को देखते ही शेरू इतनी तेज भौंकने लगता है कि मुझे पता चल जाता है कि कोई आया है।"

दक्ष कुछ कहता इससे पहले ही नायर सर बोले, "अरे, तुम यहां क्या कर रहे हो? जल्दी घर जाओ, मैं पांच मिनट में 'ऑनलाइन क्लास' लेने वाला हूं?"

दक्ष बुदबुदाया, "और आपके पास काम ही क्या है?"

सर ने कहा, "कुछ कहा क्या तुमने?"

"नहीं सर, मैं यही कहने आया था कि आज तक आपने एक भी क्लास नहीं छोड़ी और यहां तक कि पढ़ाने के बाद आप दूसरे दिन हम सबका टेस्ट भी लेते हैं।"

"तुम लोग पढ़ लिख जाओ, बड़े आदमी बन जाओ, तो मैं समझूंगा मेरी तपस्या सफल हो गई।" सर भावुक होते हुए बोले।

"तपस्या तो हमारी हो रही है। कभी चैन से नहीं बैठने देते, कभी ये टेस्ट तो कभी वो टेस्ट।" भुनभुनाते हुए दक्ष बुदबुदाया और वहां से चलता बना

अगले दिन दक्ष ने छत से देखा कि नायर सर अपनी कार धो रहे थे और तभी वह अचानक अपने घर के अंदर चले गए।

"ओह! हमें तो बड़ा ज्ञान देते हैं, पानी बर्बाद नहीं करना चाहिए, वरना

हमें कुछ सालों बाद पानी पीने के लिए भी नहीं मिलेगा। आज भी लोगों को मीलों दूर पानी लेने के लिए जाना पड़ता है और खुद को देखो, अभी इन्हें सबक सिखाता हूं।"

उसने तुरंत सोसाइटी के ऑफिस में फोन मिला दिया। कुछ ही देर में उसे दो गार्ड आते दिखाई दिए।

उसने देखा कि नायर सर उन्हें कुछ समझाने की कोशिश कर रहे थे पर उन दोनों ने उनकी एक ना सुनी।

फिर सर घर के अंदर गए और उन्हें रुपए लाकर दिए तब जाकर गार्ड वहां से गए।

दक्ष जानता था कि पानी कि बर्बादी करने पर पांच हजार रुपए का फाइन था। छत से उतरते हुए दक्ष मुसकरा रहा था।

उसने आराम से अपना वीडियो गेम खोला और लेवल पूरा करने के लिए बैठ गया।

पर थोड़ी ही देर बाद मम्मी की आवाज आई, "नायर सर का फोन आया है, कह रहे हैं तू क्लास में नहीं आया। जल्दी से जा, तेरे कारण सभी बच्चों को इंतजार करना पड़ रहा है।"

"पांच हजार रुपए का नुकसान हो गया, तब भी कोई दुख नहीं है उन्हें! फिर भी क्लास लेने चले आए।" ना चाहते हुए भी दक्ष के मुंह से निकल गया।

"क्या हो गया नुकसान?" मम्मी परदे के पीछे से निकलते हुए बोलीं।

दक्ष सकपका गया। उसने सोचा कि दीवारों के कान होते हैं तो सुना था पर अब तो पर्दों के भी कान होने लगे हैं।

"जवाब दो।" कहते हुए मम्मी सामने आकर खड़ी हो गईं।

"वो नायर सर अपनी कार धो रहे थे और पानी का पाइप खुला छोड़कर चले गए थे इसलिए।"

"ओह! नायर सर तो पानी की एक एक बूंद बचाते हैं। यहां तक कि इतने लोगों में सिर्फ वहीं हैं जिन्होंने रेनवाटर हार्वेस्टिंग की हुई है।"

दक्ष आश्चर्य से मम्मी का चेहरा देखता रह गया। जब उसे कुछ समझ में नहीं आया तो उसने कहा, "अगर सर इतना ही पानी बचाते हैं, तो उन्हें क्या नल चलाकर पाइप से कार धोनी चाहिए थी?"

"वह हमेशा ही एक बालटी पानी से अपनी कार धो लेते हैं पर उनकी छोटी बेटी की तबीयत बहुत खराब है। कल तो डॉक्टर के यहां ले जाते समय उसे बहुत उल्टियां भी हुई थीं, शायद इसलिए वह कार धो रहे होंगे।"

मम्मी की बात सुनकर दक्ष का दिल बैठ गया। उसका चेहरा फक हो गया। उसकी आंखों के आगे नायर सर का चेहरा घूम गया, जो चेहरा

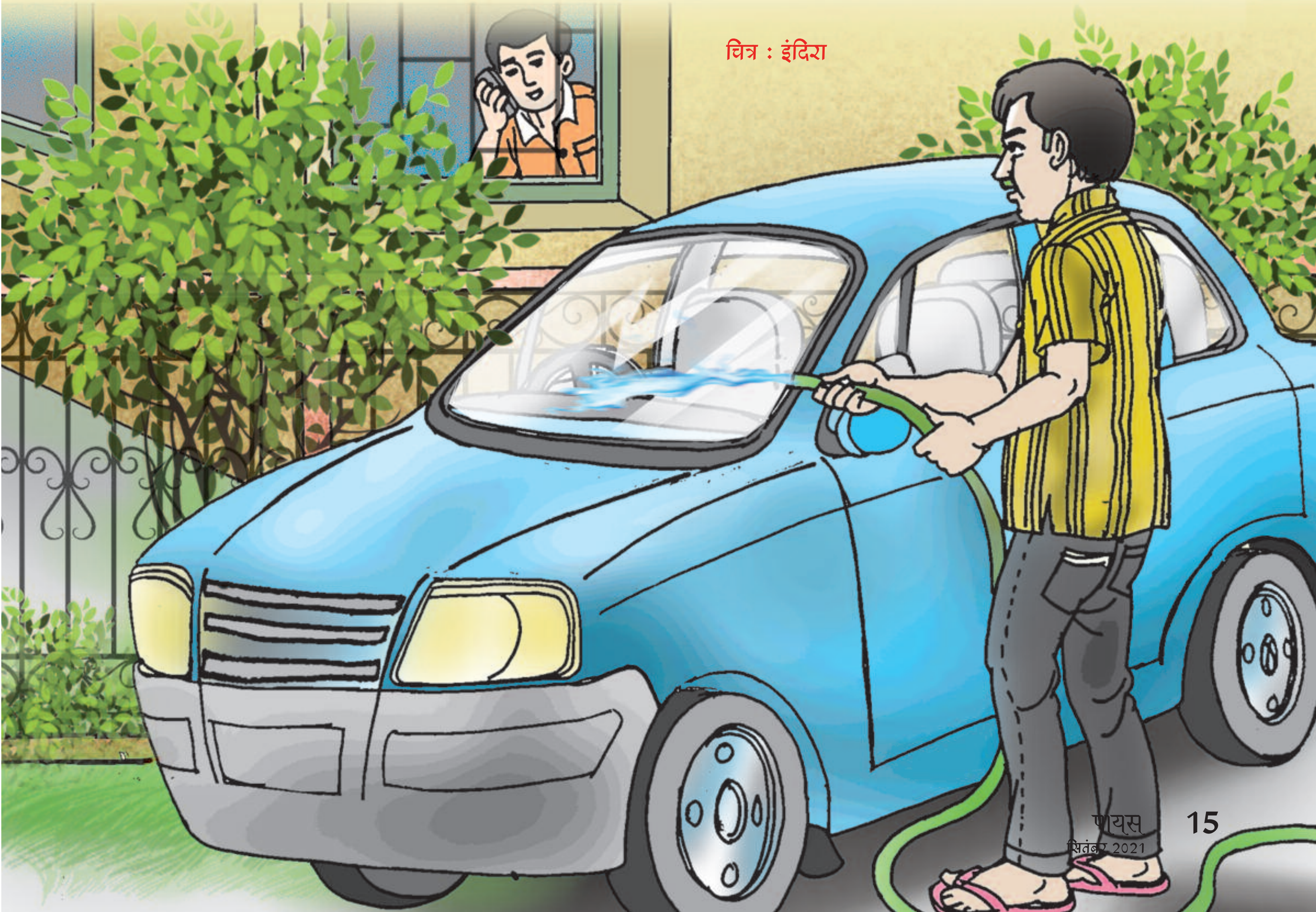

चित्र : इंदिरा

झुकाए गार्ड को पैसे दे रहे थे।

दक्ष ने रुलाई रोकते हुए कहा, “मम्मी...”

मम्मी ने उसकी तरफ देखा। दक्ष की आंखों में आंसू थे और वह दीवार का सहारा लेकर खड़ा था।

मम्मी ने घबराते हुए पूछा, “क्या हुआ? तुम्हारी तबीयत खराब है क्या?”

“मम्मी, अगर किसी से कोई गलती हो जाए, तो क्या करना चाहिए?” दक्ष ने कांपते होठों से पूछा।

मम्मी ने दक्ष की तरफ देखा। उसका आंसुओं से तरबतर चेहरा देखकर पल भर में ही वह सब कुछ समझ गईं।

“जाओ, जाकर माफी मांगो।” मम्मी ने दक्ष के आंसू पोंछते हुए कहा

“डर लग रहा है।” दक्ष सिर नीचा किए हुए बोला।

“मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूं।” कहते हुए मम्मी कमरे के अंदर गईं और कुछ ही देर बाद वापस बाहर आ गईं।

दक्ष मम्मी के साथ चला तो जा रहा था पर उसके पैर जैसे आगे ही नहीं बढ़ रहे थे।

वे दोनों नायर सर के घर के दरवाजे पर पहुंचे, तो शेरू ने जोर जोर से भौंकना शुरू कर दिया।

नायर सर तुरंत ही बाहर आ गए। दक्ष और उसकी मम्मी को देखकर वह तुरंत उनके पास आ गए और बोले, “अरे वाह, आज तो आप पहली बार मेरे यहां आई है।”

सर का अपनापन और प्यार देखकर दक्ष आगे बढ़कर सर के पैरों पर बैठ गया। नायर सर हड़बड़ा गए। तुरंत दक्ष को उठाते हुए बोले, “क्या हुआ बेटा?”

“आपको बता दिया, तो आप मुझसे कभी बात नहीं करेंगे और नहीं बताऊंगा, तो मैं कभी चैन से बैठ नहीं पाऊंगा।” दक्ष ने डबडबाई आंखों से कहा।

“अरे, ऐसा क्या कर दिया?” कहते हुए सर ने प्यार से दक्ष के कंधे पर हाथ रख दिया।

“आप हमेशा पढ़ाते रहते हैं इसलिए आपकी पानी वाली शिकायत मैंने ही की थी जिसके कारण आपके पांच हजार रुपए चले गए।” कहते हुए दक्ष की आंखों से आंसू टपक गए।

“ओह! तो अब तुम क्या करोगे?” नायर सर ने दक्ष के आंसू पोंछते हुए पूछा

“सर, अब मुझे समझ में आया है कि आप हमारे लिए ही इतनी मेहनत करके पढ़ाते हैं। आपकी बेटी इतनी बीमार थी पर आपने एक बार भी हमारी क्लास में कुछ नहीं कहा और पूरी पढ़ाई करवाई। सर मैं कसम खाता हूं कि अब मैं बहुत पढ़ूंगा, बहुत मेहनत करूंगा और आपके जैसा बनूंगा।”

दक्ष के बात सुनकर नायर सर का दिल भर आया और उन्होंने प्यार से उसके गालों पर एक हलकी सी चपत लगा दी।

“और सर, आपके पैसे मैं दे दूंगी। दक्ष के कारण आपका इतना नुकसान हो गया।” मम्मी सकुचाते हुए बोलीं।

नायर सर हंसते हुए बोले, “अब शिकायत दक्ष ने की है, तो पैसे भी वही देगा।”

“सर, पर मैं तो अभी बहुत छोटा हूं।” दक्ष ने दुखी होते हुए कहा।

“तो हमेशा छोटे थोड़े ही ना रहोगे। जब तुम बड़े हो जाओगे, नौकरी करोगे, तो मेरे ये पैसे वापस कर देना। इसी बहाने कम से कम मुझे याद तो रखोगे।” नायर सर ने प्यार से कहा

“आप बहुत अच्छे हैं, बहुत अच्छे।” कहते हुए दक्ष भरभराकर रो पड़ा।

नायर सर ने भीगे मन से उसे कस कर अपने गले से लगा लिया।

अपना योगदान दें

पायस बच्चों को ध्यान में रखकर पायस का प्रकाशन रंगीन चित्रों के साथ आप सबके सहयोग से हो पा रहा है।

रचना ही नहीं,
आर्थिक योगदान देकर भी
इस प्रयास में सहयोगी बनें

चिड़ियों को जानो...

◆ दुनिया में दस हजार से ज्यादा तरह की चिड़ियां हैं। इन्हें वैज्ञानिकों ने तीस वर्गों में रखा है।

◆ इन में से दो-तिहाई पक्षी वर्षावनों में रहते हैं और चालीस प्रतिशत प्रतिशत प्रवासी पक्षी हैं।

◆ ऑस्ट्रेलियन पेलिकन की चोंच दुनिया में सबसे लंबी यानी करीब दो फीट तक होती है।

◆ हमिंगबर्ड दुनिया की सबसे छोटी चीड़िया होती है। यह एकमात्र पक्षी है, जो बिना घूमे उलटी दिशा में उड़ सकती है। यह इतना तेज फंख फड़फड़ा सकती है कि आवाज तक सुनाई देने लगती है।

◆ उल्लू अपनी आंखों की पुतलियों को नहीं घुमा सकते, इसलिए अपने पीछे देखने के लिए पूरी गर्दन घुमा लेते हैं।

◆ मनुष्यों के बाद दुनिया में पक्षी का सबसे बड़े दुश्मन बिल्ली है। अकेले अमेरीकी महाद्वीप में हर साल तीन अरब सत्तर करोड़ से ज्यादा चिड़ियां बिल्लियों के हाथों मारी जाती हैं।

◆ अफ्रीकन भूरे तोते दुनिया में सबसे ज्यादा शब्द सीखने की क्षमता रखते हैं। ऐसा एक तोता मनुष्यों की बोली से 800 शब्द तक सीख सकते हैं, जबकि आम तोते केवल 50 शब्द सीख पाते हैं।

◆ एक कठफोड़वा को खाने को मिले, तो एक दिन में 2000 चीटियां चट कर सकती हैं।

◆ दुनिया का सबसे बड़ा पक्षी है ऑस्ट्रिच। इसके दिए एक अंडे का वजन एक किलो से भी ज्यादा होता है।

◆ एक पक्षी के पंखों का वजन उसके शरीर के हड्डियों के ढांचे से ज्यादा होता है। अधिकांश पक्षियों की हड्डियां खोखली होती हैं।

◆ आमतौर पर जंगली चिड़ियों का जीवनकाल एक साल से कम होता है। वहां जितना बड़ा पक्षी होता है, उसके जीने के दिन उतने ही ज्यादा होते हैं।

◆ दुनिया के 11 प्रतिशत से ज्यादा पक्षी खतरे में हैं या लुप्त होने की कगार पर हैं।

◆ पिछले 400 सालों में 150 से ज्यादा पक्षियों की प्रजाति विलुप्त हो चुकी हैं।

◆ फ्लेमिंगो जब जोड़ा बनाते हैं, तो जीवन भर साथ रहते हैं। कई तो पचास साल तक साथ देखे गए हैं।

◆ सारे पक्षी उड़ नहीं सकते। पेंग्विन, ऑस्ट्रिच और लुप्त हो चुके डोडो नहीं उड़ सकते।

◆ पक्षी बड़े पेटू होते हैं। वे अपने वजन से दोगुना खा जाते हैं। दरअसल उड़ने में उनकी बहुत ऊर्जा चली जाती है, इसलिए ज्यादा खाना पड़ता है।

◆ दुनिया में सबसे से ज्यादा पक्षी मुर्गे हैं और सबसे ज्यादा इनका ही शिकार होता है।

◆ कौए बहुत समझदार होते हैं। वे इनसानों के चेहरों को याद रख सकते हैं, खासतौर पर उनके जिन्होंने कभी उन्हें हानि पहुंचाई हो।

◆ पक्षियों में सबसे बड़ा घोंसला बाल्ड ईगल बनाता है।

◆ कैस्सोवरी को सबसे खतरनाक पक्षी माना जाता है। यह अपने दुश्मन को एक लात मारकर धराशाई कर देता है।

◆ गिद्ध सड़ा-गला मांस भी खाकर बीमार नहीं पड़ता क्योंकि उसके पेट में एसिड होता है, जो सबकुछ पचाने में उसकी सहायता करते हैं।

◆ पक्षी पेड़ों पर सोते समय कभी नीचे नहीं गिर सकते।

◆ एम्परर पेंग्विन 18 मिनट तक लगातार पानी के भीतर रह सकता है।

ऑस्ट्रेलियन पेलिकन

हमिंगबर्ड

उल्लू

अफ्रीकन भूरा तोता

पेंग्विन

डोडो

कौआ

मुर्गा

कठफोड़वा

दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक

शिक्षक सिर्फ वो नहीं, जो सिर्फ पाठ पढ़ाते हैं। असल में एक शिक्षक किसी के व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं और समाज में जीने का सलीखा सिखाते हैं।

भारत में हम हर साल 5 सितंबर को टीचर्स डे के रूप में सेलिब्रेट करते हैं। जिसका उद्देश्य उन सब शिक्षकों को नमन करना है, जिन्होंने हमारे समाज के लिए, हमारी सोसाइटी के लिए बहुत कुछ किया है।

हमारे जीवन में एक शिक्षक की भूमिका बहुत अहम है। अगर पहली पाठशाला माता-पिता हैं, तो शिक्षक पूरी दुनिया को एक पाठशाला बनाने की ताकत रखते हैं।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि एक अच्छे शिक्षक के बिना ना कोई साइंटिस्ट पर सकता है ना इंजीनियर, डॉक्टर और ना ही राइटर। हमारी एजुकेशन सिस्टम की नींव एक अच्छे टीचर के द्वारा ही रखी जा सकती है। टीचर का मतलब सिर्फ आपको पढ़ाना ही नहीं, टीचर का मतलब है जो आप को अच्छे संस्कार दे, आपके अंदर हुनर, आपके अंदर विश्वास जगाए।

यहां हम ऐसे ही दुनिया के कुछ शिक्षकों की बात करेंगे, जिन्होंने न केवल अपने विद्यार्थियों को शिक्षा दी बल्कि उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी किया।

चाणक्य

चाणक्य का नाम दुनिया के सबसे अच्छे शिक्षकों में लिया जाता है। चाणक्य प्राचीन तक्षशिला विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र और राजनीती विज्ञान के शिक्षक थे। इतिहास में चाणक्य चंदगुप्त मौर्य के गुरु माने जाते थे। उनकी लिखी किताब अर्थशास्त्र इकोनॉमिक्स और पॉलिटिक्स की बेहतरीन किताब है।

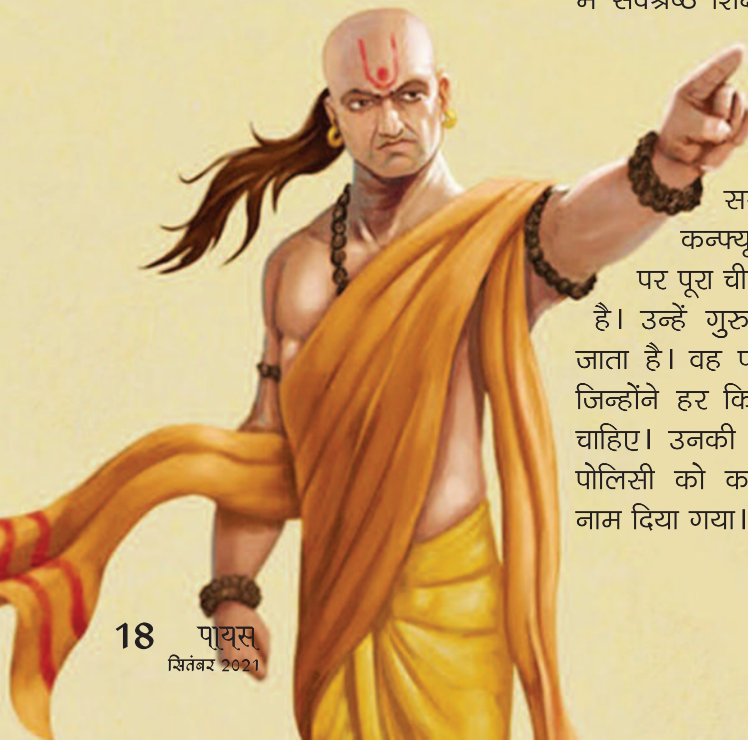

कन्फ्यूशियस

कन्फ्यूशियस का नाम पूरी दुनिया में सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों में शामिल है। चीन के एक कुलीन परिवार में इनका जन्म हुआ था। वह एक सरकारी शिक्षक थे। कन्फ्यूशियस के जन्मदिन पर पूरा चीन 'टीचर्स डे' मनाता है। उन्हें गुरुओं का गुरु माना जाता है। वह पहले ऐसे टीचर थे, जिन्होंने हर किसी को शिक्षा देनी चाहिए। उनकी दी हुई शिक्षा और पोलिसी को कन्फ्यूशियानिज्म का नाम दिया गया।

ऐनी सुलिवन

हेलेन केलर की शिक्षिका के रूप में ऐनी सुलिवन को जाना जाता है। जब वो महज पांच साल की थीं, तब वो आंशिक रूप से नेत्रहीन हो गई थीं। स्नातक की पढ़ाई के बाद वो शिक्षिका बन गईं। उनकी पहली और आखरी विद्यार्थी थी हेलेन केलर। उन्होंने अपना पूरा जीवन उन्हीं के लिए समर्पित कर दिया।

जीन पियाजे

अपने बचपन के दिनों में ही जीन पियाजे ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ला दी। उनका हमेशा से ही कहना था

कि शिक्षकों की भूमिका ज्ञान को प्रसारित करने वाली होनी चाहिए। एक अच्छा शिक्षक बच्चे को अच्छे से निर्देशित कर सकता है ताकि उसका भविष्य संवर सके। 1929 में वह इंटरनेशनल ब्यूरो एजुकेशन के डायरेक्टर भी बने।

रबींद्रनाथ टैगोर

नोबेल पुरस्कार विजेता रबींद्र नाथ टैगोर की शिक्षण पद्धति औरों से काफी अलग थी। उन्होंने पश्चिम बंगाल के शांतिनिकेतन में विश्व भारती विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। वो वहां गुरुकुल शैली की परंपरा को पालन कराते थे। उनके कक्षाएं पेड़ों की छांव में चलती थी। वह उस शिक्षा पद्धति के खिलाफ थे, जो बच्चों को क्लास रूम में बैठकर सिर्फ तोते की जैसे रटाती है।

स्वामी विवेकानंद

वैसे स्वामी विवेकानंद को नरेंद्रनाथ दत्त के नाम से जाना जाता है। इनका नाम देश के महान शिक्षकों में गिना जाता है। इन्होंने अपनी शिक्षा प्रणाली से सभी को प्रभावित किया। विवेकानंद ने दुनिया को वेदांता फिलासफी, हिंदुत्व और उसका मतलब समझाया।

अब्दुल कलाम

मिसाइल मैन के नाम से जाने

जाने वाले अब्दुल कलाम महान शिक्षक थे। राष्ट्रपति बनने से पहले वह एक एयरोस्पेस इंजीनियर थे और डीआरडीओ में वैज्ञानिक थे। उन्होंने छात्रों को प्रेरित किया और अपने सपनों को साकार करने के लिए भी प्रोत्साहित किया। उनका मानना था कि देश का भविष्य युवा विद्यार्थियों के हाथ में है इसलिए उनकी उचित शिक्षा जरूरी है।

सावित्रीबाई फुले

सावित्रीबाई फुले देश की पहली महिला शिक्षक थीं। इन्हें इनकी शादी के बाद पति ने शिक्षित किया। पढ़ाई

पूरी करने के बाद सावित्री ने लड़कियों के लिए तीन स्कूल शुरू किए। आपने अपनी टीचर ट्रेनिंग की शिक्षा अमेरिका मिशनरीज स्कूल से की और फिर उसके बाद पुनः में एक स्कूल शुरू किया। खासकर आपने महिला शिक्षा पर जोर दिया।

विवियन पाले

विवियन पाले एक शोधकर्ता थीं। उन्होंने 37 साल से ज्यादा प्री स्कूल

और केजी कक्षाओं में पढ़ाया और इसी बीच टीचिंग के नए-नए तरीकों पर बराबर ध्यान करती रहीं। वह पहली ऐसी और अकेली केजी के बच्चों को पढ़ाने वाली अध्यापिका थीं जिनको मैक आॅर्थर अवार्ड दिया गया। यही नहीं उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर टीचिंग के तरीकों पर एक किताब भी लिखी। साथ ही कई कार्यशालाओं का भी कार्यक्रम आयोजन किया।

एरिन ग्रुवेल

एरिन ग्रुवेल को सबसे पहले पढ़ाने का अनुभव तब हुआ, जब उन्होंने एक स्कूल में विद्यार्थी के रूप में काम किया। उन्होंने उन बच्चों को पढ़ाना जरूरी समझा, जिनके बहुत कम नंबर आते हैं। 1992 में लॉस एंजेलिस में झगड़ों के दौरान वे टीचर बनी और बच्चों को बेहतर जीवन जीने की ओर प्रेरित किया। ✪

रचनाकार को जानिए

मोनिका अग्रवाल : शिक्षा : समाज शास्त्र में स्नातक और कंप्यूटर इंजीनियरिंग डिप्लोमा। सम्प्रति : 'अनुगूंज' कहानी संग्रह; 'पतझड़ में मधुमास' कहानी संग्रह; 'किड्स स्टोरीज' बाल कहानी संग्रह; 'अम्मा कहती थी' सांझा काव्य संग्रह! पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं।

एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक उड़ान

संसार का सबसे बड़ा उड़ंतु

घूमना इनसान को बहुत पसंद है। पर लगता है, उसे इसकी प्रेरणा पक्षियों से मिली है। विश्वास नहीं होता न? जानते हो, पक्षी से बड़ा घुमंतु कोई नहीं होता। और ऐसे पक्षियों का सरदार है आर्कटिक टर्न।

एक छोटा, पतला, भूरा और सफेद पक्षी, आर्कटिक टर्न अपने लंबे वार्षिक प्रवास के लिए जाना जाता है। यह अपने आर्कटिक प्रजनन मैदानों से अंटार्कटिका तक यात्रा करता है यह लगभग 25,000 मील की दूरी तय करने के बाद अंटार्कटिक में गरमियों का आनंद लेता है।

आर्कटिक टर्न एक सामाजिक पक्षी है, जो समूहों में रहते हैं। वे अक्सर बर्फ पर आराम करते है। ये जमीन पर ही घोंसला बनाते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि ये तनाव रहित और प्रसन्नचित्त रहते हुए उड़ान पर निकलते हैं।

आर्कटिक टर्न ध्रुव से ध्रुव की ओर प्रवास पर निकलते हैं। उत्तरी अमेरिका से ये पक्षी हर साल लगभग पचीस हजार मील से ज्यादा यात्रा करते हैं।

आर्कटिक टर्न दो रंगों में होते हैं, मटमैले या भूरे। कमाल की बात यह कि एक ही पक्षी के चूजे हमेशा एक जैसे रंग के नहीं होते।

आर्कटिक टर्न लंबे समय तक जीवित रहते हैं। ये तीन या चार साल की उम्र तक बाद ही प्रजनन शुरू करते हैं। एक आर्कटिक टर्न के 34 वर्ष की उम्र तक जीवित रहने के भी प्रमाण मिले हैं।

सर्दियों के दौरान आर्कटिक टर्न शायद ही कभी उड़ता है। इसके बजाय यह अपना अधिकांश समय बर्फ के किनारे पर बर्फ के छोटे-छोटे ब्लॉकों पर आराम करने में बिताता है।

आर्कटिक टर्न पक्षी अपनी प्रवासी यात्रा में आर्कटिक क्षेत्र से अंटार्कटिका तक जाते हैं और फिर लौट कर भी आते हैं। काफी समय तक माना जाता था कि इसके लिए वे 35000 किलोमीटर तक की उड़ान भरते हैं। लेकिन हाल के एक अध्ययन से पता चला वे इससे भी लंबी उड़ान भरते हैं।

आर्कटिक टर्न प्रवास यात्रा करते वक्त सीधा रास्ता नहीं लेते, ये रास्ता भी बदलते रहते हैं। कुछ आर्कटिक टर्न पक्षियों पर एक छोटा-सा यंत्र लगाया गया। इस यंत्र से पता लगाया गया कि वे कहां आ-जा रहे हैं। पता चला कि कुछ पक्षियों ने आने-जाने में औसतन 90,000 किलोमीटर तक की उड़ान भरी। आज तक किसी प्रवासी जीव ने इतनी लंबी यात्रा नहीं

की। इन पक्षियों ने चाहे कहीं से भी उड़ान भरी हो, पर सीधा रास्ता नहीं लिया। इसकी वजह यह है कि ये पक्षी हवा के बहाव के मुताबिक उड़ते हैं और रास्ता तय करते हैं।

ये इतने घुमंतु होते हैं कि अपने जीवन में करीब 20 लाख किलोमीटर से भी ज्यादा सफर तय करते हैं। और कमाल की बात यह है कि इसका वजन सौ ग्राम के आसपास होता है। फिर भी यह इतना लंबा सफर तय करता है। माना जाता है कि यह पक्षी सबसे ज्यादा समय दिन के उजाले में रहता है क्योंकि यह पृथ्वी के दोनों ध्रुवों पर गरमियों के दौरान रहता है।

दक्षिण की ओर पलायन करते समय, शोधकर्ताओं ने पाया कि लगभग सभी आर्कटिक टर्न ने तीन मार्गों में से एक को अपनाया। दो रास्ते अटलांटिक महासागर और एक प्रशांत महासागर के साथ था।

हालांकि, आर्कटिक टर्न जब उत्तरी ध्रुव की ओर लौटते हैं, तो दो मार्गों का ही प्रयोग करते हैं, एक अटलांटिक का और एक प्रशांत का। खास बात यह है कि अपनी दक्षिणी ध्रव की यात्रा पर, वे तट के करीब रहते हैं और किनारे से ही उड़ान भरते हैं, जबकि उत्तरी ध्रुव की ओर लौटते समय वाले मार्गों पर, उन्होंने समुद्र के बीच में उड़ान भरी।

इससे स्पष्ट है कि जब वे तटीय मार्ग लेते हैं, तो भोजन एक बड़ा कारण होता है क्योंकि वे प्रजनन के बाद जा रहे होते हैं, और उन्हें बहुत ऊर्जा की जरूरत होती है। ऊर्जा के लिए ये खाने पर निर्भर होते हैं।

उत्तर की ओर की यात्रा हवा से प्रभावित होती है। वे जल्द से जल्द प्रजनन स्थलों पर वापस जाना चाहते हैं क्योंकि सबसे अच्छे घोंसले और बढ़िया शिकार स्थल के लिए इन चिड़ियों में बहुत मुकाबला होता है। इसलिए वे समुद्र के बीच से छोटा रास्ता अपनाते हैं।

कई पक्षी ऐसे हैं, जिन्हें लंबी दूरी की यात्रा करना पसंद है। इनमें सूटी शीयरवाटर का नाम भी शामिल है। आर्कटिक टर्न के बाद यह दूसरा ऐसा पक्षी है, जो सर्वाधिक लंबी दूरी की यात्रा तय करता है। सूटी शीयरवाटर सालभर में 64 हजार किलोमीटर (40 हजार मील) की दूरी तय करता है। खास बात है कि यह पक्षी झुंड के बजाय अकेले ही इतनी लंबी यात्रा करने की हिम्मत रखता है। इस सूची में तीसरा स्थान शॉर्ट टेल्ड शीयरवाटर का है। यह 43 हजार किमी (27 हजार मील) की दूरी तय करता है।

4,000 पक्षियों की प्रजातियां नियमित रूप से प्रवास यात्रा करती हैं। प्रजातियों के रूप में यह कुल पक्षी जगत का करीब 40 फीसदी है।

बार टेल्ड गोडविट बिना रुके 7,500 किलोमीटर की दूरी तय कर सकता है। यह दूरी आठ दिनों तक भोजन और आराम के बिना रिकॉर्ड की गई है। ✪

आर्कटिक टर्न घोंसले में

आर्कटिक टर्न का अंडा

आर्कटिक टर्न बच्चों के साथ

सूटी शीयरवाटर

शॉर्ट टेल्ड शीयरवाटर

कैटोलाईट

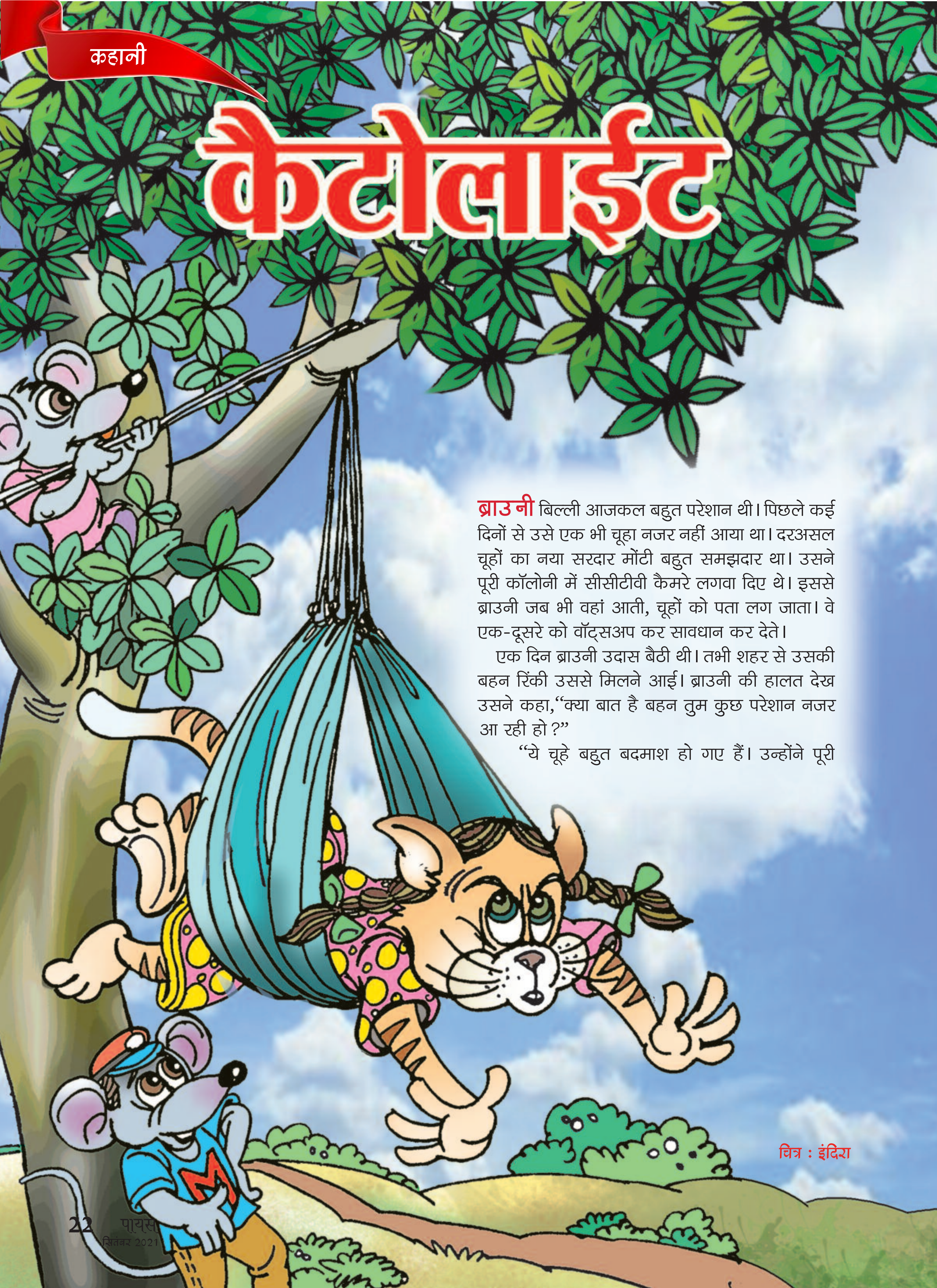

ब्राउनी बिल्ली आजकल बहुत परेशान थी। पिछले कई दिनों से उसे एक भी चूहा नजर नहीं आया था। दरअसल चूहों का नया सरदार मोंटी बहुत समझदार था। उसने पूरी कॉलोनी में सीसीटीवी कैमरे लगवा दिए थे। इससे ब्राउनी जब भी वहां आती, चूहों को पता लग जाता। वे एक-दूसरे को वॉट्सअप कर सावधान कर देते।

एक दिन ब्राउनी उदास बैठी थी। तभी शहर से उसकी बहन रिंकी उससे मिलने आई। ब्राउनी की हालत देख उसने कहा,"क्या बात है बहन तुम कुछ परेशान नजर आ रही हो?"

"ये चूहे बहुत बदमाश हो गए हैं। उन्होंने पूरी

चित्र : इंदिरा

कॉलोनी में सीसीटीवी कैमरे लगवा दिए हैं। इससे जब भी मैं वहां जाती हूं, उन्हें पता लग जाता है और वे सब इधर उधर छुप जाते हैं। पिछले 10 दिनों से मुझे एक भी चूहा नहीं मिला है।" ब्राउनी ने उदास स्वर में बताया।

"तभी तुम इतनी दुबली नजर आ रही हो।" रिंकी ने कहा। फिर कुछ सोचते हुए बोली, "आजकल टेक्नोलॉजी का जमाना है। सभी लोग हाईटेक हो गए हैं, इसलिए अब तुम्हें भी हाईटेक तरीका अपनाना चाहिए। तभी काम चल पाएगा।"

"वह कैसे?" ब्राउनी ने पूछा।

"तुम फेसबुक पर अपना एक नया अकाउंट खोल लो। प्रोफाइल में अपनी जगह किसी चूहे की फोटो लगा दो। उसके बाद चूहों से दोस्ती कर उनसे चैटिंग करो। फिर किसी दिन उन्हें सुनसान जगह पर बुला लिया करो। उसके बाद तुम्हारा काम आसान हो जाएगा।" रिंकी ने समझाया।

"अरे वाह! यह तो बहुत आसान तरीका है।" ब्राउनी खुशी से उछल पड़ी।

उसने उसी दिन फेसबुक पर एक नया अकाउंट बनाया और प्रोफाइल में एक सुंदर सी चुहिया की फोटो लगा दी।

'चलो सबसे पहले मोंटी से निपटा जाए। वही सारी खुराफात की जड़ है।' सोचते हुए ब्राउनी ने मोंटी को फ्रेंड रिक्वेस्ट भेज दी। थोड़ी ही देर में मोंटी ने उसकी फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार कर ली।

"मेरी फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार करने के लिए धन्यवाद। आप बहुत अच्छे हैं।" ब्राउनी ने फौरन चैटिंग शुरू दी।

"क्या मैं आपका नाम जान सकता हूं?" अगले ही पल मोंटी का संदेश आया।

"मेरा नाम स्वीटी है। मुझे अच्छे लोगों से दोस्ती करना बहुत अच्छा लगता है। आप बहुत अच्छे हैं इसीलिए आपको फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजी थी।" ब्राउनी ने उत्तर दिया।

"धन्यवाद।" अपनी तारीफ सुनकर मोंटी खुश हो गया। दोनों काफी देर तक चैटिंग करते रहे।

दोनों में जल्दी ही दोस्ती हो गई। ब्राउनी स्वीटी के नाम से मोंटी से रोज चैटिंग करती रहती।

एक दिन ब्राउनी ने लिखा, "मेरा आपसे मिलने का बहुत मन है।"

"मेरा भी आपसे मिलने का बहुत मन है। बताइए कहां मिलिएगा?" मोंटी ने तुरंत उत्तर दिया।

"आपकी कॉलोनी के पीछे जो खंडहर हैं, वहां कोई नहीं आता जाता। आप वहीं आ जाइए। हम वहां देर तक बातें करेंगे।" ब्राउनी ने फौरन लिखा।

"ठीक है, कल इसी समय वहां मिलते हैं।" मोंटी ने वादा किया। फिर अपने अकाउंट से लॉग आउट कर गया।

'ठीक है बच्चू एक बार वहां आ जाओ। फिर तुम्हें सबक सिखाती हूं।' ब्राउनी ने दांत पीसते हुए मन ही मन सोचा।

अगले दिन वह खुशी-खुशी खंडहरों में पहुंची। मोंटी बहुत इत्मीनान के साथ एक खंभे के पास बैठा हुआ था। ब्राउनी उसे दबोचने के लिए आगे बढ़ी। सामने जमीन पर एक चादर बिछी हुई थी। खुशी की अधिकता में ब्राउनी उसे देख नहीं पाई। इससे पहले कि वह कुछ समझ पाती, चादर ने उसे लपेट लिया और हवा में टंग गई।

दरअसल उस चादर में कई पतली डोरिया बंधी हुई थी। उनका दूसरा सिरा पेड़ से होते हुए पीछे तक गया हुआ था। वहां कई चूहे उन डोरियों को थाम कर छुपे बैठे थे। जैसे ही

अपने लेखक को जानिए

संजीव जायसवाल 'संजय' : 40 वर्षों से साहित्य साधना में लीन। रेलवे की नौकरी से सेवानिवृत्ति के बाद पूरी तरह साहित्य को समर्पित। अब तक एक हजार से अधिक कहानियां और 25 से ज्यादा पुस्तकें प्रकाशित। इनकी एक पुस्तक का विश्व की 112 भाषाओं में अनुवाद हुआ।

ब्राउनी चादर पर आई, सब ने एक साथ डोरियों को खींच लिया। इससे चादर में लिपटी ब्राउनी हवा में टंग गई थी।

"आंटी, कैसा लगा हमारा झूला?" तभी मोंटी ने हंसते हुए पूछा।

"यह क्या बदतमीजी है। नीचे उतारो मुझे।" ब्राउनी गुस्से से चिल्लाई।

"पहले ये बताइए कि आपका नाम स्वीटी कब से हो गया है? और आपने फेसबुक प्रोफाइल में चुहिया की फोटो क्यों लगाई है?" तभी कई चूहों ने हंसते हुए प्रश्नों की बौछार कर दी।

"तुम लोगों को यह सब कैसे पता चला?" ब्राउनी चौंक पड़ी।

"क्योंकि आपने केवल टेक्नोलॉजी का प्रयोग किया था, जबकि हमने टेक्नोलॉजी के साथ साथ इन्टलीजेंस का भी प्रयोग किया है" मोंटी हंसते हुए बोला।

"क्या मतलब?"

"मैं अच्छी तरह से जांच पड़ताल किए बिना किसी की फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार नहीं करता। जब स्वीटी की फ्रेंड रिक्वेस्ट आई, तो मैंने देखा

उसका और मेरा कोई म्यूचुअल फ्रेंड नहीं है। मैं तभी समझ गया था कि किसी ने धोखा देने के लिए फर्जी अकाउंट बनाया है। कोई सीधा-सादा चूहा जाल में न फंस जाए, इसलिए असलियत का पता लगाना जरूरी था। तभी मैंने आपकी फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार कर ली थी।"

इतना कहकर मोंटी पलभर के लिए रुका फिर बोला, "स्वीटी ने जब मुझे खंडहर में मिलने के लिए बुलाया, तब मुझे पक्का यकीन हो गया कि यह आपकी खुराफात है। उसके बाद हम लोगों ने भी अपनी छोटी सी टेक्नोलॉजी दिखा दी। हम लोग घर वापस जा रहे हैं। अब आप आराम से झुला झूलते हुए आसमान में तारे गिनती रहिए।"

यह सुन ब्राउनी की हालत खराब हो गई। वह रोने-गिड़गिड़ाने लगी, "मुझसे गलती हो गई। मुझे माफ कर दो। मैं अब कभी तुम लोगों को तंग नहीं करूंगी। मुझे नीचे उतार दो प्लीज।"

"अगर तुम्हें नीचे उतारा, तो तुम फिर हम लोगों को परेशान करोगी।" एक चूहे ने कहा।

"मैं वादा करती हूं कि अब भूलकर भी तुम्हारी कॉलोनी की तरफ नहीं आऊंगी।" ब्राउनी ने कान पकड़ते हुए विनती की।

मोंटी ने अपने साथियों से सलाह मशवरा किया फिर बोला, "हम लोग कुछ डोरियों को ढीला किए दे रहे हैं इससे आपका झूला धीरे-धीरे नीचे आ जाएगा। उसके बाद आप आराम से बाहर निकल जाइएगा।"

'जुग-जुग जिओ मेरे लाल, जुग-जुग जिओ।" ब्राउनी ने आशीर्वाद की बौछार कर दी।

"अभी आप लाल कह रही हैं लेकिन बाहर निकलते ही लाल-पीली होने लगेंगी। इसलिए आपको बता दे रहा हूं कि हम लोगों ने कैटोलाईट भी मंगवा लिया है। इसलिए सपने में भी हमारी कॉलोनी की तरफ आने की गलती मत करिएगा।" मोंटी ने कहा।

"कैटोलाईट क्या होता है?" ब्राउनी ने डरते-डरते पूछा।

"यह कैट को पकड़ने वाला सैटलाइट है। ये बिल्लियों को पकड़कर आसमान में भेज देता है। जहां से वे कभी वापस नहीं लौट सकती।" मोंटी ने बताया फिर कुछ डोरियों को ढीला करके अपने साथियों के साथ वहां से चला गया।

थोड़ी ही देर में चादर का झूला नीचे आ गया। ब्राउनी उससे बाहर निकल आई।

ब्राउनी की मोंटी की कॉलोनी की तरफ जाने की कभी हिम्मत नहीं हुई। उसे लग रहा था की चूहे बहुत हाईटेक हो गए हैं और उन्होंने वास्तव में कैटोलाईट मंगवा लिया होगा। ✪

अपने भीतर के लेखक को उड़ने के लिए खुला आसमान दें

- अपनी रचना को दूसरों के सामने लाने के लिए, अपनी कहानी, कविता या लेख को पी.डी एफ. फार्मेट में किताब या पत्रिका के रूप में दुनिया के सामने लाएं।
- आप केवल लिखें। बाकी सब हम पर छोड़ दें।
- ब्लैक एंड ह्वाइट या रंगीन चित्र भी बनवाने की सुविधा है।
- संपादन में 25 वर्षों का अनुभव

संपर्क करें

अनिल जायसवाल
9810556533 7982014609
akjaiswal2592@gmail.com

ANIL JAISWAL
Jais Features
akjaiswal2592@gmail.com
9810556533
7982014609

हिंदी में किसी भी प्रकार की, खास तौर पर बच्चों के लिए प्रकाशन सामग्री या कार्य के लिए संपर्क करें. प्रूफ रीडिंग, संपादन, संकलन, टाइपिंग, मैगजीन सेटिंग, डिजाइनिंग, पी.डी. फार्मेट में पत्रिका या ई. पत्रिका निकालने की सुविधा भी उपलब्ध है.

नंदन बाल पत्रिका में संपादन का 25 वर्षों का अनुभव

शिक्षक दिवस पर विशेष

शिक्षा के प्रति समर्पित राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन

भारत के द्वितीय राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर 1888 को चेन्नई से चालीस मील दूर उत्तर पूर्व के गांव तिरुत्तनी में हुआ। प्रारंभिक पढ़ाई के बाद उन्होंने उच्च शिक्षा मद्रास विश्वविद्यालय से प्राप्त की। वह पढ़ने में इतने तेज थे कि पढ़ाई पूरी करते ही केवल 20 वर्ष की उम्र में मद्रास प्रेसिडेंसी कालेज में पढ़ाने लगे। दर्शन शास्त्र पर उनकी बेहतरीन पकड़ थी। इस विषय पर लिखी गई उनकी पुस्तकें विश्व-प्रसिद्ध हैं।

शुरू से पढ़ाई में रुचि होने के कारण पढ़ना और पढ़ाना जीवन भर उनका ध्येय रहा। देश-विदेश में पढ़ाने के बाद 1939 से 1948 तक वह बनारस विश्वविद्यालय के उप कुलपति भी रहे। इसके बाद वह राजनीति की तरफ मुड़े और भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने उन्हें सोवियत संघ भेजा जहां वह 1949 से 1952 तक राजदूत रहे। वहां से लौटे, तो उन्हें भारत का प्रथम उपराष्ट्रपति बनाया गया। इस पद पर दस साल रहने के बाद मई 1962 में वह भारत के दूसरे राष्ट्रपति बने।

पढ़ाई को लेकर उनकी सोच बिल्कुल साफ थी। उनका मानना था कि समाज में फैली बुराइयों को शिक्षा के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है। बच्चों के लिए सिर्फ पढ़ने के लिए पढ़ाई और शिक्षक के लिए पढ़ाने के लिए पढ़ाना गलत है। हर काम किसी न किसी लक्ष्य को लेकर करना चाहिए। उनका मानना था कि देश की तरक्की के लिए बेहतर दिमाग तैयार करना जरूरी है और यह तभी हो सकता है

जब शिक्षक और छात्र दोनों ही लक्ष्य के प्रति समर्पित हों। वह कहते थे कि जब तक शिक्षक पढ़ाई के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध नहीं होंगे, तब तक भारत में बढ़िया शिक्षा-प्रणाली तैयार नहीं होगी। इसलिए लक्ष्य तक पहुंचने के लिए शिक्षक और छात्र में बेहतर संबंध होना जरूरी है।

डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का कहना था कि भारत के सबसे बेहतर दिमाग शिक्षा से जुड़ें, तो भारत को आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। शायद यही आज हो रहा है जब अपने क्षेत्र में सफल व्यापारी, डाक्टर, इंजीनियर, कंपनी प्रबंधक आदि कालेजों में बच्चों से मिलते हैं और अपनी सफलता का राज उनसे बांटकर उन्हें भी आगे पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

शिक्षा के प्रति इतना समर्पित होने के कारण ही उनके जन्मदिन को शिक्षक दिवस घोषित कर दिया गया। देश के प्रति वह इतने समर्पित थे कि राष्ट्रपति के रूप में हर महीने मिलने वाले वेतन का तीन-चौथाई हिस्सा वह प्रधानमंत्री राहत कोष में दान दे दिया करते थे। ✪

सुरीले सपने

बुआ की स्कूटी आने वाली थी। उनके पापा यानी बच्चों के दादा जी ने कहा था कि जब यह बी.ए. कर लेगी, तो इसे स्कूटी दिलाएंगे और बुआ ने भी कह दिया था कि अगर स्कूटी नहीं दिलाएंगे तो वह एम.ए. नहीं करेंगी।

जैसे ही दादा जी ने रिजल्ट आने के बाद स्कूटी दिलाने की घोषणा की, तो बुआ की चारों भतीजियां और इकलौता भतीजा उसके खुशनुमा चेहरे को देखकर खुश होने लगे।

कम्मो ने कहा, "अब तो बुआ के मजे आ गए। साइकिल से पीछा छूटा।"

अब बुआ ने भी घोषणा कर दी, "स्कूटी आने के बाद मैं अपनी साइकिल आलिया और कम्मो को दे दूंगी। सोना और नायरा तो अभी बहुत छोटी हैं। इन्हें मैं बाद में साइकिल दिलाऊंगी।"

नाजिम, जो बहुत ध्यान से बुआ की बातें सुन रहा था, और अपनी बारी का इंतज़ार कर

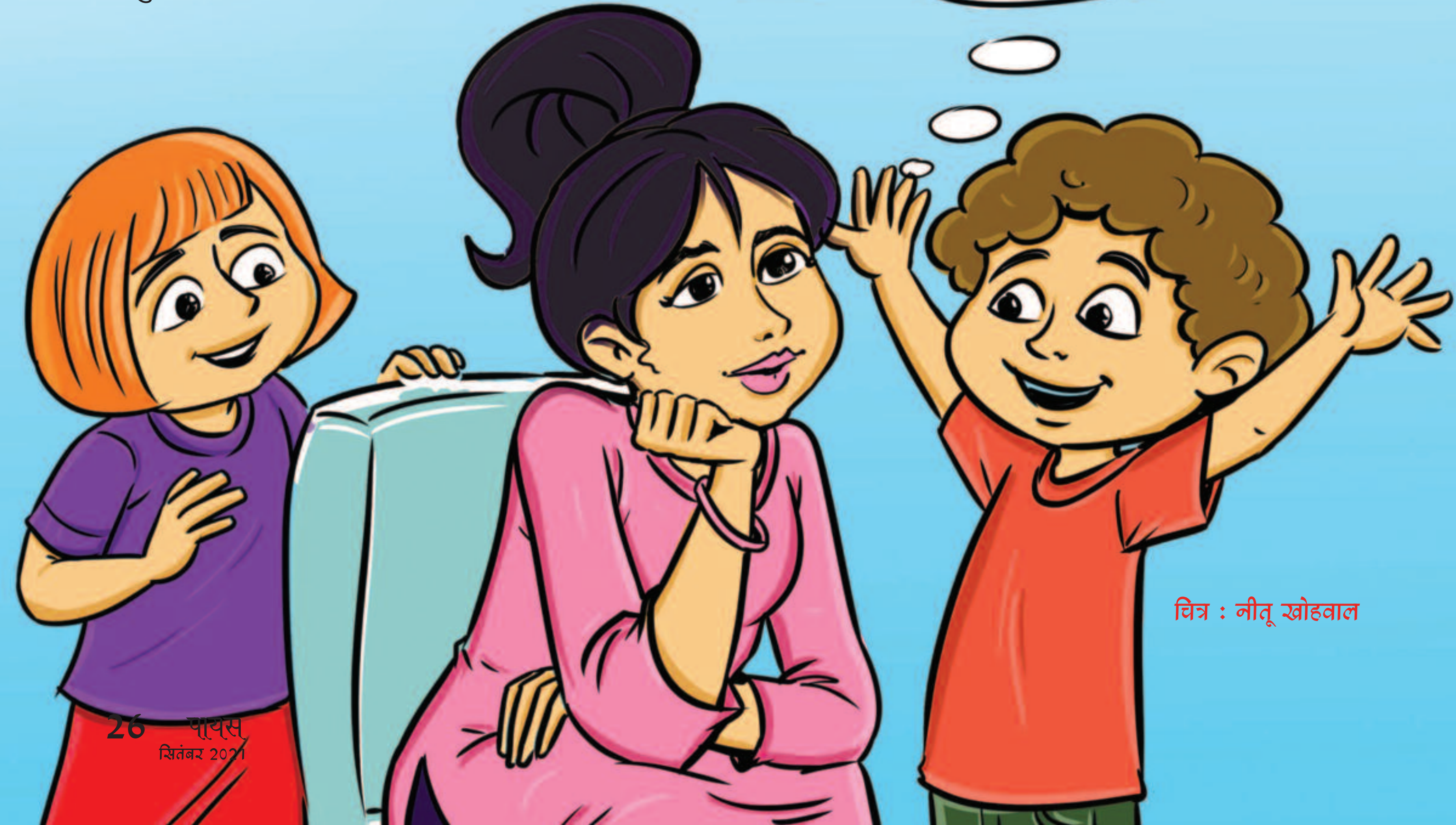

चित्र : नीतू ख़ोहवाल

रहा था, बोला, “और बुआ, मैं ?”

बुआ ने नाराज होने का नाटक करते हुए कहा, “मेरे लिए स्कूटी मेरे पापा दिला रहे हैं। तुम्हारे लिए साइकिल तुम्हारे पापा दिलाएंगे। मैंने क्या सबका ठेका ले रखा है ? और तुम तो वैसे भी मेरी कोई बात नहीं सुनते। जब मैंने सुबह कहा था कि मेरे बालों में तेल डाल दो, तो तुमने कहा था, मट्टी डालूंगा। अब मट्टी ही डालो, बेटा!”

इतना सुनते ही नाजिम का चेहरा उतर गया और वह मुंह लटकाए अपनी गाय सिया के पास बैठकर उसको घास खिलाने लगा।

सबसे बड़ी आलिया, उससे छोटी कम्मो और कम्मो से छोटा नाजिम प्राथमिक पाठशाला में पढ़ते थे। सोना आंगनवाड़ी में जाती थी और नायरा अभी घर में ही खेलती थी।

कम्मो और आलिया सपने में जहां बुआ को स्कूटी से कॉलेज जाते देख रही थीं, वहीं खुद को साइकिल चलाकर स्कूल जाते हुए भी देख रही थीं। आलिया बोली, “कम्मो, एक दिन मैं साइकिल चलाया करूंगी, तुम पीछे बैठा करोगी और एक दिन तुम साइकिल चलाना, मैं पीछे बैठा करूंगी।”

यह सुनकर कम्मो ने कहा, “नहीं, मैं तो रोज साइकिल चलाया करूंगी।”

यह बात आलिया की समझ से एकदम परे थी। उसने पूछा, “जब रोज तुम ही साइकिल चलाओगी, तो मैं कब चलाऊंगी ?”

कम्मो ने समझाया, “जब स्कूल जाएंगे, तो एक जना चलाएगा। जब स्कूल से लौटकर आएंगे, तो दूसरा जना चलाएगा।”

“मतलब हम दोनों ही रोज साइकिल चलाएंगे। तुम मुझसे छोटी जरूर हो, लेकिन हो मुझसे ज्यादा होशियार। अभी तक तो सब लोग कहते थे, पर आज मैंने भी मान लिया। अब यह भी बता दो बहना कि सुबह कौन चलाएगा और छुट्टी के समय कौन चलाएगा ?”

यह सुनकर कम्मो हंसने लगी। उसने कोई जवाब नहीं दिया।

इसका जवाब दिया बुआ ने, “जो पहले तैयार हो जाएगा, वही पहले चलाएगा।”

छोटी वाली दोनों भतीजियां अपने अलग ही सपने सजा रही थीं, “जब हम जल्दी से बड़े हो जाएंगे, तो हमारे लिए भी बुआ नई साइकिल लाएंगी। फिर हम भी साइकिल से स्कूल जाएंगे। जैसे कम्मो और आलिया चलाएंगी, वैसे ही हम भी चलाएंगे।”

अब, नाजिम जो बहुत देर से यह

सब सुन-सुनकर खिसिया रहा था, बोला, “मैं तो पैदल ही जाऊंगा। बुआ तो मुझे साइकिल लाकर देगी नहीं और मुझे पता है कि पापा भी नहीं लाकर देंगे। मैं तो पैदल ही चला जाऊंगा। पैदल क्या कोई स्कूल नहीं जाता है ?”

यह सुनकर दादी ने कहा, “कोई बात नाय, लल्ला! हम तुमैं साइकिल दिलावंगे।”

“तुम कहां से दिलाओगी ? मुझे पता है। तुम भी मुझे साइकिल नहीं दिला पाओगी।” नाजिम ने झट से जवाब दिया और अपनी बात जारी रखते हुए बोला, “बुआ तो लड़की हैं ना, इसलिए वह लड़कियों का ही ध्यान रखती हैं। मैं लड़का हूं, इसलिए वह मुझे साइकिल नहीं दिला रही हैं। मैं उनकी बात मान लूंगा, उनकी स्कूटी पर मट्टी नहीं डालूंगा, उनके बालों में तेल डालूंगा, तब भी वे मुझे साइकिल नहीं दिलाएंगी।”

सब लोग उसकी बातों को सुन-सुनकर मन ही मन खुश हो रहे थे और वह बोले जा रहा था, “मैं तो अपनी साइकिल खुद भी ला सकता हूं। मैं स्कूल के बाद काम पर चला जाऊंगा। काम करने पर जो पैसे मिलेंगे, उन्हें इकट्ठा कर लूंगा और फिर अपनी साइकिल ले आऊंगा। कोई मत दिलाओ मुझे। मैं क्या साइकिल नहीं ला सकता ?”

इतना सुनने पर कम्मो हाथ नचाते हुए बोली, “पगलू, काहे ज्यादा पों-पों कर रहे हो। हमारी चला लेना, कभी-कभी। बाद में तुम्हारे लिए भी बुआ ही तो लाकर देंगी। घर का तो कोई काम किया नहीं जाता। बड़े आए काम पर जाने वाले।” ✪

अपने लेखक को जानिए

रावेंद्रकुमार रवि : गणित शिक्षक। 1983 से निरंतर लेखन में सक्रिय। यूनिसेफ, एकलव्य व नेशनल बुक ट्रस्ट से पुस्तकें प्रकाशित। राष्ट्रपति द्वारा स्वर्ण पदक प्राप्त। हरिकृष्ण देवसरे बालसाहित्य पुरस्कार से सम्मानित। मासिक ‘बालसाहित्य की धरती’ का संपादन।

साइबेरियन क्रेन के बहाने

दुनिया में पक्षी उन कुछ प्राणियों में से एक हैं, जो किसी को जान-बूझकर हानि नहीं पहुंचाते। ये चुपचाप अपना जीवन गुजारने में विश्वास रखते हैं। इन्हें इनके हिस्से का खाना मिल जाए, तो ये अपने में मगन रहते हैं।

कमाल की बात यह है कि पक्षी अपना भोजन ढूंढ़ने खेतों और अन्य मैदानों पर जाते हैं। अपने इलाके का मौसम खराब होने पर जिंदा रहने के लिए अन्य देशों का रुख करते हैं। पर बदले में उन्हें क्या मिलता है? प्यार दिखाने के बदले मनुष्य उनका भोजन तो छीन ही लेते हैं, साथ ही उनका शिकार करके उन्हें खाने लगते हैं।

इस बर्बरता को सबसे ज्यादा सहा है साइबेरियन क्रेन ने। दुनिया में सारस परिवार का यह सबसे बड़ा पक्षी अपने मूल ठिकाने साइबेरिया की ठंड से बचने के लिए एशिया का रुख करने लगे। वहां के क्रेन दो हिस्सों में बंट जाते थे। पूर्वी साइबेरिया के क्रेन सर्दियों में चीन

जहांगीर के समय में भारत में बनी पेंटिंग

का रुख करती थीं, तो पूर्वी हिस्से के क्रेनों का मूल ठिकाना ईरान, भारत से लेकर नेपाल तक था। यहां उन्हें खाने कमी नहीं होती थी। दुनिया में सारस की कुल आठ ही प्रजातियां हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि इन आठ में से चार प्रजातियां भारत में हैं। उत्तर प्रदेश का राजकीय पक्षी भी सारस ही है।

तो अपने भाई-बंधुओं से निलने के लिए हरियाणा के भरतपुर के दलदली इलाकों में जहां आज केवलादेव पक्षी अभयारण्य हैं, आज से 500 साल पहले भी साइबेरियन क्रेन सर्दियों में आते थे।

पर मनुष्यों की बर्बरता इन्हें भाई नहीं। इनका शिकार होने लगा। हालत यह होने लगी कि 1967 में जहां 200 साइबेरियन क्रेन भारत

का रुख करते थे, वहीं सन 2001 में यह संख्या दो रह गई। 2002 से इन्हें भारत में देखने के लिए आंखें तरस गई हैं।

पर साइबेरियन क्रेन सर्दियों में अब भी प्रवास पर निकलती हैं, पर अब इनका पसंदीदा ठिकाना चीन का पोयांग लेक है। हर साल इस लेक में रूस, मंगोलिया, आदि से 70000 पक्षी अपना ठिकाना बनाते हैं। यह लेक पक्षियों के इसलिए भी पसंद है कि ताजे और मीठे पानी का यह चीन में सबसे बड़ा लेक है।

इस लेक के दक्षिणी भाग में वुक्सिंग फार्म हाउस हैं जहां के बहुत बड़े हिस्से में 2012 से कमल के फूल की खेती की जाती हैं। अब इसमें खास बात क्या हुई? इसमें खास बात यह है कि दुनिया में अब केवल साढ़े तीन हजार के आसपास साइबेरियन क्रेन बचे हैं और इसके एक तिहाई हिस्सा सर्दियों में अपना समय इसी फार्म हाउस पर बिताते आते हैं।

शुरु में यह किसानों को अच्छा लगा। उन्होंने साइबेरियन क्रेन का स्वागत किया। अब साइबेरियन क्रेन का पसंदीदा भोजन है कमल की डंडियां और जड़। वे आराम से अपना भोजन करते। पर किसानों के लिए मुसीबत हो गई। उनकी कमल के फूलों की खेती चौपट होने लगी।

पर उन्होंने उनका शिकार नहीं किया। 2017 में उन्होंने अपनी फसल बदल दी। कमल के फूल की खेती के बदले वे धान के खेती करने लगे। इसका असर यह हुआ कि पसंदीदा भोजन न मिलने से साइबेरियन क्रेन यहां आने से कतराने लगे।

यह तो ठीक नहीं था। ऐसे में एक पक्षी प्रेमी जोऊ ह्यान ने एक आंदोलन चलाया। हजारों लोग उनसे जुड़े और चंदा दिया। पता है किसलिए? इसलिए ताकि ये सुंदर साइबेरियन क्रेन इस जगह को छोड़कर जाएं नहीं।

इस धन से इन पक्षी प्रेमियों ने इन किसानों से उनके कमल की खेती को किराए पर लिया। उन्होंने वहां फिर से कमल के फूल की खेती करवाई। जब तक ये फूल खाने लायक न हो गए, बाहर से खरीदकर कमल की डंडियों और जड़ों को लेक में डलवाया ताकि साइबेरियन क्रेन को खाने की कमी न हो और वे इस इलाके को उसी तरह छोड़कर न जाएं, जैसे भारत को छोड़ा था।

उन सब पक्षी प्रेमियों की मेहनत रंग लाई और साइबेरियन क्रेन ने इस लेक का साथ नहीं छोड़ा। उनके साथ हजारों अन्य पक्षी भी आते हैं और मेहमान नवाजी का आनंद उठाते हैं।

जब पुतिन बने मशीनी पक्षी

2012 में रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन ने एक अनोखा काम किया था। सर्दियों में साइबेरिया के पूर्वी इलाके के क्रेन का ईरान और भारत जाने की चेन टूट गई थी क्योंकि इस रूट को जानने वाले क्रेनों का शिकार हो गया था।

तब एक ग्लाइडर के सहारे मशानी क्रेन बनकर पुतिन ने साइबेरियन क्रेन की नई पौध को ईरान और भारत के रूट पर डालने की कोशिश की थी। पर दुर्भाग्यवश केवल एक क्रेन उन्हें असली समझकर उनके पीछे चला था।

पुतिन अपने प्रयास में असफल रहे, लोगों ने उनका मजाक उड़ाया। पर उनका यह प्रयास यह जताता है कि पक्षियों का ऐसे ही मानवीय प्यार की जरूरत है न कि शिकार की।

दूरबीन का कमाल

रुचि मैडम के साथ आए बच्चे एक-एक कर बस से उतरे। पर्यटक आवास गृह में पहले से ही बच्चों के लिए नाश्ता तैयार था। नाश्ते के बाद उनकी मुलाकात डैम के सुरक्षा अधिकारी शर्मा जी से हुई। शर्मा जी ने कहा, "मैडम, अब आप और सभी बच्चे गाइड के साथ यहां से डैम तक पैदल ही जाएंगे। रास्ते में तरह-तरह के पक्षी और वनस्पतियां तो देखने को मिलेंगी।"

गुनगुनी धूप में कुछ दूर तक चलने के बाद डैम की झील नजर आने लगी। सैकड़ों पंछी पानी में तैरते और गोते लगाते दिखे। वे इधर से उधर उड़ भी रहे थे। पक्षियों के कई झुंड सड़क के दोनों तरफ पेड़ों, झाड़ियों में बैठे चहचहा रहे थे। अलग-अलग रंग-रूप वाले परिंदे बहुत सुंदर लग रहे थे।

गाइड ने बताया, "बच्चो, ये मेहमान पक्षी हैं। ये एक देश से दूसरे देश और एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में जाकर प्रवास करते हैं। इसलिए इन्हें प्रवासी पक्षी भी कहा जाता है। हजारों किलोमीटर दूर रूस, साइबेरिया, स्वीडन, कनाडा, अमेरिका, यूरोपीय देशों से भारत की नदियों, जलाशयों और सरोवरों के आसपास ऐसे पक्षी प्रति वर्ष आते हैं।

यह सुनते ही नवनीत ने पूछा, "मैडम, इतनी दूर से इन परिंदों के यहां तक आने का खास कारण?

"जाड़ों में कई देशों में बहुत बर्फ गिरती है। कड़ाके की सर्दी से पक्षियों को बचना पड़ता है। ठंड से झीलों, तालाबों का पानी जम जाता है। इन पक्षियों का आहार कीट-पतंगे, छोटी मछलियां और वनस्पतियां होती हैं, जो बर्फ के नीचे दब जाती हैं। हमारे देश में इन्हें अनुकूल मौसम और पर्याप्त भोजन मिल जाता है। इसलिए ये पक्षी भारत जैसे गरम देशों का रूख करते हैं।" मैडम ने बच्चों को बताया।

यह सुनकर गाइड ने भी एक बात बताई, "मीलों दूर से आने वाले इन प्रवासी पक्षियों के उड़ने की रफ्तार जितनी तेज होती है, उतना ही तेज इनका दिमाग भी चलता है। ये हर साल उसी स्थान पर आते हैं, जहां ये पिछले साल आए थे।"

"अंकल! इन्हें इतने लंबे रास्ते का पता कैसे चलता है?" मीरा ने गाइड से सवाल किया।

गाइड ने जवाब दिया,"ये पक्षी जानते हैं कि उन्हें किस दिशा में जाना है। इन्हें अपनी यात्रा शुरू करने से लेकर अपने घर लौटने तक सभी बातों का ध्यान रहता है। भारत में ये मेहमान पक्षी प्रतिवर्ष सितंबर में पहुंचने शुरू होते हैं और मार्च में वापस लौटने लगते हैं।"

ज्योति ने किनारे में तैर रहे कुछ पक्षियों की ओर देखते हुए पूछा, "भैया, जरा इनके बारे में भी बताइये।"

गाइड इशारा कर बताने लगा- "जो भूरे और बादामी रंग की बतखें तैर रही हैं, यह यूरेशियन विगेन हैं, जो यूरेशिया में पाई जाती हैं।"

इसके बाद पेड़ों पर चहचहाती हुई छोटी चिड़ियों का झुंड दिखा। गाइड ने बताया कि इतनी छोटी चिड़ियों का दल अलास्का से भारत तक पहुंचता है। जिसके गले का रंग नीला है, उसे ब्लू थ्रोट और लाल रंग के गर्दन वाली को रूबी थ्रोट के नाम से जाना जाता है।"

जब बच्चों ने पानी के किनारे लाल चोंच और लंबे पैर वाले बड़े-बड़े पक्षियों को अचरज भरी नजरों से देखा। तब गाइड ने कहा, "हंस प्रजाति का यह सब से बड़ा पक्षी ग्रेटर फलेमिंगो हैं। यह एक पैर पर घंटो तक खड़ा रहता है।"

बहुत देर तक घूमने के बाद कुछ बच्चे नौका विहार करने लगे। अन्य बच्चे अपनी बारी का इंतजार करने लगे। नवनीत अपने पापा से दूरबीन मांग कर साथ लाया था। दूरबीन से दूर के दृश्य बहुत निकट और स्पष्ट दिख रहे थे। देखते-देखते उसकी निगाह डैम के दूसरे छोर पर जाकर ठहर गई।

नवनीत ने देखा कि एक आदमी सूखे पत्तों के दोने बना रहा था। दूसरा व्यक्ति उस दोने में मरे हुए कीट-पंतगों और छोटी मछलियों को एक

अपने लेखक को जानिए

भगवत प्रसाद पाण्डेय : प्रकृति, संस्कृति और परंपराओं से खास लगाव। उत्तराखण्ड सरकार के राजस्व विभाग में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी। विगत 35 वर्ष से लेखन। बाल साहित्य के साथ ही विभिन्न आलेख, कहानी, व्यंग्य और कविताएं प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

घोल में भिगाकर दोने को पानी में तैरा रहा था। तैरते-तैरते एक पक्षी दोने में रखे भोजन को खाने लगा। वह पक्षी दिखने में बहुत प्यारा था। इसलिए नवनीत उसकी सुंदरता पर मुग्ध होकर उसे अपनी दूरबीन से निहारता ही रह गया।

लेकिन तभी न जाने क्या हुआ? अपनी लंबी गर्दन एक तरफ लटकाते हुए वह खूबसूरत पक्षी बेहोश होता हुआ दिखा और बेहोशी में बहते-बहते किनारे से जा टकराया। दूसरे आदमी ने पहले इधर-उधर देखा, फिर उस अचेत पक्षी को बोरे डाल कर झाड़ियों की ओट में छिपा दिया।

नवनीत को शक हुआ कि उस घोल में जहर मिलाया गया होगा और जहर मिले भोजन को खाने से वह पक्षी बेहोश हुआ। उसे अवैध शिकार की आशंका होने लगी। उसने यह बात मैडम को बताई। मैडम ने नवनीत से दूरबीन लेकर खुद उस तरफ देखा। वे दोनों व्यक्ति फिर किसी अन्य पक्षी को अपना शिकार बनाने के लिए जहरीले चारे के दोने तैराने लगे। रुचि मैडम ने तुरंत शर्मा जी से फोन पर बात की और बच्चों के साथ स्वंय शिकारियों की तरफ तेज कदमों से बढ़ने लगीं।

बच्चों का दल अपनी ओर आता देख दोनों शिकारी सतर्क हो गए। इससे पहले कि बच्चों की टोली उस जगह तक पहुंचकर उन्हें घेरतीं, वे दोनों व्यक्ति झाड़ियों में गुम हो गए। कुछ ही देर में शर्मा जी अपने सहयोगियों के साथ दौड़ते हुए वहां आ गए। अब सब लोग मिलकर उन्हें तलाशने लगे।

नवनीत एक बार फिर अपनी दूरबीन से दूर-दूर तक उन दोनों व्यक्त्यिों को तलाशने लगा। अचानक उसके पैर में कुछ टकराया। देखा तो एक टहनी थी। उसके आसपास टहनियों का छोटा सा ढेर। ऊपर कुछ घास-फूस और सूखी बेलें पड़ी थीं।

नवनीत सारी बात समझ गया। उसने कुछ ही कदमों के फासले पर खड़े शर्मा जी और उनके साथियों को सिर्फ इशारा कर अपने पास बुलाया। घास-फूस का ढेर हटवाते ही उससे नीचे एक गड्ढा दिखा। इसी में वे दोनों शिकारी दुबके थे। इस तरह उन दोनों शिकारियों को बोरे में छिपाए बेहोश पक्षियों सहित रंगे हाथ पकड़ लिया गया।

शर्मा जी खुश होकर मैडम से बोले, "ये पक्षी बहुत चतुर-चालाक होते हैं। जीते जी ये मनुष्य के हाथ नहीं आते हैं। इसलिए शिकारी इन्हें धोखे से मारने के लिए नए-नए तरीके ढूंढ़ते रहते हैं। इस बच्चे की दूरबीन के कमाल और चतुराई से ये दोनों चिड़ीमार पकड़ में आ गए।"

"शाबास बेटे, हमें तुम पर गर्व है।" शर्मा जी ने एक हाथ से नवनीत की पीठ थपथपाई और दूसरे हाथ से उसे एक हजार रुपए नकद पुरस्कार के रूप में दिए। ✪

नारियल पानी

अपने लेखक को जानिए

गौरीशंकर वैश्य विनम्र :

शिक्षा : एम एससी, बी एड.। प्रकाशित : तीन खंडकाव्य, छह बाल कविता की पुस्तकें। देश की पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। आकाशवाणी लखनऊ से बाल कविताओं का प्रसारण, अनेक संस्थाओं से सम्मानित, उ.प्र हिंदी संस्थान लखनऊ से सोहनलाल द्विवेदी बाल कविता सम्मान प्राप्त। संप्रति : डाक विभाग से सेवानिवृत्त अधिकारी, अब स्वतंत्र लेखन।

कंद नारियल में है पानी।
सचमुच कितनी अजब कहानी।

अभी है कच्चा, रंग हरा है,
इसके अंदर तरल भरा है,
कहीं न दिखता कोई छेद है,
पानी वाला बड़ा भेद है,

मेरा तो दिमाग चकराए
याद आ रही मुझको नानी।

बेच रहा है फल विक्रेता,
नारियल काट-काट कर देता,
मीठा स्वाद लिया है मैंने,
नलिका डाल पिया है मैंने,

गर्मी में ठंडक पहुँचाए
करता स्वस्थ, दूधिया पानी।

मुझको बाबा ने समझाया,
ऊतक भ्रूणपोष कहलाया,
तरल रूप में बीज के अंदर,
पौधे का यह भोजन सुंदर,

नरम मलाईदार तरल है
बात पते की मैंने मानी।
सचमुच कितनी अजब कहानी।

अपने लेखक को जानिए

शादाब आलम : बालसाहित्य की लगभग सभी विधाओं के साथ मुख्य रूप से बाल कविता एवं बाल गीत लेखन। हंसी का चूरन (बालकाव्य संग्रह) लोकोदय प्रकाशन से प्रकाशित।

धम्मक-धुम्मक-धुम

चील! चील! चील!
तुमसे एक अपील
वो जो सबसे दूर
आसमान का नूर
लाल-हरा है रंग
चाहूँ वही पतंग।
धम्मक-धुम्मक-धुम
ला दो उसको तुम।

झील! झील! झील
तुमसे एक अपील।
फुदक रहे हैं पैर
मन करता लूँ तैर
डुबकी मारूँ ख़ूब
सिर तक जाऊँ डूब
धम्मक-धुम्मक-धुम
भरो लबालब तुम।

कील! कील! कील!
तुमसे एक अपील
दूर बहुत इस्कूल
पीठ गई है झूल
बस्ता दिया उतार
टांगो इसको यार
धम्मक-धुम्मक-धुम
गड़ो हवा में तुम।

लाड़ला शीशा

चित्र : सुशील दोषी

राधे अपनी पत्नी और बेटे नीलू के साथ मां से मिलने कोलकाता आया हुआ था। मां, बाप-दादा की बनाई कोठी में रहती थी। कोठी अंदर से वह शीशमहल से कम न थी। चारों तरफ बेलबूटेदार छोटे-बड़े शीशे लगे हुए थे। दादी का बच्चों को सख्त आदेश था कि उन्हें न ही छुएं, न ही उनके पास जाएं।

खिलंदड़ नीलू इस नियम से परेशान हो उठा। कोठी के किसी भी कोने में वह गेंद से नहीं खेल सकता था। जैसे ही गेंद हाथ में लेता, दो आंखें उसका पीछा करती और दादी का स्वर सुनाई देता, "ओ नीलू, जरा बाहर जाकर खेल। तेरी गेंद से शीशा जरूर टूटेगा।"

एक दिन अकेले में नीलू ने शीशे से पूछा, "मेरे छूने से क्या तुम मैले हो जाओगे? जब देखो दादी टोकती रहती हैं। तुम्हारे सामने तो मैं खड़ा भी नहीं हो सकता।"

शीशा उसे समझाते हुए बोला, "दोस्त, जन्म के समय मैं और मेरे भाई-बहन कमजोर ही पैदा हुए। जरा से धक्के से बीमार हो जाते थे और फिर टूट जाते थे। इसलिए हमारा बहुत ध्यान रखा जाता। दादी भी इसीलिए तुम्हें हाथ लगाने को मना करती हैं कि कहीं तुम मुझे तोड़ न दो। वे मुझे इतना प्यार करती हैं कि अपने हाथ से मेरे ऊपर जमी मिट्टी साफ करती हैं। गीले मुलायम कपड़े से मेरा मुंह पोंछती हैं। मानो मैं छोटा सा बच्चा हूं। मजाल है कोई नौकर मुझे हाथ तो लगा दे।"

"हूं, लगता है ज्यादा लाड़-प्यार ने तुम्हें बिगाड़ दिया है। वैसे तुम हो कितने बरस के?"

"करीब 70 साल का तो होऊंगा।"

"हो-हो, फिर तो तुम बुढ़ऊ हो गए। अब समझा, तुम्हारी चमक कम क्यों होती जा रही है। रे-रे– शरीर पर छोटे-छोटे काले दाग भी पड़ गए हैं।"

"तौबा रे तौबा! क्या कह रहे हो! ऐसी बात दादी के सामने न कह देना। कोठी से तुम्हें निकाल देंगी।"

"ओह! तो तुमने दादी को पूरी तरह अपनी मुट्ठी में कर रखा है। ये तुम्हारी तानाशाही नहीं चलेगी। तुम्हारे सामने ही तुम्हें चिढ़ा-चिढ़ाकर गेंद खेलूंगा। यहां जब से आया हूं प्यारी गेंद को छुआ तक नहीं। दादी तो मुझे भी प्यार करती हैं। देखना, मेरा ही पक्ष लेंगी।"

"तो ठीक है, मुझे बदलने की बात एक बार कहकर तो देखो। न सजा मिले तो कहना।"

नीलू को एक दिन गेंद खेलने का मौका मिल ही गया। दादी पूजा घर में जोर-जोर से घंटी बजाती हुई भजन गा रही थीं। नीलू का दिमाग तेजी से काम करने लगा, 'आह! इस शोर में गेंद को जोर-जोर से जमीन पर पटकूंगा, तो भी उसकी भनक दादी के कानों में पड़ने से रही।'

अब तो गेंद हवा में बल खाती हुई जमीन पर फुदकने लगी।

अचानक धड़ाक-धड़ाक, मानो बम फूटा हो।

"अरे क्या हुआ?" दादी जोर से चिल्लाईं और पूजा अधूरी छोड़ दौड़ी आईं। उनका प्यारा शीशा जमीन पर गिरकर चकनाचूर हो गया था। उसे देख दुख से बौरा गईं। जोर से चीखीं, "अरे राधे कहां गया?"

मां की आवाज सुन, बेटा भी घबरा गया। नाश्ता छोड़ भागता आया। टूटे-बिखरे शीशे को देखकर वह भी सहम गया। जानता था, मां को वह जान से भी ज्यादा प्यारा है।

"गजब हो गया रे राधे। यह किसने करा रे? इस शीशे में तो तेरे बाप की आत्मा बसी थी। 10 साल पहले उन्होंने शरीर जरूर छोड़ दिया पर आत्मा तो इसी घर में थी। आज तो वह भी उड़ गई। इसका नतीजा बहुत बुरा होगा। शीशा टूटा है, अब घर टूटेगा, दिल टूटेगा और क्या मालूम किसी के हाथ-पैर भी टूटें।"

"यह तुमसे किसने कहा मां?"

"कोई क्या कहेगा, मैं तो हमेशा से यही सुनती आ रही हूं। सात साल से पहले बदनसीबी पीछा न छोड़ेगी।" मां ने गहरी सांस ली।

नीलू को देखते ही पागलों की तरह ठाकुर मां उसके कंधों को झंझोड़ती बोलीं, "जरूर इस दुष्ट की कारस्तानी होगी। कितनी बार कहा है जहां-जहां शीशे लगे हैं वहां गेंद से न खेला कर। मगर चिकना घड़ा है एकदम चिकना। कोई असर हो, तब ना। देख लिया तूने गेंद खेलने का नतीजा।"

"मां इतना परेशान क्यों होती हो? मैं एक के बदले दो ला दूंगा। अब तो बहुत सुंदर-सुंदर शीशे बनने लगे हैं।" राधे ने मां को सांत्वना देने की कोशिश की।

"लाने से क्या होगा। शीशा तो टूट ही गया। कुछ न कुछ किसी का नुकसान जरूर होगा।"

"फिर वही बात, मैंने कहा न, कुछ नहीं होगा। पहले जमाने में शीशे की किस्म अच्छी न होने से बड़े नाजुक थे। इसके अलावा महंगे भी बहुत थे। जरा टूटे, तो नुकसान ही नुकसान। बाबा जैसे शौकीन तबियत वाले ही शीशे घर में लगा सकते थे।"

पापा को देख नीलू में हिम्मत आई और धीरे से बोला, "दादी शीशा भी मुझसे कुछ इसी तरह की बातें कर रहा था।"

"तू तो चुप ही रह। बड़ा अक्लमंद बनता है।"

"कुछ भी कह राधे, तेरे बापू तो इस शीशे पर बड़े रीझे हुए थे। लगता था उनकी आत्मा उसी में है।"

"उन्हें शीशा बहुत अच्छा लगता था इसीलिए मां ऐसा कहती हो। तुम भी तो नीलू को बहुत प्यार करती हो। तुम्हें कई बार कहते सुना है, नीलू में तो मेरी जान बसी है। मुझे तो लगता है तुम्हारी आत्मा भी उसी में बस गई है।" बेटा हलके से मुसकरा दिया।

"सच में प्यार तो उसे बहुत करूं हूं। मैंने गुस्से में न जाने क्या-क्या कह दिया। नाहक बच्चे को कोसकर जी दुखाया। आ बेटा,मेरे पास आ।"

नीलू झट से दादी के आंचल में जा छिपा। उसके सिर पर स्नेहभरा हाथ फेरते हुए बोली, "कोई बात नहीं बेटा! शीशा टूट गया तो टूट जाने दे। तेरा पापा दूसरा लगवा देगा।"

"दादी तुमने मुझे माफ कर दिया?"

"माफी किस बात की? गलती तो मेरी भी थी। अंधे की तरह बेकार की बातों पर विश्वास कर रही थी।"

दादी की टोकाटोकी खतम हो गई थी पर नीलू स्वयं सावधान रहने लगा। वह दूसरा शीशा तोड़कर दादी का जी नहीं दुखाना चाहता था। ✪

रचनाकार को जानिए

सुधा भार्गव : इन्हें बच्चे शुरू से ही बहुत अच्छे लगते हैं। हमेशा महसूस किया कि उनके संसर्ग में स्वर्ग सा आनंद है। बिरला हाई स्कूल कलकत्ता में 22 वर्षों तक हिंदी भाषा का शिक्षण कार्य किया। पेंटिंग, योगा, अभिनय, कविता पाठ में अभिरुचि। बालकथा की कई पुस्तकों के साथ एक बाल उपन्यास भी आ चुका है। अब किंडल पर किताबें आ रही हैं।

अपने लेखक को जानिए

इंद्रजीत कौशिक : पिछले 40 वर्षों से बाल साहित्य के क्षेत्र में रचना कर्म। अब तक केवल एक ही पुस्तक प्रकाशित हुई मूछों वाले मामा जी के नाम से जिस पर राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा बाल साहित्य का शंभू दयाल सक्सेना पुरस्कार मिला। देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशन।

संप्रति : भारतीय स्टेट बैंक में कार्यरत

गुरु की महिमा

गुरु की महिमा अपरंपार
कर दें सब का बेड़ा पार,
चरणों में नित्य शीश नवाऊं
पा जाऊं जीवन का सार।

गुरु के जैसा कोई न दूजा
सारे जग का खेवनहार,
कदम-कदम पर राह दिखाकर
हम पर कर देते उपकार।

अंधकार जीवन का हर कर
खुशियों से झोली भर देते,
राहों से कांटे बुहार कर
निष्कंटक हर पथ कर देते।

ज्ञान का सूरज उतर धरा पर
गुरु के रूप में आया है,
जीवन अपना सफल बना लो
यह संदेशा लाया है।

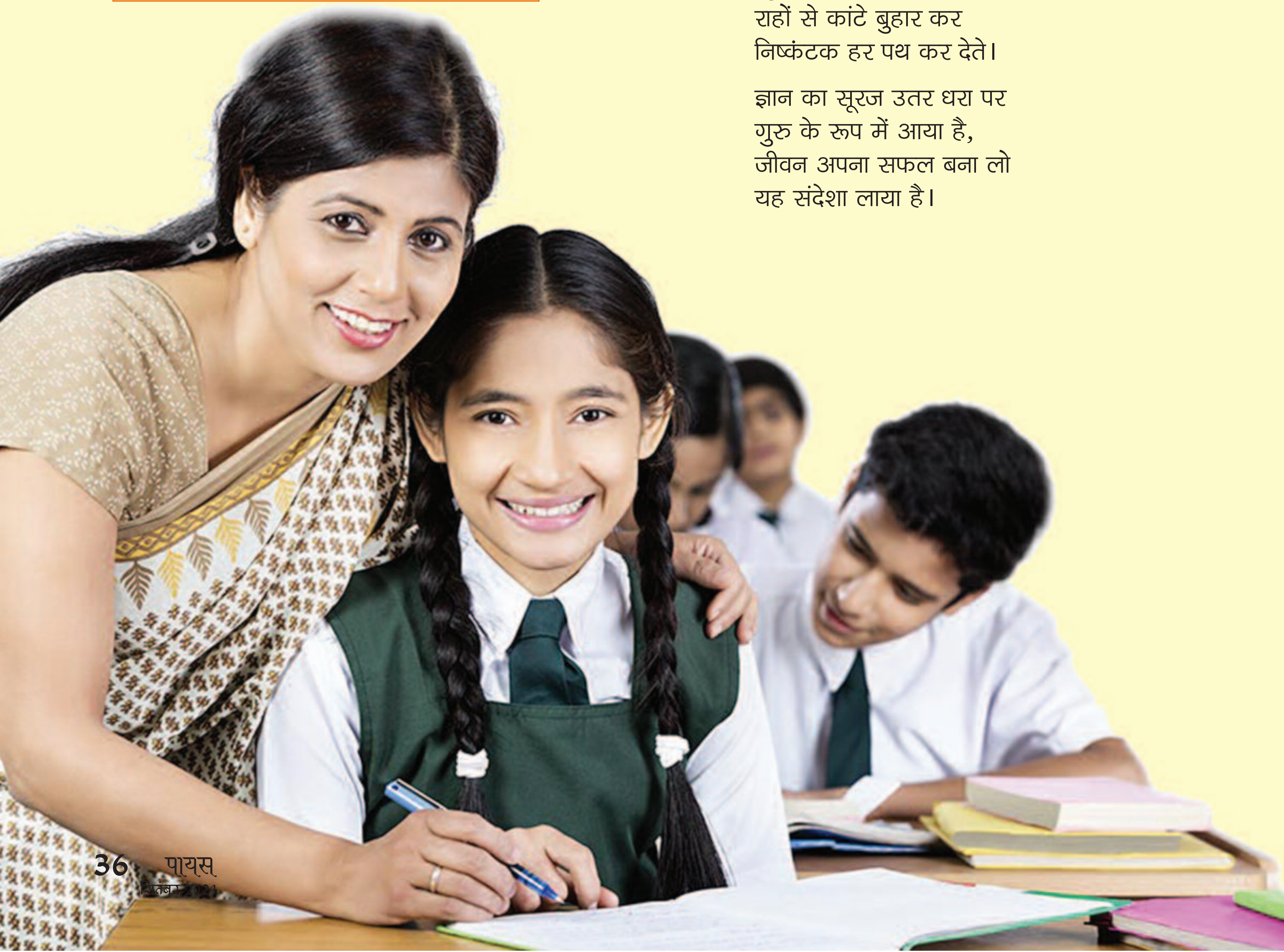

हिंदी वाली मैडम

अपने लेखक को जानिए

तरुण कुमार दाधीच : पिछले तीन दशक से साहित्य के क्षेत्र से जुड़ाव। बाल साहित्य पर सात एवं हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में भी अब तक सात पुस्तकें प्रकाशित राज्य सरकार द्वारा श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में 2009 में सम्मानित।

कृतिका मैडम की रामपुरा स्कूल में नई नियुक्ति हुई। वह आठवीं कक्षा में हिंदी पढ़ाती थीं। पाठ पढ़ाने के बाद वह छात्र-छात्राओं को गृह कार्य देतीं और सप्ताह में एक बार कापियां जांचती थीं। कापियां जांचने के दौरान मैडम अशुद्धियों पर लाल पेन से गोले बना देतीं। लेकिन वह चाहती थी कि विद्यार्थी हिंदी में व्याकरण संबंधी और अन्य प्रकार की अशुद्धियां नहीं करें। इसके लिए मैडम को एक योजना सूझी। उन्होंने विद्यार्थियों से अशुद्धियां सुधरवाने का तय किया।

"देखो बच्चो, कुछ को छोड़कर ज्यादातर छात्र-छात्राओं के हिंदी में व्याकरण संबंधी अशुद्धियां आती हैं। यह अच्छी बात नहीं है। इस साल तुम्हारे आठवीं बोर्ड की परीक्षा है। अशुद्धियों के कारण यदि तुम्हें हिंदी में कम नंबर मिले, तो तुम्हारे परसेंटेज और डिवीजन पर असर पड़ेगा।" मैडम ने गंभीरता से कहा।

"इसके लिए हमें क्या करना होगा मैडम?" प्रणिका ने उठकर पूछा।

"जब मैं कापियां जांचती हूं तब अशुद्धियों पर गोले बना देती हूं। अब आप सभी को अपनी-अपनी कापियों में बने हुए गोलों के शब्दों को शुद्ध लिखना होगा।" मैडम ने कहा।

"पर हम अशुद्ध को शुद्ध कैसे लिखेंगे?" नीरज ने पूछा।

"तुम अपना गृह कार्य अपनी हिंदी की पुस्तक से करते हो। इसलिए सारे शुद्ध शब्द तुम्हें तुम्हारी पुस्तक में ही मिलेंगे। अशुद्ध शब्दों को आप लोगों को तीन-तीन बार लिखना है।" मैडम ने समझाते हुए कहा।

"तीन-तीन बार क्यों मैडम?" रमा ने उत्सुकता से पूछा।

"जब तुम सभी अशुद्ध शब्द को तीन बार शुद्ध लिख लोगे तो फिर उस शब्द को तुम अशुद्ध नहीं लिखोगे, समझे!" मैडम ने हंसते हुए कहा।

"जी मैडम।" आरवी ने कहा।

कक्षा के सभी विद्यार्थियों ने हाथ खड़े कर के ऐसा करने का विश्वास दिलाया।

"ऐसा नहीं कि तुम मेरी बात को इस कान से सुनो और उस कान से निकाल दो। जहां दिक्कत आए, मुझे पूछना। मैं बताऊंगी।" मैडम ने कहा।

"जी मैडम हम रोजाना यह कार्य करेंगे।" अन्मय ने कहा।

"सभी ध्यान रखना,मैं हर सप्ताह तुम्हारी कापियां देखूंगी।" मैडम ने कहा।

सभी विद्यार्थी नियमित रूप से गृह कार्य करने लगे। धीरे-धीरे उनकी कापियों में अशुद्धियां कम आने लगी। कृतिका मैडम की सूझबूझ का असर हुआ। उन्हें अब विश्वास होने लगा कि कुछ ही दिनों में सभी विद्यार्थी शुद्ध हिंदी लिखने लगेंगे।

कुछ दिनों बाद सभी विद्यार्थियों को भी इस बात की खुशी थी कि वे अब शुद्ध हिंदी लिखने लगे हैं। ✪

कीड़ों वाला कमरा

"वाउ! क्या शानदार रिजॉर्ट है!" टैक्सी से उतरते ही तान्या चहकी।

"सामने की पहाड़ी कितनी सुंदर लग रही है?" तान्या की मम्मी भी बोल पड़ीं।

टैक्सी वाले को पैसे चुकाकर पापा ने भी अपनी बात जोड़ी, "मौसम भी बहुत बढ़िया है। मुझे तो डर लग रहा था कि कहीं गरमी न हो।"

रात काफी वर्षा हुई थी। रिजॉर्ट के फैले हुए कैंपस में जगह-जगह पानी जमा हो गया था। पीछे के खेतों में भी काफी पानी जमा था।

रिसेप्शन पर अपनी बुकिंग कंफर्म कर पापा आ गए। रिजॉर्ट का एक स्टाफ कमरे की चाभी लेकर आया और सामान उठाकर कैंपस के दूसरे छोर पर बने कमरों की ओर जाने लगा।

"बढ़िया है! एकदम एकांत में है हमारा कमरा। मजा आएगा।" पापा ने कहा।

"लेकिन इधर तो चाय-वाय भी नहीं मिलेगी!" मम्मी बोलीं।

"मिल जाएगी। सब मिल जाएगी। फोन कर मंगा लेंगे।" पापा ने उन्हें आश्वस्त किया।

स्टाफ ने कमरा खोला। सभी अंदर गए। अंदर जाते ही तान्या की मम्मी चिल्ला पड़ीं, "ये क्या है?"

तब तक तान्या और उसके पापा ने भी देख लिया। दो-दो छिपकलियां बिछावन पर दौड़ लगा रही थीं। तीन-चार दीवारों पर भी कीड़ों के पीछे भाग रही थीं।

"क्या चक्कर है? इतना गंदा कमरा? तुम लोग सफाई नहीं करते हो क्या?" पापा ने स्टाफ से पूछा।

"करते हैं साहब! वो क्या है कि रात भर पानी गिरा है। बरसात में कीड़े आ ही जाते हैं। कीड़ों के पीछे छिपकलियां भी आ जाती हैं।" स्टाफ ने सफाई दी।

"ठीक है, ठीक है। पहले सफाई करो। बेड को दीवार से अलग करो।" पापा ने आदेश सा दिया।

लड़का कहीं से झाड़ू ले आया। सामान टेबल पर चढ़ाकर कमरे की सफाई करने लगा। पापा ने दिखा-दिखाकर कीड़ों और छिपकलियों को कमरे से बाहर करवाया। फिर भी कुछ कीड़े इधर-उधर छिपे रह ही गए। चादर बदलवाकर ही तीनों बिस्तर पर बैठे। चैन की सांस लेने के साथ ही मम्मी बोलीं, "काफी घटिया कमरा है!"

चित्र : नीतू खोहवाल

"क्या किया जा सकता है? नेट पर देखकर तो एकदम फाइव स्टार कमरा लग रहा था।" पापा को लगा कि मम्मी उन्हें ही दोष देना चाह रही हैं। अपने बचाव में उन्हें यह कहना जरूरी लगा।

"चलो, जल्दी-जल्दी तैयार हो जाओ। एक दिन की ही तो बात है। दिनभर तो हम घूमते ही रहेंगे। एक रात बितानी है, सुबह हम

भोपाल के लिए निकल पड़ेंगे।”

“भोपाल के रास्ते में ‘कर्क रेखा’ पड़ती है न पापा? उसे देखकर कितना मजा आएगा?” तान्या बोल पड़ी।

“कर्क रेखा दिखाई थोड़े ही देती है? वह तो काल्पनिक रेखा है!” पापा ने कहा।

“तान्या जाओ, ब्रश कर लो।” कहकर मम्मी चाय मंगवाने के लिए फोन की ओर बढ़ गईं।

“ये लो! फोन तो बस कहने को है। इससे तुम कहीं बात नहीं कर सकते!” मम्मी खीज गईं ।

“रुको! मैं आता हूं।” कहकर पापा रिसेप्शन पर चले गए। रिजॉर्ट के मैनेजर को खरी-खोटी सुनाई और पानी, चाय भेजने को कहकर वापस आए।

मन तो उनका भी भन्नाया हुआ था लेकिन क्या करते? दूसरा कोई रूम खाली भी नहीं है ।

चाय पीकर मम्मी-पापा का मन थोड़ा हलका हुआ। वे जल्दी-जल्दी तैयार होने लगे ।

“ये बाथरूम भी कम खराब नहीं है!” बाथरूम जाकर मम्मी बोलीं । “देखो, इतना बड़ा बाथिंग टब लगा रखा है। जगह ही नहीं है नहाने की। टब को भरकर कौन नहा पाएगा? टब भरने लगो, तो पता चलेगा पानी खत्म हो गया!”

“मम्मी टब में घुसकर बालटी से नहा लो न?” तान्या ने कहा।

“हां, टब में घुसकर बालटी से नहाओ! क्या मजाक है?” बोलकर मम्मी ने दरवाजा बंद कर लिया।

पापा भी नहाए। तैयार होकर सभी रिसेप्शन पर आए। मैनेजर को फिर खरी-खोटी सुनाई और रेस्तरां के बारे में पूछा । मैनेजर ने रेस्तरां का रास्ता बता दिया।

तीनों ने अपनी-अपनी पसंद का नाश्ता किया। नाश्ता बढ़िया था। इस नाश्ते ने सबका मूड बढ़िया कर दिया। तीनों उत्साह में आ गए।

“अब चलो सांची का स्तूप देखने।” तान्या ने कहा।

रिजॉर्ट वाले ने एक टैक्सी मंगवा दी। तीनों उसपर बैठ गए । स्तूप से कुछ दूर पहले टैक्सी वाले ने कहा, “टिकट यहीं लेना होगा साहब!”

पापा उतरकर टिकट ले आए। टैक्सी वाले ने स्तूप से थोड़ी ही दूर पहले उन्हें उतार दिया। तीनों स्तूप की ओर बढ़े। चारों तरफ हरी घास बिछी थी। रास्ता भी साफ-सुथरा था। स्तूप भी अपनी भव्यता में दिखाई दे रहा था।

“मजा आ गया! पापा एक फोटो!” तान्या ने कहा और कुछ दूरी पर पोज देकर खड़ी हो गई। दो-तीन फोटो खिंचवाकर उसने मम्मी-पापा का फोटो खींचा। फिर सब आगे बढ़े। चारों ओर इतिहास बिखरा पड़ा था। पापा तान्या को उसके बारे में बताते जा रहे थे। सम्राट अशोक, स्तूप, भगवान बुद्ध, बौद्ध धर्म, बौद्ध भिक्षु आदि की अनेक बातें उन्होंने बताईं। तान्या को कुछ याद रहा, कुछ बिसर गई।

“ये देखो, ये है स्तंभ! ये आधा ही है। इसका ऊपरी हिस्सा म्यूजियम में रखा है।”

“म्यूजियम कहां है पापा?”

“नीचे, जहां मैंने टिकट लिया था। यहां से लौटते हुए चलेंगे।”

तान्या ने पापा की बात सुन ली और मम्मी को कुछ इशारा करने लगी। मम्मी बोलीं, “पहले स्तूप पर तो चढ़ लें?”

स्तूप पर चढ़कर अलग-अलग कोण से फोटो खिंचवाकर जब तीनों नीचे उतरे, मम्मी ने कहा, “चलो थोड़ा बैठते हैं, चाय-वाय पीते हैं।”

पापा तो समझ ही गए थे, उन्होंने मजाक किया, “चलो, तान्या, तुम्हारे लिए तो कोल्ड ड्रिंक और चिप्स-

अपने लेखक को जानिए

संजीव ठाकुर : हिन्दी साहित्य में पीएचडी। कुछ वर्ष अध्यापन। इन दिनों स्वतंत्र लेखन। हिन्दी की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में कविता, कहानी, समीक्षा, बालगीत, बालकथा आदि का प्रकाशन। अब तक बड़ों के लिए दस और बच्चों के लिए पंद्रह किताबें प्रकाशित।

‘कबूतरी आंटी’, ‘बड़ों का बचपन’,‘बचपन की बातें’ बाल साहित्य की चर्चित किताबें।

विप्स ही घूमना-फिरना होता है। उसके बिना तो घूमना होता ही नहीं!”

तीनों छोटे से कैंटीन में चले गए। मम्मी और तान्या ने कोल्ड ड्रिंक लिया, तो पापा ने चाय। चाय पीकर पापा वहीं बिक रही चीजों को देखने लगे। भगवान बुद्ध की मूर्ति, स्तूप का मॉडल, अलग-अलग डिजायन के बैग, फोटो, पोस्टर वगैरह-वगैरह!

“ये सारी चीजें चीन से बनकर आई हैं। क्या दुर्भाग्य?” पापा ने कहा और सांची की स्मृति में स्तूप का एक छोटा सा मॉडल खरीद लिया।

“अब चलो म्यूजियम देखने। देरी होने पर बंद हो जाएगा।” पापा ने कहा।

तीनों खरामा-खरामा नीचे उतरने लगे। म्यूजियम जाकर उन्हें बहुत अच्छा लगा । ऊपर जो स्तंभ दिखा था उसका ऊपरी भाग देखकर वे दंग रह गए।

“देखो, ये है चार शेरों वाले स्तंभ का ऊपरी भाग! तीन शेर तो दिख ही रहे हैं, चौथे को पीछे रखे आईने में देखो। यही है अशोक का चिह्न! यही

हमारा राष्ट्रीय प्रतीक है। यही राष्ट्रीय मुहर के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। यही रुपयों पर छपा दिखाई देता है।"

"पापा! क्या सचमुच इसे सम्राट अशोक ने ही बनवाया था?"

"और क्या? वो भी दो हजार दो सौ कुछ वर्ष पहले।"

"ये देखो, ये जो लिखा हुआ है, ब्राह्मी लिपि है। इसे आज तक सही-सही नहीं पढ़ा गया है। कोशिशें बहुत हुई पढ़ने की। देश के अनेक भागों में इस लिपि में लिखे अशोक के शिलालेखों को अगर पढ़ा जा सकता तो इतिहास के कई और अज्ञात तथ्यों को जाना जा सकता था।"

तान्या ने उस ब्राह्मी लिपि में लिखे हुए शब्दों को मोबाइल कैमरे में कैद कर लिया। इसके बाद उन्होंने वह बंगला भी देखा जिसमें सांची की खुदाई करने वाले अंग्रेज पुरातत्वविद सर जॉन मार्शल रहते थे। उनकी इस्तेमाल की हुई चीजें देखकर तान्या को बार-बार आश्चर्य हो रहा था। उनके खाने के बर्तन, कांटे, चम्मच आदि देखकर तो उसे भूख भी लग आई । भूख तो मम्मी-पापा को भी लगी थी। एक होटल ढूंढ़कर तीनों ने खाना खाया।

खाने के बाद पापा ने एक टैक्सी वाले से बात की । सांची में देखने लायक और भी चीजें थीं, वहां उसे चलने को बोला। घूमते-घूमते रात के आठ बज गए। टैक्सी वाला उन्हें रिजॉर्ट भी छोड़ आया ।

दिन अच्छा गुजरा था, लेकिन रात ...! कमरे में घुसते ही उन्हें एहसास हो गया कि रात बहुत खराब बीतने वाली है। बरामदे में, कमरे में, बाथरूम में, बेड पर, टेबल पर, दीवारों पर कीड़े ही कीड़े थे, वो भी दुर्गंध करने वाल, गंधी कीट! उन्हें लाखों की तादाद में देख कर सबका सिर चकरा गया । वे उलटे पैर लौटे और रिसेप्शन पर आकर बरसने लगे। मैनेजर सफाई देने लगा, "क्या करें साहब? असल में आज सुबह से पानी नहीं गिरा है। पानी के गिरने पर सभी कीड़े बहकर खत्म हो जाते हैं। आप यहीं बैठें। कमरा अभी साफ करवा देते हैं ।"

मैनेजर ने दो लड़कों को झाड़ू और स्प्रे के साथ भेज दिया। कुछ देर में वे लौटे, तब तीनों कमरे में गए। कीड़ों के हटने के बाद भी उनकी दुर्गंध कमरे में थी। ऊपर से कीड़ों को मारने के लिए इस्तेमाल किया गया स्प्रे भी सबकी नाक में जलन पैदा कर रहा था। खैर, किसी तरह तीनों ने हाथ-मुंह धोए और वापस रेस्तरां में आकर खाना खाया।

"चलो, किसी तरह सोया जाए!" पापा ने कहा ।

"क्या खाक सोएंगे? नींद आएगी?" मम्मी ने जवाब दिया।

तीनों उठकर कमरे में आए। "चलो अब सो जाओ ! याद रहेगी यह ट्रिप !" कह कर पापा लेट गए । मम्मी भी । तान्या भी । तान्या को तुरंत नींद आ गई । पापा-मम्मी रात भर करवटें बदलते रहे।

सुबह हुई। सभी जल्दी-जल्दी तैयार हो गए। चाय पी कर टैक्सी मंगवाई और इस रिजॉर्ट को प्रणाम कर भोपाल के लिए निकल पड़े।

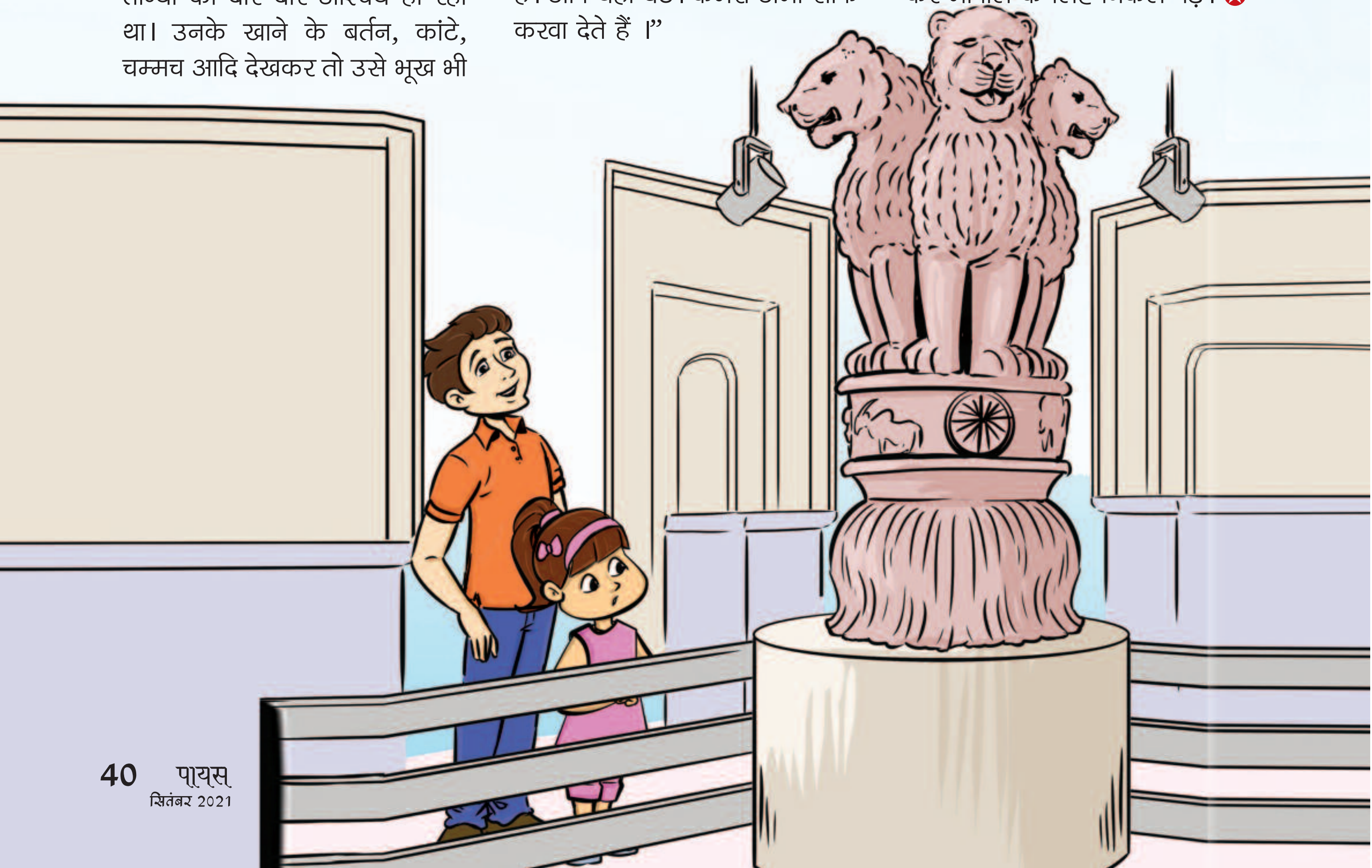

अमरुद की चोरी

रचनाकार को जानिए

महिमा श्री : वर्तमान में पाटलिपुत्र विश्वविधालय में गेस्ट फैकल्टी के तौर पर अध्यापन कार्य व स्वतंत्र लेखन

देश के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में यथा युद्धरत आदमी समकालीन युवा-स्त्री विशेषांक 2018, सदानीरा त्रैमासिक, सप्तपर्णी, सुसम्भाव्य, अंजुमन, आधुनिक साहित्य, अट्टूबंधन, खुशबू मेरे देश की, किस्सा-कोताह, नेशनल दुनिया आदि में रचनाएं प्रकाशित।

सुमी को हमेशा खांसी-सर्दी लगी रहती है, इसलिए उसे अमरुद खाने को नहीं मिलता। कई बार उसके विद्यालय में भी उसके साथ वाले बच्चे अमरुद फांके खाते दिखते किंतु वह मन मार के रह जाती। वह कुछ दिन ठीक रहती, फिर उसे खांसी हो जाती। डॉक्टर ने कहा इसे ठंडी चीजों से एलर्जी है। उससे बचा के रखें। उसके बाद से ही ठंडी तासीर वाली खाने की चीजें उसे नहीं दी जातीं।

कई बार उसका मन करता। वह भी दूसरे बच्चों की तरह आईसक्रीम खाए, कुल्फी खाए,अमरुद खाए, किंतु ये चीजों को खाना उसे सख्त मना था। दिन ऐसे ही बीत रहे थे।

फाइनल परीक्षा के बाद कुछ दिन के लिए उसका विद्यालय बंद हो गया। वह घर में रहती। दोपहर में मुहल्ले के बच्चों के साथ पास के खाली मैदान में खेलने जाती। रात में सोने से पहले दादी से कहानियां सुनतीं। कहानी खत्म होने के बाद दादी कहतीं, "बताओ, इस कहानी से क्या सीखा ?"

सुमी नहीं समझ पाती, तो दादी उसे बतातीं। ज्यादातर कहानियों में सीख होती-झूठ नहीं बोलना चाहिए। चोरी करना पाप है।

कुछ दिनों बाद सुमी की खांसी एकदम खत्म हो गई थी। वह कभी-कभी अमरुद या आइसक्रीम की डिमांड करने लगी थी, पर घर में सब मना कर देते।

एक शाम, वह खेल कर घर आई, तो देखा घर में दादी और मां नहीं हैं। सुमी की दादी भगवान के भोग में हमेशा कुछ न कुछ चढ़ातीं। उसने जाकर देखा। आज दादी ने खूब चमकीले तीन अमरुद भोग में लगाए थे।

सुमी के मन में अमरुद खाने की इच्छा जाग गई। उसने सोचा अगर एक अमरुद खा ले, तो किसी को पता भी नहीं चलेगा। दादी को इतना याद न होगा कि दो अमरुद थे कि तीन। वह एक अमरुद लेकर छत की ओर जानेवाली सीढ़ियों पर छुप के बैठ गई। जैसे ही अमरुद खा कर उसने खत्म किया, दादी और मां की बाजार से आ गईं।

दादी ने उसे खिलौना दिया। वह खुश होने की बजाय सुमी डर सी गई। दादी को देखते ही वह साचने लगी कि उसने आज अमरुद चोरी की है। वह दुखी महसूस करने लगी।

सब अपने काम में लग गए। किंतु ना सुमी का खेलने में मन लगा, ना ही पढ़ने में। उसे लगा उसे दादी से अपनी गलती मान लेनी चाहिए। उसे नींद भी नहीं आ रही थी। अंत में उसने दादी से कहा, "दादी मैंने अमरुद चुरा के खाए।"

दादी ने कहा, "मैं अमरुद कम देखकर समझ गई थी। मैं चाहती थी, तुम खुद बताओ। डांटने से तुम डर के झूठ बोल सकती थी।

सुमी ने कहा, "दादी मुझे लालच आ गया था। अब कभी चोरी नहीं करुंगी।"

दादी ने उसे अपने पास खींचतें हुए कहा, "कोई बात नहीं बेटा। तुम्हें अपनी गलती का अनुभव हुआ। यही बड़ी बात है।"

फिर दादी ने सुमी को प्यार से गले लगा लिया। ✪

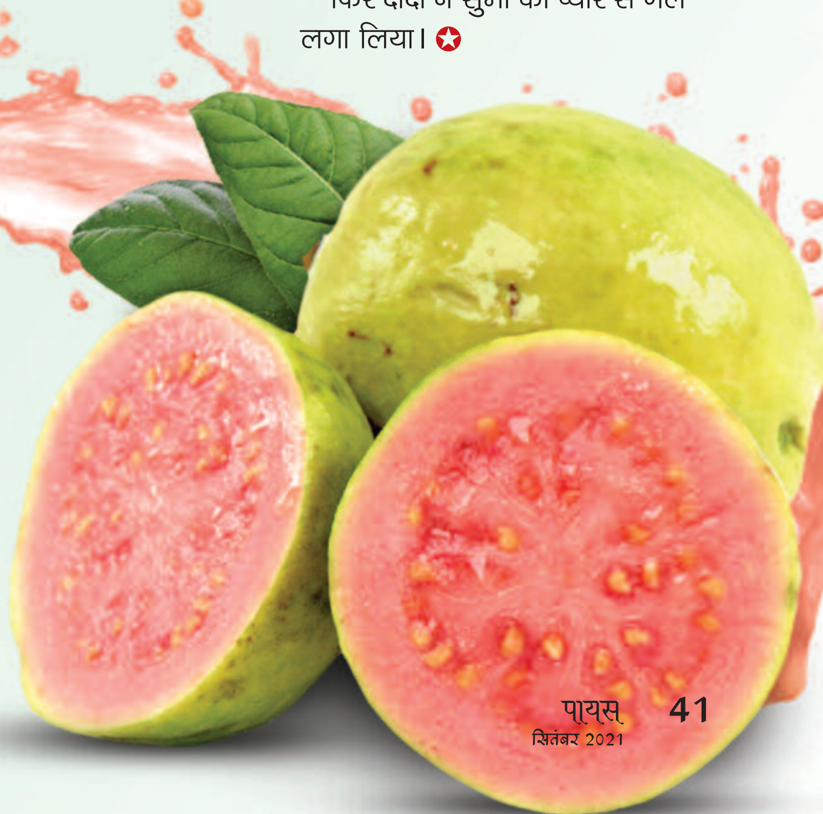

शरारती बादल

नन्हा बादल अब काफी बड़ा हो गया था। उसकी शरारतें भी पहले से और बढ़ गई थीं। जब उसकी शरारतों से कोई तिलमिलाता, तो उसे बहुत मजा आता। यही सब करते-करते जब वह थक जाता, फिर हवा दीदी के सहारे आहिस्ता-आहिस्ता उड़कर दूर ऊंची पहाड़ी पर जा बैठता और सो जाता।

सुबह जब सूरज बाबा की गुनगनी किरणें सहलाती, तो वह कुनमुनाकर उठ जाता और उड़ चलता।

उस दिन उड़ते-उड़ते उसे एक नन्हा सा पौधा दिखा। वह गहरी जगह पर उगा हुआ था। वहां जरा भी पानी भरता, तो वह डूब जाता।

उसे देख बादल को शरारत सूझी। वह जोर-जोर से हंसने लगा, तो मोतियों जैसी बूंदें झरने लगीं।

"ठहरो-ठहरो, बादल दद्दा!" नन्हा पौधा चीख उठा, "तुम ऐसा न करो दद्दा!" पौधे ने कहा, "पहले ही कितनी नमी है। जगह-जगह पानी भी भरा हुआ है और तुम हो कि बरसे जा रहे हो। तुम्हारे ऐसा करने से तो मैं डूब ही जाऊंगा!" पौधा रोंआसा हो गया ।

"यही तो मैं देखना चाहता हूं कि तुम कैसे डूबते हो!" कहते हुए बादल जोर से हंसा।

"मेरी बेबसी पर इतना मत

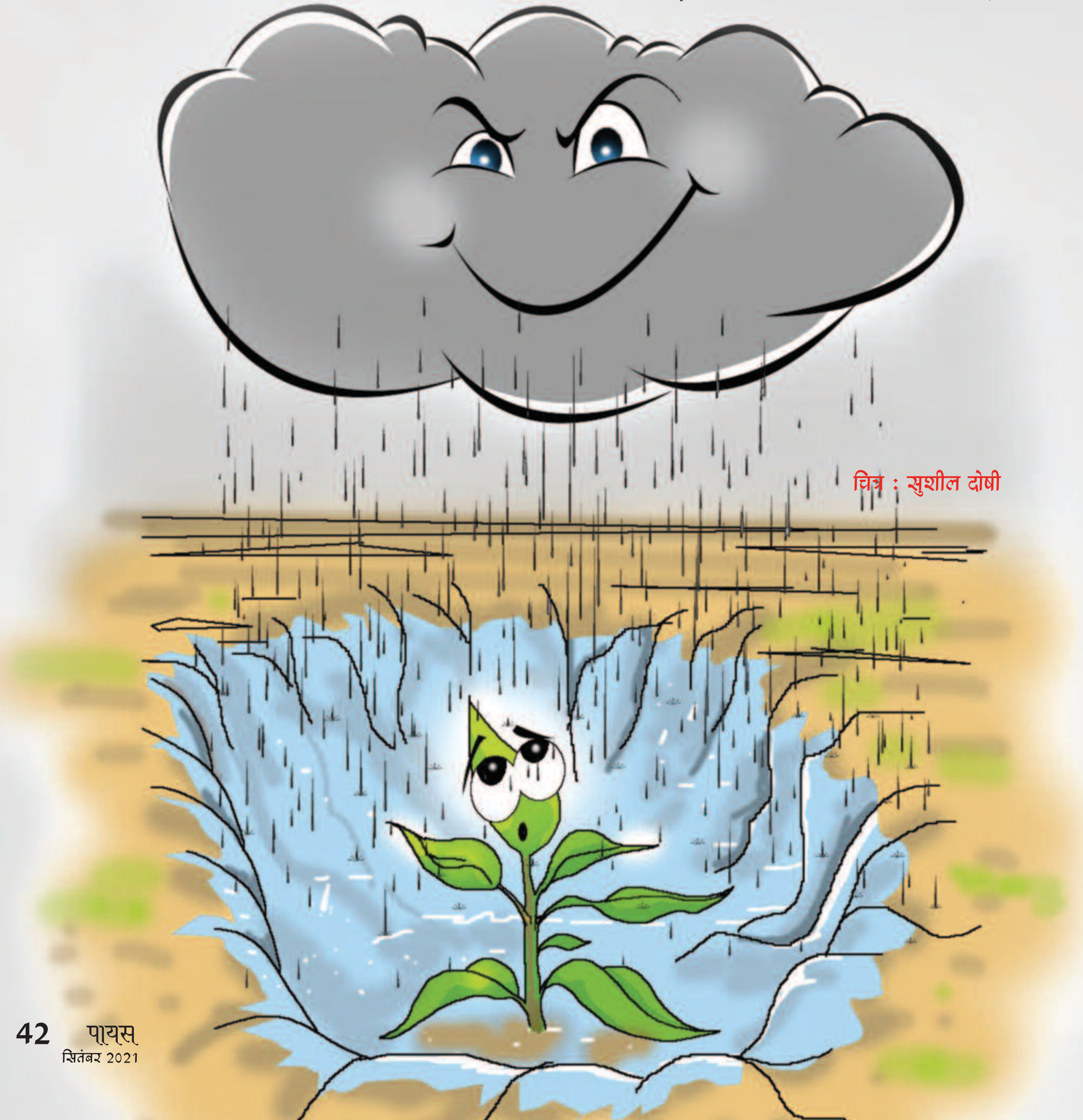

चित्र : सुशील दोषी

इतराओ बादल दद्दा!" पौधे ने विनती की, पर वह बरसता रहा। पौधा डूबता जा रहा था। वह आखिरी बार चीखा, "मैं मर जाऊंगा...!"

पर बादल बरसता रहा। तभी उधर एक किसान आ गया। उसने फावड़े से मेड़ काट दी, ताकि बारिश का पानी पूरे खेत में फैल जाए । धीरे-धीरे पानी घटने लगा तो नन्हे पौधे की जान में जान आई।

अब तक बादल आगे बढ़ चुका था। आगे उसे एक घोंसला दिखा। उसमें दो प्यारे-प्यारे चूजे अपनी मां बुलबुल का इंतजार कर रहे थे।

बादल फिर से हंसते हुए वहां बरसने लगा। बच्चे भीगने लगे। उनके शरीर पर अभी रूई जैसे कोमल रोंए थे। रोंए पानी से भीगे, तो बच्चे मांस के लोथड़े-से दिखने लगे। यह देख, बादल को मजा आ रहा था।

तभी बुलबुल लौट आई। उसने देखा कि थोड़ी ही दूरी पर धूप खिली है। बस, एक छोटा-सा टुकड़ा ही बरसे जा रहा है। उसे बादल की करतूत अच्छी नहीं लगी। उसने फौरन अपने पंखों को छाते की तरह फैला लिया। बच्चे उसके नीचे आ गए। अब वे सुरक्षित थे।

दिन ढल चुका था। अब तो बादल वापस चल पड़ा। पर रास्ते में उसकी नजर नीचे गई तो देखा, केंचुआ-परिवार अपना घर बना रहा था।

"अरे वाह! अभी मजा आएगा।" वह जोर से हंसा और बरसने लगा ।

मोटू केंचुआ परेशान हुआ, तो बादल ने कहा, "भई, तुम गरमी से तंग हो गए होगे। थोड़ा ठंडा कर दूं।"

मोटू मना करता रहा, पर बादल न माना। मोटू की सारी मेहनत पानी में मिलती जा रही थी। उसके मेहनत से बनाए गए घर गल-गलकर मिट्टी के ढूह बन गए।

थोड़ी देर बरसने के बाद बादल ने महसूस किया कि वह तो एकदम हलका हो गया है। उसका पेट खाली हो चुका है। सो वह वापस जाकर पहाड़ी पर सो गया ।

सुबह उसकी नींद देर से टूटी, क्योंकि सूरज बाबा ने उसे नहीं उठाया था। वह उसकी करतूत से नाराज थे ।

'कमाल है, हवा दीदी अब तक मुझे सैर पर ले जाने के लिए नहीं आईं?' सोचता हुआ वह चकर-मकर करने लगा। पर हवा दीदी भी उसके खफा थीं। बादल को जोरों की प्यास लगी थी। जब उससे नहीं सहा गया तो वह किसी तरह लुढ़ककर नीचे आया और बोल उठा, "समंदर दादा, समंदर दादा! मुझे जल्दी से वाष्प दो। जोरों की प्यास लगी है!"

समंदर दादा काफी देर चुप रहे। फिर बोले, "आज तुम प्यासे रहो।"

तभी हवा दीदी भी आ गईं और बोलीं, "तुम्हारी यही सजा है। जाओ, और कल जितने बुरे काम किए हैं, आज उतने ही अच्छे करके आओ। हम तभी तुम्हें माफ करेंगे।"

मरता क्या न करता! एक तो खाली पेट, ऊपर से सूरज की तेज किरणें। बादल के पूरे शरीर में खुजली हो रही थी। उसके शरीर का एक-एक हिस्सा गरम होकर वाष्प बनता और उसके शरीर से जुदा हो जाता! बेचारे का बुरा हाल था।

अब उसे याद आ रहा था...चीखता हुआ नन्हा पौधा, भीगते-सिसकते बुलबुल के बच्चे, बेचैन होकर भागता केंचुआ-परिवार...।

शाम तक टहलते-भागते उसका शरीर गल चुका था। अब वह पहले जैसे नन्हे बादल में बदल चुका था ।

"मुझे अब तो वाष्प दे दो, समंदर दादा...!" बादल रोने लगा। पर उसके शरीर में पानी ही कहां था, जो एक आंसू ही टपकता?

हवा दीदी को उसे देख दुख भी हो रहा था, वह बोलीं, "पहले शरारत न करने का वादा करो।"

"मैं वादा करता हूं दीदी। अब मैं बेवजह पानी बरबाद नहीं करूंगा। मैं वहीं बरसूंगा, जहां मेरी जरूरत हो!"

"हां, यह हुई न बात...!" सूरज बाबा खुशी से चहक उठे। वह भी बादल को परेशान नहीं करना चाहते थे। वह तो बस उसका गुमान खत्म करना चाह रहे थे।

फिर क्या था? समंदर दादा ने उसे ढेर सारी वाष्प दी, तो वह फिर से बड़ा बादल बन गया। हवा दीदी उसे जोर से उड़ाकर ले चलीं।

सामने के सूख रहे खेत में वह बरस पड़ा, तो पौधे खुशी से झूम उठे।

हवा दीदी बोलीं, "देखो, पौधे लहरा-लहराकर तुम्हें धन्यवाद दे रहे हैं!" ✪

अपने लेखक को जानिए

डॉ. मोहम्मद साजिद खान : कॉलेज में अध्यापन के साथ-साथ लेखन भी। देश की लगभग सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में विगत 28 वर्षों से सक्रिय लेखन, कहानी, कविता, एकांकी, चित्र-पहेली, लघुकथा, साक्षात्कार, संस्मरण, समीक्षा, आदि की अब तक लगभग 600 रचनाएं प्रकाशित।

कॉटन कैंडी

कॉटन कैंडी, चीनी गोला,
कहते इसको हवा मिठाई।
कोई कहे बुढ़िया के बाल,
लगे किसी को परी मलाई।

बाल-बाल सी, तार-तार सी,
चीनी से यह काती जाती।
छुई-मुई सी,रूई-रूई सी,
लिपटी चिपकी सबको भाती।

रंग-बिरंगी, कुछ बेरंगी,
टॉफी की यह लगती नानी।
मेले ठेले, गली-मुहल्ले,
बिकती रहती यह मस्तानी।

बच्चों को यह लगती बढ़िया,
खुशी-खुशी सब खाते इसको।
टिन्नी मिन्नी दोनों मांगें,
पहले मुझको, पहले मुझको।

अपने लेखक को जानिए

हर प्रसाद रोशन : वर्तमान में स्थानीय निकाय, हल्द्वानी में कार्यरत। विगत 26 वर्षो से लेखन कार्य में सक्रिय। बाल साहित्य में बाल कविताएं, बाल कहानियां, गीत, भजन आदि का लेखन।

चित्र : सुशील दोषी

हावड़ा ब्रिज पर उतरा पत्ता

बोला हवा से उड़ता पत्ता
जाना है मुझको कलकत्ता,
कहा हवा ने थोड़ा हँस के
पूछ पकड़ लो मेरी कस के।

जिधर मूड़ूं तू भी मुड़ जाना
कहीं ना चिड़ियों से टकराना,
लो आ गये हैं हम कलकत्ता
हावड़ा ब्रिज पर उतरा पत्ता ।

अपने लेखक को जानिए

श्रवण कुमार सेठ : बाल कविताएं, कहानियां, लघुकथाएं इत्यादि विधाओं में लेखन। हाल में बाल कविताओं की पहली पुस्तक 'आसमान में उड़ना है' प्रकाशित हुई। सम्प्रति : समीक्षा अधिकारी, उत्तर प्रदेश।

हावड़ा ब्रिज चित्र : शिखरचंद जैन

व्यवहार बदल गया

प्राचीन काल में मगध में एक राजा राज्य करता था। उसके शासनकाल में जनता बहुत दुखी रहती थी। कारण, राजा को एक प्रकार की सनक सवार थी। वह कुछ काम कर रहा होता और उससे कोई यह पूछता कि वह क्या कर रहा है? तो वह उस शख्स को तुरंत जेल में डालने का हुक्म सुना देता था या फिर फांसी पर लटकवा देता था। इस तरह से जनता उसके इन अत्याचारों से बेहद दुखी थी।

राजा तो इतना सनकी था कि उसने अपने परिवारजनों और बीबी-बच्चों को भी कारागार में डलवा दिया था। वह किसी पर भी जरा भी रहम नहीं करता था।

एक बार पड़ोस के राजा का दूत आया। उसका पूरा आदर सत्कार किया गया। राजा किसी कार्य में व्यस्त था, उस दूत ने राजा से पूछ लिया कि वह क्या कर रहे हैं?

सनकी राजा ने उसे तुरंत फांसी पर चढ़ाने का हुक्म सुना दिया। इस तरह से पास-पड़ोस के राजाओं से भी उसके रिश्ते खराब होने लगे थे और पड़ोसी देशों के राजाओं ने भी उससे दूरी बना ली थी। उसका मानना था कि वह कुछ भी करे, परंतु कोई भी उससे सवाल-जबाब नहीं करे। उसकी इसी आदत के चलते लोग उससे दूर होते जा रहे थे। सभी लोग राजा की इस आदत को लेकर बेहद परेशान थे।

धीरे-धीरे लोग उस राज्य को छोड़कर जाने लगे और दूसरे देशों में जाकर बसने लगे। कुछ दिनों में ही पूरा राज्य खाली हो गया। अधिकतर नौकर-चाकर भी राजा के इस दुर्व्यवहार के शिकार हो चुके थे। कम ही सिपाही बचे थे, जो उसकी देखभाल करते थे। देखते ही देखते एक दिन वह आया, जब राजा अकेला पड़ गया। पूरा राज्य खाली हो गया।

अब राजा बीमार रहने लगा था। दो-दो दिन बगैर खाना-खाए ही बीत जाते थे, इस तरह उसकी सेहत भी दिनों-दिन गिरती जा रही थी। राजा की देखभाल के लिए, मंत्री वैद्य को बुलाने जाते, लेकिन राजा के डर की वजह से वैद्य भी नहीं आते थे।

एक दिन कुछ मंत्रियों ने राजा की गिरती सेहत की वजह से राजा को घूमने की सलाह दी। राजा ने उनकी बात मान ली और घूमने का फैसला किया। वह अपने महल से घूमने के लिए बाहर निकल पड़ा। उसने देखा कि गलियों में सन्नाटा पसरा हुआ है। वह चलते-चलते जंगल की ओर पहुंच गया। दूर-दूर तक कोई बस्ती दिखाई नहीं दे रही थी। चलते-चलते शाम हो चली थी, वह काफी थक गया था और अब उसे भूख भी सताने लगी थी। वह

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

पक्षियों से जुड़े मुहावरे व लोकोक्तियां

- अपना उल्लू सीधा करना (अपना फायदा देखना)
- जंगल में मोर नाचा किसने देखा (विश्वास करने लायक बात नहीं)
- उड़ती चिड़िया के पर गिनना (मन की या रहस्य की बात तुरंत जानना)
- अब पछताया होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत (समय निकल जाने के पश्चात पछताना व्यर्थ होता है)
- चोर के घर मोर (धोखा देने वाले को कोई धोखा दे दे)
- अपने मुंह मियां मिट्ठू (अपनी बड़ाई खुद करना)
- परिंदा पर नहीं मार सकता (बहुत सुरक्षित जगह होना)
- हाथों से तोते उड़ जाना (बुरी तरह फंस जाना, बहुत घबरा जाना)
- अंधे के हाथ बटेर लगना (अयोग्य को कुछ बड़ा या अच्छी चीज मिल जाए)
- वे जमाने गए जब खलील खां फाख्ते उड़ाते थे (जमाना बदल गया)
- बाज की तरह झपट्टा मारना (पलक झपकते आक्रमण कर कुछ छीन लेना)
- घर की मुर्गी दाल बराबर (अपने लोगों की बात या उन पर ध्यान न देना)
- कौवा चला हंस की चाल (अपनी विशेषता भूल दूसरे की नकल करना)
- तोता रटंत (बिना बात समझे, कुछ याद करना)
- गिद्ध दृष्टि (लालची निगाह से देखना)
- मुर्गा बांग न देगा, तो क्या सवेरा नहीं होगा (अपने को ज्यदा महत्वपूर्ण नहीं समझना चाहिए)
- चील के घोंसले से मांस चुराना (असंभव काम को कर दिखाना)
- कौए की तरह कांव-कांव करना (बिन बात लगातार बोलते जाना)
- कोयल सी मीठी बोली (बहुत मिठास से बात करना)
- चिड़िया उड़ गई (हाथ से निकल जाना)
- काठ का उल्लू (निरा बुद्धू होना)
- अंडे सेवे कोई, बच्चे लेवे कोई (परिश्रम कोई व्यक्ति करे और लाभ किसी दूसरे को हो जाए)
- आधा तीतर आधी बटेर (बेमेल चीजों का मिश्रण होना)

अचेत होकर गिर पड़ा।

जब उसकी आंखें खुलीं, तो वह दंग रह गया। उसने देखा कि कुछ साधु उसे घेरे हुए खड़े हैं। वे उसके होश में आने का इंतजार कर रहे थे। राजा उठकर बैठ गया। तब उनमें से एक बड़े साधु उनके पास आए और उन्होंने अपने शिष्य से राजा को भोजन देने के लिए कहा।

राजा भूखा था, सो वह खाने पर टूट पड़ा। खाना खाने के बाद राजा को अपने घर-परिवार और राज्य की याद आई। उसे जनता और अपने परिवारजनों पर किए गये अत्याचारों पर आत्मग्लानि हुई। उसकी आत्मा जाग उठी थी। साधुओं द्वारा किए गए व्यवहार ने उसमें परिवर्तन ला दिया।

वह साधु के चरणों से लिपट गया। साधु ने राजा को उठाया और अपनी कुटी में ले गए। फिर राजा से दुखी होने का कारण पूछा। तब राजा ने अपनी सनक के बारे में उन्हें बताया।

साधु ने राजा को ज्ञान दिया। बोले, "जनता के दुखों को दूर करो। जब तक अपनी प्रजा का आत्मविश्वास नहीं जीतोगे, तब तक जनता राज्य में वापस नहीं आएगी और बगैर जनता के राज्य में तरक्की नहीं आ सकती।"

राजा ने उसी समय ऐसा ही करने का प्रण किया और साधु से आज्ञा लेकर महल की ओर चल पड़ा।

अपने महल में जाकर सबसे पहले उसने अपने बीबी, बच्चों और परिवारजनों को आजाद किया और फिर सभी को छोड़ने के बाद उसने एक सभा बुलाई, जिसमें उसने ऐलान किया कि अब वह कभी भी किसी प्रकार का जुल्म नहीं करेगा और बिन बात किसी को सजा भी नहीं देगा।

यह बात पूरे राज्य में आग की तरह फैल गई। राजा में आए बदलाव से जनता बेहद खुश थी। धीरे-धीरे लोग राज्य में वापस आने लगे थे।

राजा लोगों के पास गया और उन्हें समझाया, हमेशा उनके दुखों में साथ देने का वादा किया। मगध प्रदेश में फिर खुशहाली लौट आई थी, लोग बहुत खुश थे, क्योंकि राजा का व्यवहार बदल गया था। ✪

अपने लेखक को जानिए

उमेश चंद्र सिरसवारी : केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा में संपादन सहायक और अतिथि प्रवक्ता। साहित्य साधना में लीन। बाल सहित्य सहित शोध आलेख और आलोचना पर विशेष ध्यान। हाल ही में 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ' द्वारा 'कृष्ण विनायक फड़के बाल साहित्य समीक्षा सम्मान'। तीन पुस्तकें प्रकाशित।

अपने लेखक को जानिए

मु. जलालुद्दीन खान : कुछ वर्षों तक मंजूरुल अमीन 'राज' के नाम से लेखन के बाद मु.जलालुद्दीन खान के नाम से लेखन की शुरुआत। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं आदि में बाल कविता, कहानियां प्रकाशित। संप्रति-अध्यापन।

पढ़ते चूहे

धमा चौकड़ी करते चूहे,
नहीं किसी से डरते चूहे।
दबे पाँव हैं चलते चूहे।
घर में खूब टहलते चूहे।

जहाँ भी देखो दिख जाते हैं,
हर घर में हैं पलते चूहे।
बर्तन, बिस्तर, अलमारी,
कहाँ नहीं हैं चढ़ते चूहे।

बन्द अगर बिल कर दे कोई,
नया रास्ता गढ़ते चूहे।

मात हमारी अक्ल को देते,
कहाँ हैं जाने पढ़ते चूहे।

अक्सर काट हैं देते बस्ता,
मानो हमसे जलते चूहे।
लाख उपाय करिए लेकिन,
कभी नहीं हैं घटते चूहे।

बिल्ली मौसी आ जाएँ तो,
उनको छुप-छुप तकते चूहे।
कभी-कभी बन जाते बुद्धू,
आखिरकार हैं फंसते चूहे।

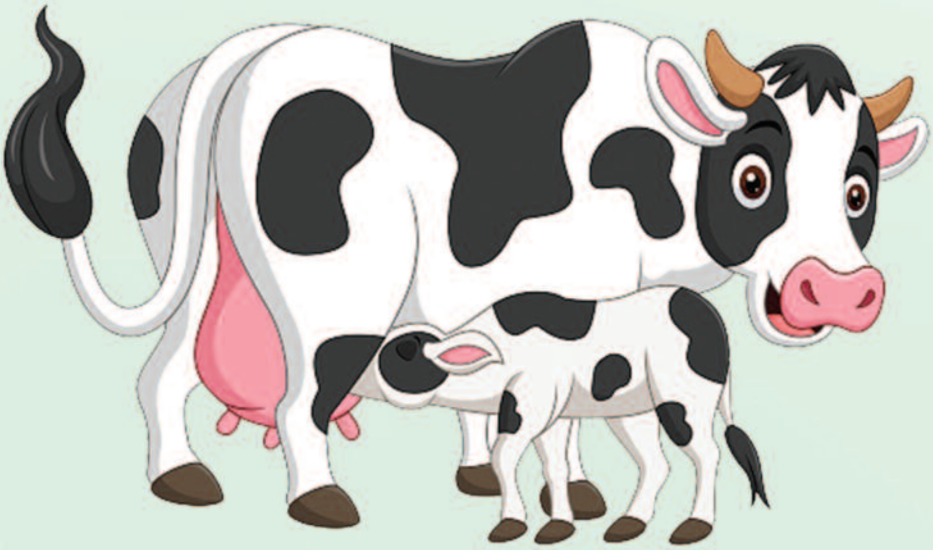

रचनाकार को जानिए

अंजना गर्ग : लिखने मे रुचि। साहित्य में प्रसाद, निराला, बच्चन, महादेवी वर्मा आदि की रचनाएं पढ़ना पसंद। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में कविताएं एवं लेख प्रकाशित ।

मास्क

सूर्यदेव अपनी किरणों के रथ पर सवार होकर इस धरा पर अपने पग रख चुके थे।

रामू ने अलसबेरे ही अपनी सोनी गाय का पूरा दूध दुह लिया था और महीने भर की प्रसूता सोनी गाय एवं उसके टिमटिम बछड़े को सड़क पर ऐसा वैसा खाने को छोड़ दिया था।

मां के साथ सड़क पर यूं ही चला जा रहा टिमटिम बछड़ा आसपास की दुनिया को बड़े ही कौतूहल के साथ देख रहा था कि सहसा कुछ लोगों को अपने मुंह पर कपड़ा बांधे देख उसने अपनी मां से पूछा, "मां, ये इनसानों ने अपने मुंह पर क्या लगा रखा है? आपने बताया था कि ऐसा कुछ तो मानव पहले हमारे दादा-बाबा के मुख पर लगाता था और आज इसने स्वयं ही लगा रखा है।"

सोनी गाय यह सुन खूब हंसी और बोली, "टिमटिम बेटा, यह मास्क कहलाता है। कोरोना नाम की जो बीमारी इस मानव जगत में फैली है, उससे बचाव के लिए इस मास्क को पहनना जरूरी है इनसानों को। और फिर बेटा, इसे ही समय का फेर कहते है कि पहले मानव इसे हमारे पूर्वजों के मुंह पर लगाता था किंतु आज पशुत्व का अंश मानव में ज्यादा हो गया है। हवस, लालच, दूसरों के हिस्से का खा जाना स्वार्थी होना आदि दुर्गुण हम पशुओं के माने जाते थे, किंतु आज के मानव को देख कर ऐसा लगता है जैसे ये दुर्गुण उसमें ज्यादा समा गए हैं।"

टिमटिम बेटा, देखो तो इस इनसान ने हमारी भोली प्रकृति का इतना दोहन किया है कि अब वह स्वयं कोरोना के रूप में अपनी रक्षा करने को मजबूर हुई है।"

सोनी गाय आगे बोली, "ईश्वर ने मनुष्य को बहुत स्वादिष्ट फल-सब्जियां खाने को दिए हैं, किंतु वह तो अपनी श्रेष्ठता के मद में इतना अंधा हो गया है कि उसने दूसरे जीवों को भी अपने लालच का ग्रास बना लिया है। इसी लालच ने मानव का ये हाल किया है।"

बीच में ही टिमटिम मां की बात काटकर बोला,"पर मां, मास्क का इन बातों से क्या सम्बन्ध?"

सोनी गाय हंसकर बोली, "सम्बन्ध है मेरे बच्चे, हमारे मुंह पर मानव मास्क इसलिए लगाता था ताकि हम अधिक मात्रा में न खा जाएं और दूसरे इधर-उधर की खाने के लिए मुंह न मारें। अब यही चेतावनी निरंतर पशु होते मनुष्य को ईश्वर दे रहा है क्योंकि मानव अब न तो प्रकृति को छोड़ता है और न उसमें श्वास लेने वाले भोले भाले जीवों को।

कोरोना के द्वारा मानव पशु के मुख पर मास्क लगा कर भगवान ने उसे यही चेताया है कि हे मानव, अब तुम्हारी मनमानी नही चलेगी।"

इतना सोनी गाय अपने टिमटिम को प्यार से चाटने लगी। ✪

14 सितंबर : हिंदी दिवस पर विशेष

अपनी हिंदी प्यारी है

सरस, सरल मनोहारी है।
अपनी हिंदी प्यारी है।।

मीठे शब्दों वाली है
यह फूलों की डाली है
भारत की पहचान लगे
हिंदी हिंदुस्तान लगे
अद्‌भुत शान हमारी है।
अपनी हिंदी प्यारी है।।

कबिरा का आखर ढाई है
तुलसी की चौपाई है
यह भावों की सरिता है
मीठी, मोहक कविता है
सुरभित है, उजियारी है।
अपनी हिंदी प्यारी है।।

अक्षर रस के छींटे हैं
शब्द शहद से मीठे हैं
यह मन में बस जाती है
जीवन को महकाती है
खिली-खिली फुलवारी है।
अपनी हिंदी प्यारी है।।

अपने लेखक को जानिए

डॉ. विनोद 'प्रसून' : हिंदी संसाधक/ शिक्षक प्रशिक्षक के रूप में देश-विदेश में प्रसिद्ध हैं, हिंदी व्याकरण की जटिल अवधारणाओं को सरस बालगीतों के माध्यम से प्रस्तुत करने में महारथ हासिल है, बच्चों के साथ बड़ों के लिए भी लिखते हैं, आकाशवाणी और दूरदर्शन से अनेक गीतों और कविताओं का प्रसारण हुआ है।

चित्र : सुशील दोषी

अपने लेखक को जानिए

सिराज अहमद : विगत 10 वर्षो से लेखन क्षेत्र में सक्रिय रहते हुए देश की सभी बाल पत्रिकाओं में लगभग 350 रचनाओं का प्रकाशन। मराठी में अनूदित कहानियों की 4 पुस्तकें प्रकाशित।

सरसराहट

सरसराहट की आवाज जब मेरे कानों से जा टकराई, तब मैं बड़ी गहरी नींद में सो रहा था। आवाज सुनकर मैं हड़बड़ाकर उठ बैठा। मैंने लपककर कमरे की बत्ती जलाई और उस आवाज के रहस्य को जानने की कोशिश करने लगा।

आवाज बहुत तेज तो न थी, लेकिन डराने वाली थी। बहुत कोशिश के बावजूद भी जब कुछ मालूम न हुआ, तो मैं सहम गया। पहले कभी मैंने ऐसी आवाजें नहीं सुनी थीं।

बेड पर बैठे-बैठे ही अगल-बगल झांककर देखा, पर कुछ न दिखा। मेरे दिल की धड़कनें अब बढ़ने लगीं।

रुक-रुककर सरसराहट की आवाज लगातार मेरे कानों में पड़ रही थी। डर के मारे हाथ-पैर ढीले हो गए थे। अम्मां को जगाने के लिए एक आवाज भी लगाई, लेकिन आवाज कमरे से बाहर न गई।

अब तो मुझे पंखे की हवा से उड़ रहे पर्दो से भी डर लगने लगा।

'बेड से नीचे कैसे उतरुं?' यह सोचने लगा। कही पैरों से कोई चीज लिपट न जाए! यह सोचकर डर और घबराहट में तरक्की हो गई। दिमाग मे उथल-पुथल मच गई।

हिम्मत जुटाकर बेड से नीचे उतरा। अपने रूम का दरवाजा खोला तो जैसे आवाज और भी तेज हो गई। तभी मेरी नजरे दरवाजे के किनारे पर गई। कोई एक चीज मुझे उस किनारे पर दिखी।

'वह आखिर क्या है?' मैं उससे दूर बेड के एक किनारे खड़ा होकर यह सोचने लगा।

गौर करने पर यह पता चला कि आवाज वहीं से आ रही थी।

जो चीज मुझे दरवाजे के किनारे पर दिखी, उसे एक बार में पहचान पाना मुश्किल था। पहली नजर में तो वह मुझे कुछ समझ न आया। मैंने मुंह से आवाज निकाली, "हुश-हुश।"

लेकिन मेरी आवाज का उस पर कोई प्रभाव न पड़ा। मैंने देखा कि पंखे की हवा से वह चीज फर्श पर घिसकर सरसराहट की आवाज निकाल रही है। मैं बेड पर पुनः चढ़ गया, नजरे गड़ाकर उसे देखने लगा।

'कहीं यह सांप की केंचुली तो नहीं?' मेरे दिमाग में एकदम से क्लिक हुआ।

किताबों में मैंने सांप की केंचुली के बारे में पढ़ा था। वह चीज बिल्कुल केंचुली सी लग रही थी।

तभी पंखे की हवा उसे उड़ाते हुए मेरे बेड के करीब ले आई।

"अरे! यह तो झाड़ू पर चढ़ी हुई पन्नी है, जो कल ही घर में आई थी।"

मैंने सुकून भरी एक सांस ली। ✪

फूल क्यों तोड़ा

कोरोना वायरस के चलते स्कूल तो कब से बंद थे। मीनू के मम्मी-पापा आफिस चले जाते, तो वह घर में अकेले ऊब जाती थी।

एक दिन मीनू की खुशी का ठिकाना न रहा, जब उसकी मौसी उसे अपने पास ले जाने के लिए लेने आई। मीनू की अपनी मौसेरी बहन हरलीन के साथ खूब जमती थी। वह मौसी के साथ चली गई।

अब मीनू और हरलीन एक साथ बैठकर पढ़तीं और खेलती थीं। हरलीन के घर के लॉन में बहुत से फूल खिले थे। मीनू रोजाना एक फूल तोड़ लेती और उसकी खुश्बू लेकर फेंक देती।

हरलीन ने यह देखा, तो मीनू को ऐसा करने से मना किया। मगर मीनू कहां मानने वाली थी। वह हरलीन से आंख बचाकर चुपके से फूल तोड़ लेती और फिर फेंक देती।

एक दिन मीनू ने गुलाब का फूल तोड़ना चाहा, तो अचानक उसके हाथ में कांटा चुभ गया। वह दर्द से चिल्लाई तो उसके कानों में किसी की हंसी गूंजी।

"कौन... ?" मीनू ने इधर-उधर देखते हुए कहा।

"मैं हूं गुलाब का फूल। तुम रोजाना यहां आकर कितने फूलों को तोड़कर समय से पहले ही उनका अंत कर देती हो। यह अच्छी बात नहीं। फूलों को भी दर्द का अहसास होता है। जैसे तुम्हें अब हुआ। यदि फूलों को समय से पहले ही तोड़ कर उनका जीवन समाप्त कर दिया जाए, तो वह कैसे अपनी महक बांटेंगे... ?"

मीनू बुत सी बनी गुलाब के फूल की बात सुन रही थी। तभी गुलाब का फूल बोला, "अच्छा एक बात का जवाब दो, तुम यहां आई हो किस लिए पढ़ने के लिए न? यदि तुम मेहनत के बावजूद भी फेल हो जाओ तो तुम्हें कैसे लगेगा? तुम्हारी कितनी बदनामी होगी? तुम्हारा दिल दुखेगा सो अलग है न... ?"

"हां तो...।" अब मीनू बोली।

"जब हम किसी को क्षति पहुंचाते हैं तो इसकी सजा हमें जरूर मिलती है। किस रूप में, यह कह नहीं सकते। हो सकता है, तुम परीक्षा में फेल हो जाओ। जब तुम फूलों को शाखाओं से अलग कर देती हो, तो न जाने यह तुम्हें कितनी बद्दुआएं देते होंगे...।' कहकर फूल चुप हो गया।

मीनू को गुलाब के फूल की तर्क से कही बात सुनकर अपनी भूल का अहसास हुआ और साथ ही याद आए मां के के बोल, "मीनू बेटा, कभी भी किसी का दिल मत दुखाओ और न किसी का बुरा करो, इनसान जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है।"

मीनू को लगा, जैसे गुलाब के फूल के रूप में मां उसे समझाने आई हो। उसने उसी पल गुलाब के फूल से वादा किया कि वह फिर कभी भी फूलों को टहनी से नहीं तोड़ेगी।

तभी उसने देखा बगीचे में सभी फूल पहले से ज्यादा ताजगी में खिल चुके थे जैसे उनका डाली से टूटने का डर जाता रहा था। यह देख मीनू भी खिल उठी और फूलों को प्यार से निहारने लगी। ✪

अपने लेखक को जानिए

हरिन्दर सिंह गोगना : पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब) में कार्यरत। सात सौ से अधिक बाल कविताएं, बाल कहानियां, लेख, लघुकथाएं विभिन्न पत्रिकाओं व अखबारों में प्रकाशित। नंदन, चंपक, बालहंस, नन्हे सम्राट, व जनसत्ता, दैनिक भास्कर, अमर उजाला, दैनिक जागरण, पंजबा केसरी, दैनिक ट्रिब्यून आदि प्रतिष्ठित अखबारों में रचनाओं का निरंतर प्रकाशन।

मोंटू और पिल्लू

रचनाकार को जानिए

डॉ. अलका जैन 'आराधना' : विभिन्न राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में तीन सौ से अधिक बाल कहानियां प्रकाशित, एक काव्य- संग्रह एवं दो साझा संग्रह प्रकाशित, एक साझा संग्रह का संपादन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय की भारतीय समाज विज्ञान परिषद द्वारा 'पोस्ट डॉक्टरल फ़ेलोशिप' के लिए चयन। संप्रति : स्वतंत्र लेखन।

मोंटू कई दिनों से जिद कर रहा था कि उसे एक नन्हा डॉगी चाहिए। पर मम्मी-पापा जानवरों को इस तरह से पालने के बिल्कुल खिलाफ थे। उन्हें लगता था कि यह उनकी आजादी खत्म करने जैसा है।

एक दिन मोंटू ने घर के बाहर एक कुत्ते का नन्हा सा पिल्ला देखा। वह उसे उठाकर लॉन में ले आया और मेन गेट बंद कर दिया। वह पिल्ले के लिए कुछ बिस्किट ले आया, जो उसने बड़े शौक से खा लिए।

मम्मी ने बाहर आकर देखा, तो उन्हें बहुत गुस्सा आया और डांटते हुए बोलीं, "मोंटू! बाहर छोड़ो इसे। इसकी मां इसे ढूंढ़ रही होगी।"

मन मारकर मोंटू उसे बाहर छोड़ आया। मोंटू ने मम्मी से कहा, "वह मेरे साथ बहुत खुश था, उसने बिस्किट भी खा लिए थे। कोरोना के कारण मैं सब दोस्तों से दूर हो गया हूं। इसके साथ तो खेलने दो मुझे।"

मम्मी ने कहा, "तुम इसे खाने को कुछ भी दे सकते हो, मुझे कोई ऑब्जेक्शन नहीं। पर इसे पालने की बात मत करो।"

मोंटू मन मसोसकर रह गया था। पर वह आजकल रोज उस पिल्ले से मिलने लगा था। मोंटू उसे कुछ खिलाकर बहुत खुश होता था।

एक बार रात को मोंटू की मम्मी की आंख खुली, तो उन्होंने पिल्ले के रोने की आवाज सुनी। उन्होंने खिड़की से बाहर देखा। रात को शायद किसी गाड़ी ने नन्हे पिल्ले का पांव कुचल दिया था। वह और उसकी मां कातर स्वर में रो रहे थे।

मम्मी ने तुरंत मोंटू के पापा को जगाकर बताया, तो उन्होंने फोन करके एक आदमी को जानवरों के अस्पताल से बुलवाकर पिल्ले को इलाज के लिए भिजवा दिया।

पिल्ले के जाने के बाद ऐसा लगा, मानो उसकी मां और भी जोर से रो रही थी ।

सुबह मोंटू को मां ने सारी बात बताई तो उसे अपने मम्मी पापा के इस काम पर बहुत गर्व हुआ।

उसने देखा, पिल्ले की मां अपने बच्चे की तलाश में उदास सी इधर-उधर घूमा करती थी। मोंटू अपने बच्चे के लिए मां की बेचैनी को महसूस कर पा रहा था, इसलिए उसने डॉगी तो क्या किसी भी जानवर को पालने का इरादा छोड़ दिया था।

जब पिल्ला ठीक होकर आया, तो कुतिया और वह एक दूसरे से ऐसे लिपटकर ऐसे मिले, जैसे जन्मों बाद मिले हों। मोंटू बहुत खुश था और जब पिल्ला अपने दोस्त मोंटू से मिलने आया, तो मोंटू ने उसे प्यार से पुचकारते हुए कहा, "हम तुम्हें कभी भी कैद में नहीं रखेंगे पर तुम हमारे दिल में हमेशा रहोगे दोस्त।"

फिर मोंटू ने पिल्ले को उसके फेवरेट बिस्किट खिलाए।

भोपाल

भोजताल

ताज उल मसजिद

लक्ष्मीनारायण मंदिर

सांची स्तूप

मध्यप्रदेश का प्रमुख नगर और राजधानी है भोपाल। इसे तालों की नगरी भी कहते हैं, क्योंकि यहां छोटे-बड़े कई ताल हैं। यूं तो भोपाल बहुत पुराना शहर है, परंतु आज जिस भोपाल शहर की चर्चा होती है, उसे 1720 के आसपास दोस्त मोहम्मद खान ने बसाया था।

मोहम्मद खान ने भोपाल गांव की किलेबंदी कर उसे एक पूरा रूप दिया था, जिसे आज हम आधुनिक भोपाल शहर के रूप में जानते हैं। भारत के प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी मंसूर अली खान पटौदी का जन्म भोपाल में ही हुआ था और उन्हें भोपाल के नवाब की उपाधि भी प्राप्त थी।

भोपाल शहर विंध्याचल पर्वत माला की गोद में बसा है। देखने के लिए यहां बहुत कुछ है।

भोजताल

भोपाल शहर की शान है भोजताल। इसे बड़ा ताल भी कहा जाता है। शहर के पश्चिमी भाग में बने इस ताल की लंबाई इतनी है कि लगता है कोई समुद्र हो। माना जाता है कि बड़ा ताल और साथ ही बने छोटा ताल का निर्माण परमार राजा भोज ने 11वीं शताब्दी में करवाया था। इसमें नदियों की 365 धाराओं से पानी लाया गया था। इसकी विशालता का अंदाजा ऐसे लगा सकते हैं कि शहर में पानी आपूर्ति का चालीस प्रतिशत हिस्सा इस ताल के पानी का है। यहां का सूर्यास्त अद्भुत होता है। यहां सर्दियों में देश-विदेश से पक्षी आते हैं और खूब चहल-पहल रहती है।

ताज उल मसजिद

यह मसजिद भारत की सबसे बड़ी मसजिदों में से एक है। इसका निर्माण 1840 में भोपाल की मलिका शाहजहां बेगम ने शुरू किया था, परंतु पैसों की कमी और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के कारण यह अधूरा रहा और अब जाकर 1985 में इसे पूरा किया गया गया। जितना समय इसे बनने में लगा, उतनी ही खूबसूरत यह मसजिद है। इसके अलावा जामा मसजिद, मोती मसजिद और ईदगाह भी देखने लायक हैं।

लक्ष्मीनारायण मंदिर

करीब पचास साल पहले बने इस बिरला मंदिर में विष्णुजी और लक्ष्मीजी की भव्य मूर्तियां लोगों का मन श्रद्धा से भर देती हैं। कई एकड़ में फैले इस मंदिर के अंदर पौराणिक कथाओं को चित्रों के सहारे दर्शाया गया है, जो बहुत भव्य है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर बना विशाल शंख लोगों का स्वागत करता है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय

शामला हिल्स पर 200 एकड़ में फैले इस संग्रहालय में मानव जाति का इतिहास जाना जा सकता है। यहां लगने वाली प्रदर्शनियां लोगों को खूब आकर्षित करती हैं।

पुरातत्व संग्रहालय

बाणगंगा रोड पर बने इस संग्रहालय को मध्यप्रदेश की धरोहर भी कह सकते हैं। यहां पूरे मध्यप्रदेश से एकत्र की गई ऐतिहासिक महत्व की मूर्तियों का संग्रह है, जिससे यहां का इतिहास सामने आता है।

शौकत और गौहर महल

शहर के बीचोबीच चौक पर स्थित शौकत महल के डिजाइन में भारतीय और फ्रांसीसी कला का संगम नजर आता है।

इसका डिजाइन एक फ्रांसीसी ने बनाया था। शौकत महल के पीछे और बड़ा ताल के किनारे 1820 में गौहर महल बना था। इसमें भारतीय और मुगल शैली का मिश्रण देखा जा सकता है।

भोपाल के आसपास

भोपाल की यात्रा में आप इन्हें भी जोड़ेंगे, तो मजा दोगुना हो जाएगा।

सांची

विश्व विरासत में शामिल सांची का स्तूप देखकर आप अचंभित रह जाएंगे। भोपाल से करीब 46 किलोमीटर की दूरी पर स्थित सांची स्तूप करीब दो हजार वर्ष पूर्व बने थे। इनका संबंध महान राजा अशोक से भी है। यह भारत का पत्थर से बना सबसे पुराना ढांचा है। इसके मुख्य स्तूप में भगवान बुद्ध के अवशेष रखे गए थे।

भीमबेटका की गुफाएं

पाषाण काल से संबंधित भीमबेटका की गुफाएं भोपाल से केवल 45 किलोमीटर दूर हैं। यह भी एक विश्व विरासत स्थल है। प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर इलाके में गुफाओं में बने चित्र लोगों को चकित कर देते हैं। गुफा में मौजूद इन चित्रों के रंग आज भी सजीव हैं। इसकी खोज 1957 में की गई थी। इन गुफाओं को दुनिया की सबसे पुरानी मानव गुफा माना जाता है। यहां की गुफाओं में चट्टानों को काटकर दीवारें और मंजिलें भी बनाई गई हैं।

कैसे जाएं

पूरे भारत से यहां के लिए नियमित हवाई उड़ानें हैं। यहां का हवाईअड्डा शहर से थोड़ी दूरी पर है। भोपाल के लिए अधिकांश बड़े शहरों से सीधी रेलगाड़ियां भी हैं। ✪

सांची

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय

शौकत और गौहर महल

भीमबेटका की गुफाएं

भीमबेटका में कलाकृति

द्वितीय पुरस्कार

भविष्य के सितारे

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।

आखिर तुम सब में से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो-

email : payasmagazine@gmail.com
whatsapp : 7982014609

बाल कोना में छपने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को प्रथम (तीन सौ), द्वितीय (दो सौ) और तृतीय पुरस्कार (एक सौ रुपए) देने का निर्णय लिया है, दीप्ति मित्तल ने

अपनी हिन्दी और राइटिंग स्किल्स को तराशें,
पायस से जुड़कर, कॉल करें : 7982014609

आंचल

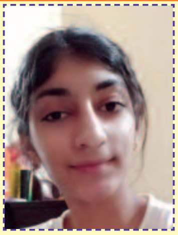

नाम : आंचल
उम्र : 13
कक्षा : 8,
अलमाईटी पब्लिक स्कूल
हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश

2nd

सतनाम

नाम : सतनाम
उम्र : 14
कक्षा : 9, स्टार पब्लिक स्कूल, मुकेरयां,
होशियारपुर, पंजाब

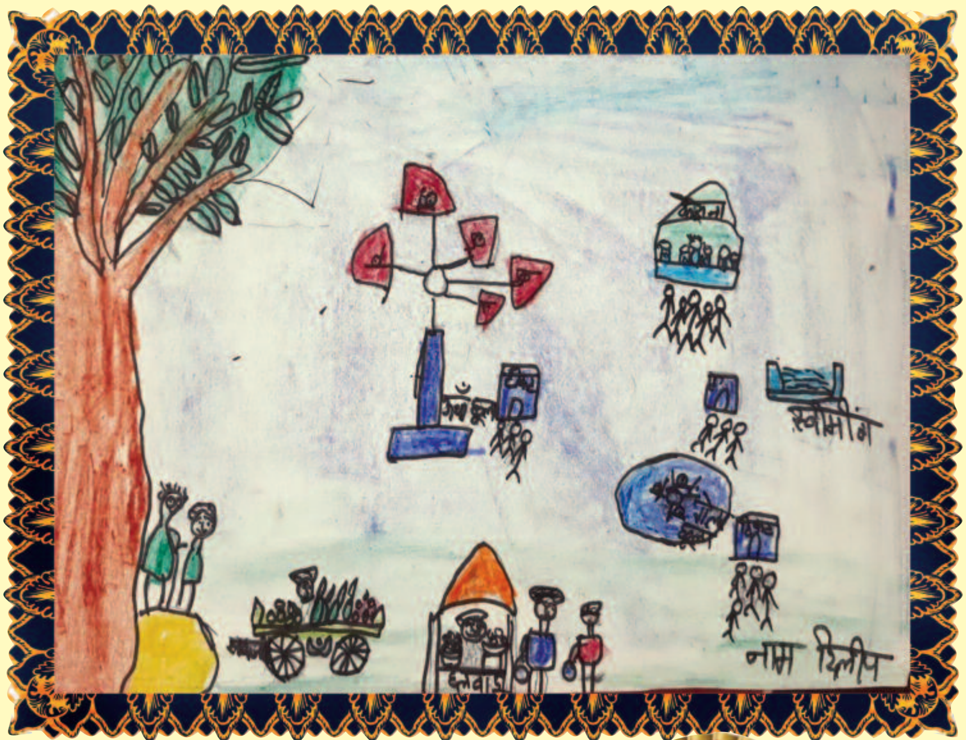

दिलीप साहू

नाम : दिलीप साहू
उम्र : 9
कक्षा : 4, प्रथमिक विद्यालय, धुसाह-1, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

नाम : प्रियांशु गर्ग
उम्र : 14,
कक्षा : 10, तिलक पब्लिक स्कूल, टोंक रोड, जयपुर, राजस्थान

प्रथम पुरस्कार

नाम : मुक्ता कटोच
उम्र : 13
कक्षा : 8, स्टार पब्लिक स्कूल मुकेरयां, होशियारपुर, पंजाब

मुक्ता कटोच

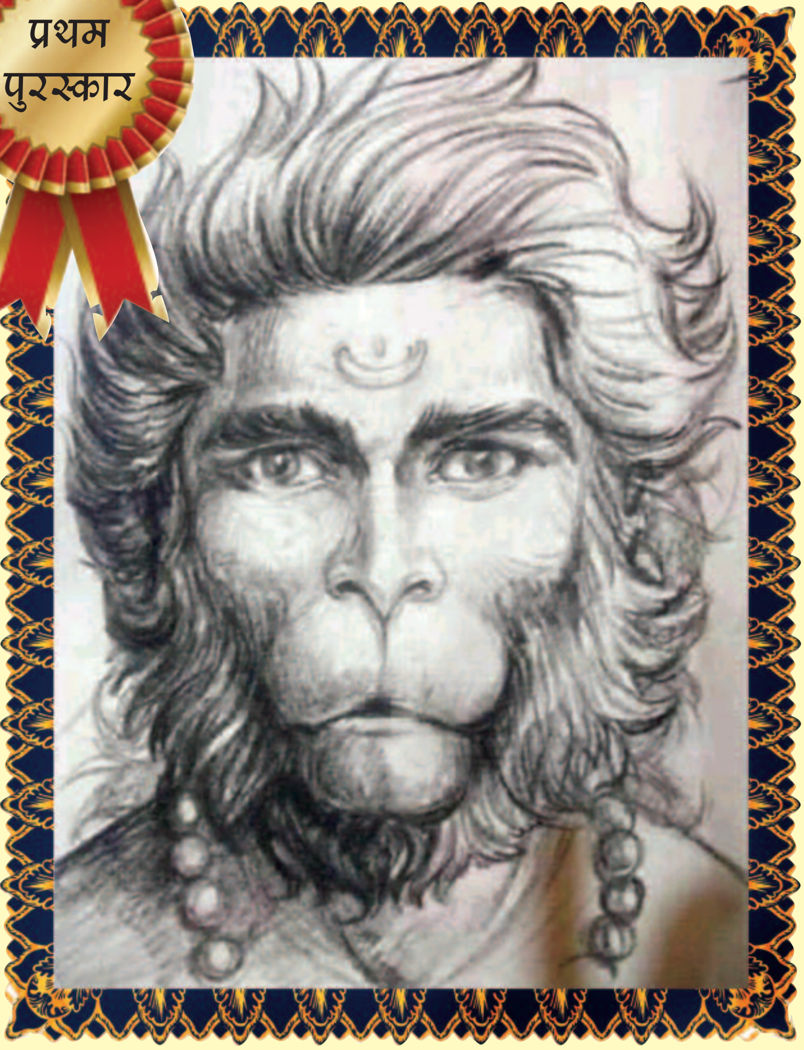

प्रियांशु गर्ग

ऐशानी हल्दर

पावनी माथुर

नाम : ऐशानी हल्दर
उम्र : 9
कक्षा : 4, स्कूल : सेंट जेवियर्स इंटीच्यूशन, कोलकाता, प. बंगाल

अफ्फान अहमद

नाम : पावनी माथुर
आयु : 6 वर्ष
कक्षा : 1, जानकीदेवी पब्लिक स्कूल, प्रतापनगर, जयपुर, राजस्थान

अफ्फान अहमद
आयु : 6 वर्ष,
कक्षा : 1, स्कूल :- एम. टी. नेशनल पब्लिक स्कूल, लखनऊ

तृतीय पुरस्कार

दोस्त ही दुश्मन निकला

चिंटू अपने पापा से रोज रात को कहानियां सुनता था। उसके पापा भी उसको बहुत अच्छी-अच्छी कहानियां सुनाते थे जिनमें नैतिकता रहती थी।

एक दिन चिंटू के पापा अपने स्कूल के समय एलबम देख रहे थे, तभी चिंटू ने कहा, "पापा आप अपने स्कूल की कहानी सुनाइए ना!"

उसके पापा बोले, "ठीक है।" कहानी शुरु होने वाली थी, चिंटू अपने पापा की गोद में उत्सुक होकर बैठा था। कहानी शुरू हुई-"एक बार की बात है। मैं और मेरा दोस्त राजीव बहुत पक्के दोस्त थे। मैं और राजीव पढ़ाई में भी अच्छे थे एवं खेल में भी। समय मुट्ठी में कैद बालू की तरह बहता गया। हम दोनों बड़े हो गए और पढ़ाई में एक दूसरे से आगे होने की होड़ थी, पर हमने अपनी दोस्ती की दीवार में ईर्ष्या की दरार ना आने दी।

हम और बड़े हुए और मैंने यह बात मान ली कि हमारा दोस्त हमारी तरक्की से बस अभी तक खुश होता है, जब तक हम उसे ऊपर ना हो जाए, और हुआ भी कुछ ऐसा ही। मैं पढ़ाई में तेज हो गया और राजीव थोड़ा कमजोर।

यह देख कर उसे बहुत ईर्ष्या होने लगी। मेरी पढ़ाई खराब करने के लिए उसने कई प्रयत्न किए, मैंने लेकिन कोई ध्यान नहीं दिया। परंतु इसके कारण उसने अपनी पढ़ाई बर्बाद कर दी। आज मेरी मेहनत, लगन और ईश्वर की कृपा से मै यहां तक पहुंचा हूं। परंतु राजीव अभी भी लापरवाह है।

मुझे पता है कि वह अपनी गलती पर शर्मिंदा है लेकिन बीता हुआ समय वापस नहीं आता। मैं यह नहीं कह रहा कि हमारे सब दोस्त खराब है या वह हमारा बुरा चाहते हैं। कुछ परिस्थिति के कारण वह ऐसे हो जाते हैं।

कहानी पूरी होने के बाद चिंटू सोच में पड़ गया, फिर बोला, "क्या मेरे भी सारे दोस्त ऐसे तो न होंगे?"

यह देखकर उसके पापा जोर से हंसे और बोले "चिंटू तुम दूसरों का न सोचो, खुद को ठीक रखो, सब ठीक रहेगा। फिर दोनों सो गए।

प्रियंका गुप्ता
उम्र : 12 साल
कक्षा : 9, स्कूल : जे बी एकेडमी, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

सुनेहा

नाम : सुनेहा
उम्र : 14
कक्षा : 9, स्कूल : स्टार पब्लिक स्कूल मुकेरयां, होशियारपुर, पंजाब

करण

नाम : करण
उम्र : 15
कक्षा : 10, स्कूल : स्टार पब्लिक स्कूल मुकेरयां, होशियारपुर, पंजाब

ओलंपिक में बने सितारे

माराबाई चानू, वेट लिफ्टिंग
(रजत पदक)

रवि दहिया, कुश्ती
(रजत पदक)

पी.वी. सिंधु, बैडमिंटन
(कांस्य पदक)

लवलीना बारगहोन, बॉक्सिंग
(कांस्य पदक)

पुरुष हॉकी टीम (कांस्य पदक)

बजरंग पूनिया, कुश्ती
(कांस्य पदक)

नीरज चोपड़ा, जेवलिंग (स्वर्ण पदक)

रुक जाना नहीं तू कहीं हार के

खेल में हारजीत के ज्यादा मायने नहीं होते। 1951 के एशियम गेम्स के उद्घाटन समारोह में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री नेहरू जी ने कहा था, 'खेल में किसी तरह जीत हासिल करने से ज्यादा ज्यादा महत्वपूर्ण खेल को खेल भावना के साथ खेलना है।'

इस बार का ओलंपिक भारत के लिए कई मायनों में अभूतपूर्व रहा। एक ओलंपिक में सबसे ज्यादा पदक आए। तो कुछ खिलाड़ी पदक से चूक गए।

पर पदक न जीतकर भी ये खिलाड़ी चर्चा में हैं। पहली बार पदक से चूकने पर बुराई न करके लोग इनकी बड़ाई कर रहे हैं।

गोल्फ जैसे खेल में जहां भारतीय पुरुष खिलाड़ी भी आज नजर नहीं आते, वहीं अदिति अशोक अंतिम दिन तक पदक के होड़ में रही। दुर्भाग्य से वह अंतिम क्षणों में दूसरे स्थान से चौथे स्थान पर चली गई। पर उसके जीवट ने सबको प्रभावति किया।

भारतीय महिला हॉकी टीम ने तो इतिहास रच ही दिया था। पहली बार यह टीम एक विश्व प्रतियोगिता के सेमीफाइनल में पहुंची। थोड़े अंतर से यह टीम कांस्य पदक जीतने से चूकी, पर सबको फिल्म चक दे इंडिया को याद दिलाने में यह टीम सफल रही।

बॉक्सर पूजा रानी क्वार्टर फाइनल में हारकर पदक से चूक गई । यही हाल सतीश कुमार का रहा जो क्वार्टर फाइनल में हारकर पदक न जीत सके।

इस ओलंपिक में जो जीवट भारतीय खिलाड़ियों ने दिखाया, उससे यह आशा बलवती हुई कि अगर कोई चाहे, तो आसमान को भी मुट्ठी में कर सकता है, जरूरत बस हौसले की है।

अब 2024 की पेरिस ओलंपिक का इंतजार है जहां पदकों की संख्या दो अंकों में अवश्य पहुंचेगी।

तो सलाम सभी खिलाड़ियों को।

अदिति अशोक, गोल्फ

पूजा रानी, बॉक्सिंग

सतीश कुमार, बॉक्सिंग

महिला हॉकी टीम

पुस्तक परिचय

किताब : नानी की कहानियां
बाल कथाकार : डॉ रंजना शर्मा
प्रकाशन : अपना प्रकाशन, भोपाल
पृष्ठ संख्या : 44
मूल्यः 160 रुपए

मनोरंजन का पिटाराः नानी की कहानियां

बच्चों की दुनिया निराली होती है। वे सरल व कोमल स्वभाव के होते हैं। सभी बच्चे किस्से कहानियां चटकारे लेकर सुनते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि बालपन में सुनी-पढ़ी कहानियां ताउम्र मस्तिष्क पर अपनी छाप छोड़ती हैं, संस्कार के रूप में विकसित होकर चरित्र निर्माण में सहायक होती हैं।

'नानी की कहानियां' डॉ. रंजना शर्मा का प्रथम प्रयास है। इससे पूर्व वह कविता तथा लघुकथा लिख चुकी हैं। उन्होंने अपने स्वकथन में लिखा है कि वे तीन बच्चों की नानी हैं और उनकी कहानी सुनने की जिद ने उन्हें कहानियां लिखने के लिए मजबूर किया।

प्रस्तुत संग्रह में एक से बढ़कर एक 15 रोचक कहानियां हैं, जिनमें कोई न कोई सीख छुपी है, जिसे लेखिका ने कहानी के अंत में दिया हुआ है। प्रथम कहानी 'चतुर रानी चींटी' संयम और अनुशासन का महत्व बताती दिलचस्प कहानी है। 'मेढकी का अपहरण' में एकता में बल होता है, को दर्शाया गया है। ऐसे ही 'चूहे जी की शादी' तथा 'चूरन वाले चाचा' अत्यंत रोचक कहानी हैं और मैं दावा करती हूं कि बच्चे इन्हें पढ़कर हंसते-हंसते लोटपोट हो जाएंगे।

समग्रतः नानी की कहानियां ऐसा लगता है जैसे पंचतंत्र की कथाओं को पुनर्जीवित किया गया हो। सभी कहानियां आकार में संक्षिप्त तथा बच्चों को गुदगुदाने वाली हैं। इन कहानियों के पात्र बच्चों के देखे भाले व प्रिय हैं। जैसे चींटी, तोता, मेढक, गधा, ऊंट, चूहा, बिल्ली, बर्र आदि। पुस्तक का आवरण मनोहारी तथा पढ़ने को लालायित करने वाला है। कहानियों की भाषा अत्यंत सरल व सुबोध है। पूरी पुस्तक रंगीन चित्रों से सुसज्जित है।

आशा ही नहीं मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह कहानियां बच्चों को रुचिकर लगेंगी और वे एक बार इसे पढ़ना शुरू करेंगे तो पढ़ पूरा खत्म करके ही दम लेंगे।

समीक्षक : डॉ शील कौशिक

पुस्तक : गोलू-मोलू (बाल कविता संग्रह)
रचनाकार : किरण सिंह
प्रकाशक : जानकी प्रकाशन, पटना
मूल्य : 150 रुपए

बाल कविताओं का गुलदस्ता

बच्चों के साथ बच्चे बनकर ही आनंद उठाया जा सकता है। यह आनंद बच्चों के लिए गीत और कविता लिखकर मिलता है।

बचपन में सुनी कितनी कविताएं हमें आज तक स्मरण है। इसी तरह की प्यारी बाल कविताएं लेखिका किरण सिंह अपनी पहला बाल-कविता संग्रह 'गोलू-मोलू' में लेकर आई हैं

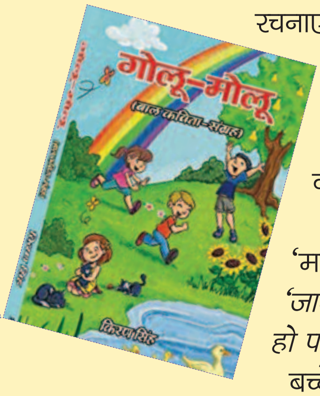

गोलू-मोलू बाल कविता संग्रह 39 कविताओं का संकलन है। जिसमें कुछ मोहक गीत हैं। कुछ रचनाएं मजेदार तुकबंदियों से सुसज्जित है। संग्रह की रचनाएं बाल मन को समझते-बुझते और डूब कर लिखा गया है।

संग्रह की तीसरी कविता 'मां' में बच्चा कहता है, *'जादूगरनी हो मम्मी या तुम हो परियों की रानी।'* बच्चे अपनी मां के लिए ऐसा ही तो सोचते हैं। उनके लिए मां जादूगरनी ही तो होती हैं। जो झट से उनका मन पढ़ लेती हैं।

हमारे समाज में आज भी कई परिवारों में बेटे-बेटियों में भेद किया जाता है। इसी भेदभाव की तरफ इंगित करती संग्रह की यह कविता है, 'मुनिया बर्तन नहीं धुलेगी, बदलो मम्मी रुल/जायेगी कल से ही वह भी, संग हमारे स्कूल।'

संग्रह की अधिकांश कविताएं बच्चों को प्रकृति और पशु-पक्षियों के महत्व का ज्ञान कराती हैं।

बच्चों को अपने इतिहास और देशकाल की स्तिथियों को भी धीरे-धीरे सरल शब्दों में बताना चाहिए। छोटे बच्चों के लिए बाल कविता से सरल तरीका और कुछ हो भी नहीं सकता।

अंतिम कविता "कोरोना का होगा नाश" में बच्चों को इससे बचने का यह उपाय बताया है।

रखो जरा-सा तुम विश्वास/कोरोना का होगा नाश
धोते रहो हाथ और मुँह/बेमतलब का करो न उँह

समीक्षक : महिमा श्री

पुस्तक-दूब का बन्दा
रचनाकार- डॉ. पुष्पलता
प्रकाशक : सहज प्रकाशन
113 लाल बाग, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश
Email sahajprakashan_mzn@gmail.com

मानव जाति के लिए महत्वपूर्ण आयाम स्थापित करता है 'दूब का बन्दा'

डॉ. पुष्पलता द्वारा सृजित बाल उपन्यास सरल, सहज, बालमन की भावनाओं पर आधारित है । दूब का बन्दा बच्चों के लिए तो प्रेरक है ही, बच्चों के माध्यम से समाज के सभी वर्गों के लिए शिक्षाप्रद संदेश देता है क्योंकि आज भौतिक विकास के बावजूद लोगों का मानसिक विकास वन्यजीव तथा पशु-पक्षियों के संरक्षण के धरातल पर नहीं हो पाया है। बाल उपन्यास का मुख्य पात्र राहुल और उसकी मम्मी के माध्यम से यह संदेश सारे जगत को दिया गया है।

आज भी अधिकांश लोग घरों में अपने मनोरंजन के साधन के रूप में पशु-पक्षियों को कैद रखते हैं, जो किसी अपराध से कम नहीं है।

मानव और पशु पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता की प्राथमिक पाठशाला घर होता है और घर में भी मां एक कुशल शिक्षिका होती है यह उपन्यास साबित करता है। बच्चे के व्यक्तित्व के निर्माण में घर की स्त्रियों की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका है ये उपन्यास पढ़कर पता चलता है। रोचक, प्रेरक, जीवनमूल्यों की स्थापना करता है यह उपन्यास। सभी आयु वर्ग के लोगों को पढ़ना चाहिए।

इसमें पर्यावरण भी है, प्रेम भी, बुजुर्गों का साथ-सम्मान भी, बच्चों की मित्र मंडली, बच्चों का भोलापन तथा दूब के माध्यम से चमत्कारी घटनाएं भी हैं जो उपन्यास को रोचक बनाती हैं। स्वस्थ सामाजिक संदेश तो है ही।

बच्चो को स्वस्थ नागरिक बनाने वाली, नैतिक शिक्षा प्रदान करने वाली ,जो रोचक व पठनीय हो ऐसी पुस्तकें उपलब्ध कराने की महती आवश्यकता है, उन्हें पाठ्यक्रम में लागू करने की आवश्यकता है। स्तरीय बाल साहित्य बहुत कम लिखा जा रहा है। ऐसे में इस खूबसूरत कृति का महत्व और बढ़ जाता है। बीच-बीच में रोचक छोटी छोटी कथाएं आकर उपन्यास की प्रवाह शीलता को बढ़ा देती हैं

समीक्षक : डॉ. क्षमा पाण्डेय

पुस्तक : रुनझुन और टीन्नू
लेखिका : डॉ. शील कौशिक
प्रकाशक : साहित्यागार, जयपुर
पृष्ठ : 80,
मूल्य : 200 रुपए

साहित्य के क्षेत्र में हरियाणा से एक प्रतिष्ठित नाम उभरकर आता है वह है डॉ. शील कौशिक जी का। डॉ. कौशिक प्रायः सभी विधाओं में निरंतर सक्रिय हैं। यही कारण है, हरियाणा साहित्य अकादमी से तीन बार पुरस्कृत हो चुकी शील जी विशेषकर बाल साहित्यकार के रूप में जानी जाती हैं।

हाल ही में प्रकाशित उनका नवीन बाल कहानी संग्रह 'रुनझुन और टिन्नू' प्रकाशित हुआ है। बाल साहित्य में मानवेत्तर पात्रों को आधार बनाकर बहुत लेखन हुआ। बाल कहानियों में अमूमन पशु-पक्षी ही पात्र होते हैं। संभवतः उसके पीछे उद्देश्य बाल मन में सम्पूर्ण प्राणी मात्र के प्रति संवेदना जागृत करना है। संग्रह में वर्तमान समस्याओं को लेकर 14 कहानियां संग्रहीत हैं।

प्रस्तुत संग्रह का शीर्षक ही 'रुनझुन और टिन्नू' जो कि मच्छर पात्र हैं, जिनका संवाद बहुत रोचक बन पड़ा है, साथ ही स्वच्छता का संदेश भी और तकनीकी का प्रयोग कहां तक सुखद है यह भी कहानी बताती है।

संग्रह की पहली कहानी 'चीफ शेफ आर्यन' संदेश देती है कि कोई भी काम कमतर नहीं होता तथा कार्यों का जो वर्गीकरण समाज में लड़की और लड़के के जेंडर को लेकर किया गया है वह सही नहीं है। यूं भी आज समय बदल रहा है, आर्यन के माता-पिता ने उसकी इच्छा का मान रखा और उसे चीफ शेफ बनने में सहयोग दिया।

'पेड़ प्रकृति के नैसर्गिक एयरकंडीशनर हैं' पर्यावरण का सुंदर संदेश देती सुंदर कहानी है। ऐसी ही एक और कहानी है, 'सांसें बो रहे हैं'। संग्रह की सारी कहानियां एक से बढ़कर एक हैं।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि संग्रह की कहानियां सामयिक विषयों को लेकर है, बाल मनोविज्ञान को लेकर समस्त जिज्ञासाओं का समाधान करती है। भाषा बाल मन के अनुरूप है। बाल साहित्य जगत में इसका भरपूर स्वागत होगा।

समीक्षक : डॉ. लता अग्रवाल

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ–साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।

बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609
रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**

◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं––

- संरक्षक बनकर
- मासिक अनुदान देकर
- यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर
- विज्ञापन देकर
- हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर
- किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें––

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
GOOGLE PAY : 9810556533
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**